जीवन-मरन

जीवन-मरन

उपन्यास



जगदीश प्रसाद मंडल

ISBN : 978-93-80538-26-6

मूल्य: भा. रु. 50/-
पहिल संस्करण : 2010

श्रुति प्रकाशन रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११)२५८८९६५७
Website:http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at: Ajay Arts, Delhi-110002
टाइप सेट-उमेश मंडल
Distributor : Pallavi Distributors, Ward no- 6, Nirmali (Supaul),
मो.- 9572450405, 9931654742
Jeevan Maran: A Maithili novel by sh. Jagdish Prasad Mandal

१

छह बजे भिनसुरका ड्यूटी रहने डॉक्टर देवनन्दन पाँचे बजे ओछाइन छोड़ि नित्यकर्मसँ निवृत भऽ कपड़ा पहिरते रहथि आकि चाह नेने पत्नी आबि टेवुलपर राखि चोट्टे घुरि पिता-ससुरकेँ चाह देमए गेलीह। पिता लग चाह रखि बजलीह- ‘‘बाबू, बाबू......।’’

पिताक उत्तर नै देख नाकक साँसपर हाथ दऽ अन्दाजए लगलीह। साँस चलैत नै देख, मनमे उठलनि। पिता तँ अपनो मुइलाह मुदा तीन मास बीमारीसँ ग्रसित भऽ मरल रहथि। मुदा हिनका तँ किछु नै भेलनि तखन कियए साँस नै चलै छन्हि। असमंजसमे पड़ि गेलीह। मनमे फुरलनि अपने नै ने किछु जनै छी मुदा ओ -पति- तँ डॉक्टर छथि। दिन-राति तँ यएह रमा-कठोलामे लागल रहै छथि, पुछि लियनि। फेर मनमे एलनि जे अखन शुभ-शुभ ड्यूटी जाए रहल छथि केना अशुभ बात कहबनि। फेर मनमे एलनि जे ड्यूटी तँ क्षणिक छी मुदा मृत्यु तँ स्थायी छी, तँए ऐ आगू ओकर तुलना करब बचपना हएत। पिता लगसँ झटकि कऽ पतिक कोठरी जाए धमकलीह। चाह पीब डॉ. देवनन्दन कोठरीसँ निकलैक तैयारी करैत रहथि। धड़फड़ाएल पत्नीकेँ देख पुछलखिन- ‘‘किछु मन पड़ल की?’’

‘‘नै किछु मन नै पड़ल।’’

‘‘तखन?’’

‘‘बाबू भरिसक मरि गेलाह। कतबो बाँहि पकड़ि झुलौलियनि मुदा आँखि नै तकलनि।’’

पिताक मृत्युक बात सुनि देवनन्दन घबड़ेला नै। पुछलखिन- ‘‘माए कतऽ छथि?’’

‘‘ओहो अपना कोठरीमे सुतले छथि। जहिना सभ दिन पहिने बाबूकेँ चाह दै छलियनि तहिना दइले गेलियनि आकि देखलियनि।’’

“चलू” कहि देवनन्दन आगू बढ़लथि। सासुकेँ उठबैले शीला दोसर कोठरी दिस बढ़लीह। कोठरीमे पहुँचतहि बजलीह- “माए!”

“माए” सुनि सुभद्रा फुड़फुड़ा कऽ उठलीह। तै बीच शीला चाह आनए गेलीह। राखल लोटाक पानिसँ सुभद्रा कुड्डुड़ करए लगलीह। कुड्डुड़ कए चाह पीलनि। देवनन्दन पत्नीकेँ सोर पाड़लनि। शीलाकेँ पहुँचतहि कहलखिन- “बाबू मरि गेलाह।”

अपना कोठरीसँ सुभद्रो सुनलनि। मृत्यु सुनि दौड़ले पति लग पहुचलीह। मृत्य पतिकेँ देख घबड़ेली नै। मन पड़लनि अपन जिनगी। जहिया दुनू गोटे एक बंधनमे बन्हि दुनियाँक लीला लेल संगी बनलौं। तेकरा साठि बर्ख भऽ गेल। ओइ बंधनसँ पूर्व ने हम किछु कहने रहियनि आ ने ओ किछु कहने रहथि। कहियो भेँटे नै भेल छलाह। तहिना बिना किछु कहनहि संग छोड़ि चलि गेलाह। मुदा तँए कि साठि बर्खक संग मिल कएल काजो चलि जाएत। जहिना अबै दिन परिवार भरल-पुरल छल- सासु, ससुर छलाह तहिना तँ आइयो बेटा-पुतोहू अछिये। तहन सोग कथीक! मुस्की दैत बेटा दिस तकलनि। तै बीच फुदकैत आशा आबि माएकेँ पुछलक- “माए, बाबा मरि गेलखिन?”

आशाक बात सुनि सुभद्रा बजलीह- “बाबा गाम गेलखुन।”

पिताक मृत्यु देख देवनन्दन सोचए लगलाह। पिताक अपन समाज छलनि। जै बीच रहि जिनगी बितौलनि। मुदा हमर समाज तँ अलग भऽ गेल अछि। तँए उचित हएत जे ऐठामक समाज छोड़ि हुनका अपना समाजमे पहुँचा दियनि। मृत्युक कोनो कर्म ऐठाम नै कऽ हुनके समाजक अनुकूल करब बढ़ियाँ हएत। शीलाकेँ कहलखिन- “अहाँ तीनू गोटे ऐठाम रहू। गामेमे अगिला सभ काज हेतनि। हम जोगार करए जाइ छी।”

कोठरीसँ निकलि अगिला ओसारपर अबिते ड्राइवरकेँ ठाढ़ देख कहलखिन- “अस्पताल नै जाएब। पेट्रोलपम्पपरसँ तेल भरौने आबह। गाम चलैक अछि।” बिना किछु बजनहि ड्राइवर गाड़ी लऽ निकलि गेल। कोठरीमे आबि दुनू बेटाकेँ जनतब देबए लेल मोवाइलमे नम्बर टिपलनि। दयानन्द जेठ धर्मानन्द छोट

बेटा। दयानन्द फोर्थ इयरक विद्यार्थी आ धर्मानन्द फस्ट इयरक। दुनू एक्के मेडिकल कॉलेजक छात्र। दयानन्दकेँ कहलखिन- ‘‘बच्चा, बाबू मरि गेलाह, तँए दुनू भाँइ गाम आउ?’’

बाबाक मृत्युक समाचार सुनि दयानन्द कहलखिन- ‘‘ऐ लेल गाम कियए जाएब। आब तँ तेहेन बिजलीबला शवदाह बनि गेल अछि जे आसानीसँ काज सम्पन्न भऽ जाइत अछि।’’

दयानन्दक विचार सुनि देवनन्दन कहलखिन- ‘‘बच्चा, सभ जीव-जंतुकेँ अपन-अपन जिनगी होइत अछि। जे जै जिनगीमे जीबैत अछि ओकराले वएह जिनगी आनन्ददायक होइत अछि। जना देखैत छहक जे चीनीमे सेहो कीड़ा फड़ै छै, मिरचाइमे सेहो फड़ै छै, करैलामे सेहो फड़ै छै। तीनूक सुआद तीन तरहक होइ अछि। एक मीठ, दोसर कड़ू आ तेसर तीत। चीनीक कीड़ाकेँ जँ मिरचाइ आकि करैलामे देल जाए तँ स्वाभाविक अछि जे ओ मरत। मुदा की मिरचाइक कीड़ा आकि करैलाक कीड़ा चीनीमे जीब सकत? कथमपि नै। ओ कियए मरत? ओ तँ अधलासँ नीकमे गेल। तहिना बाबू सेहो सभ दिन गाममे रहि जीवन-यापन केलनि। ई तँ संयोग नीक रहल जे तोहर माए सप्पत-किरिया दऽ बूढ़ी -माए- केँ हँ कहौलनि। जइसँ दुनू गोटे मास दिन पहिने एलाह। सेहो एलाक तीनिये दिनक उत्तर गाम जाइले कच्छर काटए लगलाह। कते सप्पत दऽ-दऽ माए मास दिन घेरलखुन नै तँ तेसरे दिन चलि जइतथि।’’

पिताक बात सुनि दयानन्द पुछलखिन- ‘‘ई तँ बड़ आश्चर्यक बात कहै छी, बाबू?’’

दयानन्दक जिज्ञासा देख देवनन्दन कहलखिन- ‘‘कोनो आश्चर्य नै। गामक दोसर नाओं समाजो छिऐ। जे शहर-बजारमे नै अछि। समाजमे बंधन अछि जै अनुकूल लोक चलैत अछि जकरा सामाजिक बंधन कहल जाइत छै। ऐ बंधनक भीतर धर्मक काज छिपल अछि जकरा सभ मिल निमाहैत अछि। मुदा शहरमे से नै छै। कानून-कायदाक हिसाबसँ चलैत अछि जइमे दया-प्रेम नै अछि। प्रतिदिन बूढ़ाकेँ दस गोटेक जिनगीक बात सुनब आ दस मिनट बजैक

जे अभ्यास लगि गेल छन्हि से ऐठाम केना हेतनि। सभ अपने पाछू बेहाल रहैत अछि। के केकर सुख-दुख, जीवन-मरन सुनत। भरि पेट नीक अन्ने-तीमन खुऔने लोकक मन असथिर थोड़े रहि सकैए। जाधरि आत्माक संतुष्ठी नै हेतैक।''

पिताक बात सुनि दयानन्द हूँहकारी दैत कहलखिन- ''कहुना-कहुना तँ तीन दिन पहुँचैमे लागत, ताधरि की कहब?''

''अखनो गाममे एहेन चलनि अछि जे शरीरसँ परान निकलिते जरबैक ओरियान हुअए लगैत अछि। अर्थी रखैक चलनि नै अछि। तोरा सभकेँ अबैसँ पहिने दाह-संस्कार कऽ लेब। काजो तँ लगले सम्पन्न नहिऐ होइत अछि। कहुना-कहुना तँ पनरह दिन लगिए जेतह।''

''बड़बढ़िया। सौझुका गाड़ी पकड़ि दुनू भाँइ गाम आबि जाएब।''

मोबाइल ऑफ कऽ मने-मन देवनन्दन हिसाब मिलबए लगलाह। कमसँ कम पनरह दिनक काज अछि। उसारैयोमे किछु समए लगबै करत। मोटा-मोटी बीस दिन लगि जाएत। बीस दिनक आकस्मिक छुट्टीक दरखास्त लिखए लगलथि। दरखास्त लिख टेवुलपर रखि पिताक कोठरी पहुँच पत्नीकेँ कहलखिन- ''गाममे बीस दिन लागत। तै हिसाबसँ सभ सामान ओरिया लिअ। काजक समए अछि। तँए नीक- जकाँ तैयार भऽ चलैक अछि।''

कहि माए लग बैस गेलाह। शीला उठि कऽ चीज-वस्त्र ओरियबए चलि गेलीह। सुभद्राक चेहरामे सोग नै सुख -सिनेह- उमड़ैत। विचारक समुद्रमे डुबल। मने-मन खुश होइत जे हुनका अछैत जँ हम पहिने मरितौं तँ मनमे लागल रहैत जे शेष दिन हुनकर केहेन बीततनि। मुदा से भगवान सुनलनि। जहिना हाथ पकड़लनि तहिना पार-घाट लगा देलियनि। हमरा आब की अछि तेहेन भरल-पुरल फुलवाड़ी लगा देने छथि जे कतौ हेराएल रहब। उमेरोक हिसाबसँ नीके भेल। चारि बर्खक जेठो छलाह। माएकेँ विचारमे डूबल देख देवनन्दन पुछलकनि- ''माए.......।''

मुस्की दैत सुभद्रा बजलीह- ''बौआ, एक्को मिसिया दुख नै भऽ रहल अछि। ई तँ सृष्टिक नियमे छिऐ। तइले दुख कथीक''

ओम्हर शीला कपड़ो-लत्ता सरियबैत आ मने-मन मुस्कुरेबो करैत रहथि। मनमे फुड़लनि अनका जे है हमरा तँ सात गंगा नहेला फल भेटल। जना अनका देखै छिऐ, अनका कि अपन पितियौते भाएकेँ देखिलियनि जे मरै बेरमे कक्का केना घिनबथिन्ह। से तँ नै भेल। जिनगीमे कियो एहेन ओँगरी तँ नै देखाएत?''

तै बीच ड्राइवर बाहरमे हार्न बजौलक। अवाज सुनिते देवनन्दन माएकेँ कहलकनि- ''माए, लगले हम अबै छी।''

कहि कोठरीसँ दरखास्त लऽ ड्राइवरकेँ ऑफिस दऽ अबैले कहलखिन। पुनः घुरि कऽ पिताक गोरथारीमे बैस तैयारीक प्रतिक्षा करए लगलथि। आँखि माएपर पड़लनि। एक्को पाइ माएक मुँह मलिन नै, सोचए लगलथि। जहिना आंगनसँ घरक ओसारपर जेबा लेल बीचमे सीढ़ी बनल रहैत अछि तहिना तँ परिवारोमे अछि। मन पड़लनि बाबाक सुनाओल माए-बापक वियाहक कथा। केना नव परिवार बनि दुनू गोटे बाबा-दादीकेँ जिनगी पाड़ लगौलकनि। ओहने समए तँ आइ हमरो संगे आबि गेल। माएकेँ कियए मनमे कोनो तरहक अभाव अओतैक। एते दिन पिताक आशपर जीलनि आब हमरा दुनू परानीपर आबि गेलीह। जहिना पत्नीक सहयोग पतिकेँ आ पतिक आशा पत्नीकेँ बनल रहैत अछि तहिना तँ पतिक परोछ भेने बेटाक भऽ जाइत अछि। फेर मन पड़लनि गामक स्कूलमे अपन नाओं लिखाएब। नीक मनुष्य बनैक लेल पिता चारि बर्खक अवस्थामे कन्हापर उठा भगवान रामक खिस्सा सुनबैत नाओं लिखा देलनि। ज्ञानक प्रति एत्ते प्रेम केना कम पढ़ल-लिखल आदमीमे आएल? केना सभ माए-बापक हृदेमे सरस्वती बैसल रहै छथिन? भलहिं सामाजिक कुबेबस्था आ सत्ताक लापरवाहीसँ नै भऽ पबैत अछि। जिनगीक मजबूरी अन्हारक काल कोठरीमे धकेल दैत अछि। मुदा हमरा से नै भेल। गामक स्कूलमे लोअर (तीसरा) धरि पढ़लौं। लोअर पास करिते मिड़ल स्कूलमे नाओं लिखबैले रुपैया देलनि। चारि बर्खक उपरान्त मिड़ल स्कूलसँ निकललौं। फेर हाइ स्कूलक खर्च देलनि चारि बर्खक उपरान्त हाइ स्कूलसँ निकललौं। संयोगो नीक रहल आर.के. कॉलेज मधुबनीमे साइंसक पढ़ाइ शुरु भेल। जहिना उत्साह

कओलेजमे नाओं लिखौने अपना रहए तहिना नव-नव शिक्षक बनने प्रोफेसरो सभकेँ रहनि। ओना ता धरि शिक्षो विभागमे चोर-दरबज्जा खुजि गेलैक। मुदा अखुनका जकाँ बड़की गाड़ी पास होइ जोकर नै छोट-छीन एकपेरिया। बहुत नीक विद्यार्थी तँ हमहूँ नहिये छलौं मुदा बहुत भुसकौलो नै छलौं। जँ भुसकौल रहितौ तँ पास केना करितौं। कहियो फेल नै भेलौं। डॉक्टर बनैक विचार तँ मनमे आएलो नै छल। विचार छल बी.एस.सी. केलाक उपरान्त हाइ-स्कूलक शिक्षक बनैक। चिकित्सा जगतमे बिर्ड़ो उठल। दरभंगामे अस्पताल खुजल आ डॉक्टरीक पढाइयो शुरु भेल। आइ.एस.सी. पास केलहा संगी सभ मेडिकल कओलेजमे नाओं लिखबैक विचार हमरो देलक। पिताकेँ कहलियनि। पढ़बैक इच्छा पहिनहिसँ रहनि। नाओं लिखबैक विचार दऽ देलनि। अगुआएल परिवार माने अधिक खेतबला (कारखाना तँ अपना इलाकामे अछि नै गोटि पंगरा स्थानीय व्यापारी आ बेसी माड़वारीक व्यापार चलैत।) पढ़ि-लिखि नोकरी करैक पक्षमे नै रहथि। गरीब परिवारक बच्चा, अभावमे पढ़ि नै पबैत रहए। जे लाभ हमरो भेटल। मुदा आब बुझै छी जे डॉक्टर बनि गाम छोड़ब, परिवार-समाजकेँ छोड़ब भेल। जखन हम डॉक्टर बनलौं। रोगक इलाज करब काज भेल, तखन कि गाममे रोग आ रोगी नै अछि....।

जहिना आकाश आओर पृथ्वीक बीचक सीमा होइत, जइठाम पहुँच चिड़ै-चुनमुनी लसैक जाइत, तहिना देवनन्दनक वुद्धि लसकि गेलनि। ने आगूक बाट देखथि आ ने पाछू हटल होनि। मन घोर-घोर होइत रहनि। माए दिस, मुड़ी उठा तकलनि। माएक पजरामे बैसल आशाकेँ अपन धुनिमे मग्न देखलनि। आशापर सँ नजरि ससरि दुनू बेटापर पड़लनि। डॉक्टरी पढ़ैत बेटापर नजरि पड़िते अगिला पीढ़ी दिस नजरि दौड़लनि। जहिना हम माए-बाबूक सेवाक फल डॉक्टर छी तहिना तँ ओहो दुनू भाँइ हमर हएत। मुदा जे सुख-सुविधा पाबि हम दुनू गोटेसँ अलग भऽ जीवन-यापन कऽ रहल छी तहिना तँ ओहो दुनू भाँइ हमरासँ अलग भऽ जीवन-यापन करत। मुदा शरीरक गति जे गति -बालपन, युवापन आ विद्धापन- अछि ओ तँ सबहक लेल अछि। बालपन आ वृद्धापनमे एक-दोसरक जरुरत सभकेँ होइत अछि। जेकरा अपन बुझि सभ सेवा करैत

अछि ओ हजारो कोस दूर रहैए। तखन सेवा केना हेतै? अगर जँ दुनियाँ भरिकेँ अपन बुझि सेवा करी तँ एतेक खून-खच्चर, छीना-झपटी, चोरी-छिनरपन, लूट-खसोट किएक होइत अछि? विचित्र स्थितिमे देवनन्दन ओझरा गेलाह। मनमे एलनि हम डॉक्टर छी। हमरा सन-सन कतेको डॉक्टर अस्पतालसँ शहर धरि छथि मुदा सेवा रहितौ जाति आ दलालक कोन जरुरत छै। देखै छी जे जिनका जातिक आ दलालक आधार छन्हि ओ दिन-राति रुपैया ठिकियबैत रहै छथि आ जनिका क्षेत्रीय आकि जातिक आधार नै छन्हि, सभ गुण रहितौ माछी मारै छथि। फेर मनमे उठलनि जे जहिया हम डॉक्टर बनलौं तहिया मात्र थर्मामीटर आ आला रहए। तहिना अस्पतालोमे रहए। मुदा आइ अनेको यंत्र, औजार अस्पतालोमे भऽ गेल आ अपनो कीनलौं। जइसँ चिकित्सा असान भेल जाइत अछि। मुदा ककरा लेल? की अखन दवाइ आ चिकित्साक अभावमे लोक नै मरैत अछि? सभकेँ चिकित्साक सुविधा भेट गेल छै? की रोग लोककेँ पूछि-पूछि होइ छै? जँ से नै तँ हमरा स्वयं अपन सीमा-सरहद बुझक चाही। जँ से नै बुझब तँ जहिना झाँट-बिहाड़िमे कीड़ी-मकोरीसँ लऽ कऽ चिड़ै-चुनमुनी जकाँ नष्ट होइत तहिना चल जाएब। जँ सएह हएब तँ अनेरे एते वुद्धिकेँ कियए रगड़ै छिऐ। बेचारी ओहिना खसल खेत जकाँ परती रहितथि। जइपर धिया-पूता परो-पैखाना करैत आ खेलबो-धुपबो करैत।

तहिबीच, एक झुण्ड स्टाफसँ छात्र धरि पहुँच कहलकनि- ''डॉक्टर सहाएब, लहासकेँ की करए चाहै छिऐक?''

आँखि उठा देवनन्दन सबहक चेहरा देख मुस्कुराइत कहलखिन- ''गामेमे जरैबनि। ऐठाम सभ सुविधा रहितौ हिनक विचारक प्रतिकूल रहत। तँए बीचमे हम अपन सिर दोख नै लेब। सौंसे जिनगी गाम आ समाजक बीच बितौलनि, तँए हमर फर्ज होइत अछि जे हिनका लऽ जाए समाजकेँ सुमझा दियनि। हिनका निमिते जे काज हएत ओ समाजक विचारानुसार हएत। जँ से नै हएत तँ समाजक नजरिमे काँट बनि जाएब। जे नै चाहै छी।''

देवनन्दनक विचार सुनि सभ गुम्म भऽ गेलाह। तै बीच सीनियर डॉक्टर सबहक झुण्ड पहुँचलनि। मुदा किनको मनमे सोग नै। सबहक मन

प्रफुल्लित। परिवारमे ने कहियो काल जन्म आ मृत्यु होइत मुदा अस्पतालमे तँ से नै होइत। सभ दिन जनम-मरण होइते रहैत अछि। मुस्की दैत डॉ. कृष्णकान्त देवनन्दनकेँ कहलखिन- "आगूक काज कियए रोकने छी? पहिने शवदाहगृहमे फोन कए कऽ बुक करबऽ पड़त। जखुनका समए भेटत तै हिसाबसँ ने जाएब।"

डॉक्टर कृष्णकान्तक विचार सुनि देवनन्दन गुम्मे रहलाह। मनमे नचए लगलनि जे स्टाफ आ जुनियर जे कहलनि हुनकर जबाब तँ दऽ देलियनि। मुदा हिनका की कहबनि। जँ विचार कटबनि तँ मनमे दुख हेतनि। हमरासँ बेसी दिन दुनियाँ देखने छथि। अपन विचारकेँ मनेमे रखि कहलखिन- "हम तँ बेटा छियनि मुदा माए तँ जिनगीक संगी रहलखिन, तँए हुनकर विचार बुझब जरुरी अछि।"

सभ कियो माएक विचार सुनैक लेल कान ठाढ़ केलनि। माए -सुभद्रा- बजलीह- "भलहिं इहो घर-द्वार अपने छी मुदा बनाओल छियनि देवक। हुनकर -पतिक- बनाओल गाममे छन्हि। अपन गाछी-कलम छन्हि, जे पुस्तैनी छियनि। मुइलहा माने सुखलाहा गाछ सबहक जगहपर नवका गाछो लगौने छथि। पतियानी लगा कऽ पैछला पुरखा सभ सजल छथि। तँए हम ओइ पतियानीकेँ छोड़ि अनतए कतौ दऽ अबियनि, ई नीक नै बुझि पड़ैए अछि। सिर्फ लहासे जरबैक प्रश्न तँ नै अछि अंतिम क्रिया धरि निमाहैक अछि। मासे-मास, साल भरि छाया हेतनि। साले-साल, बरसी हेतनि तइपर सँ पितृपक्ष सेहो हेतनि।"

सुभद्राक विचार सुनि सभ मुँह बन्न कऽ लेलनि। तै बीच ड्राइवर आबि कहलकनि- "गाड़ी तैयार अछि।"

ड्राइवरक बात सुनि देवनन्दन कपड़ा बदलैले गेलाह। कपड़ा बदलि कऽ आबि गाड़ीमे लहासकेँ चढ़बैक विचार केलनि। सभ कियो रहबे करथि हाथे-पाथे लहासकेँ उठा गाड़ीमे चढ़ौलनि। लहासकेँ गाड़ीमे चढ़ा सभ कियो चलि गेलाह।"

गाड़ीमे बैसते देवनन्दनक मनमे एलनि उमेरक हिसाबसँ मृत्यु उचिते भेलनि। अस्सी बर्ख धरि लोक बूढ़ होइत अछि आ ओइसँ उपर भेलापर झुनकुट बूढ़

भऽ जाइत अछि। जहिना पाकल धान आकि कोनो अन्न कटलापर अधिक छिजानैत नै होइत मुदा वएह जखन झूना जाइत तँ हवो-बिहारिमे आकि ओहुना टूत सभ खसए लगैत अछि। तहिना तँ मनुष्योक शरीर होइत। अधिक बएस भेलापर माने झुनकुट वूढ़ भेलापर शरीरक अंग सभ क्रियाहीन हुअए लगैत अछि जइसँ रंग-बिरंगक बाधा सभ उपस्थित हुअए लगैत अछि। बाधा उपस्थित होइतहि कतेक रंगक रोग-व्याधि आबि जाइत अछि। तइमे नीक भेलनि जे अखन धरि अपन सभ क्रिया-कलाप करैत रहलाह। सिर्फ प्राण-वायु शरीरसँ निकललनि।

सुभद्राक मनमे खुशी ऐ दुआरे होइन जे अधपक्कू भऽ नै पूर्ण पाकि कऽ दुनियाँ छोड़लनि।

शीला आओर आशाक लेल धैनसन। बेसीसँ बेसी हम सभ हुकुम निमाहैवाली छी। परिवारक हानि-लाभसँ हमरा की। अखन धरि परिवारमे चारिम सीढ़ीपर छलौं आब तेसरपर एलौं। तहिना आशाक मनमे रहए जे हमर तँ कोनो हिसाबे ऐ परिवारमे ने अछि ने रहत। जहिना घर आ आंगनक बीच सीढ़ी बनल रहै छै जइसँ लोक घरसँ बहार होइत आ बहारसँ घर जाइत तहिना।

माएक चेहरापर देवनन्दन नजरि देलखिन तँ बुझि पड़लनि जे पैछला कोनो बात मन पड़ि गेल छन्हि जइसँ चिन्तित जकाँ भऽ गेल छथि। चिन्ता मनसँ निकलितनि केना? युक्ति सुझलनि जे आन कियो जँ किछु बाजत तइमे ओकर चिन्ता नै मेटेतै। भऽ सकैत अछि जे ओइ बातपर धियाने नै दिऐ। तइमे नीक जे किछु पूछि दिऐ? जइसँ आन बात मन पाड़ैमे पैछला बात दबि जाइ। नीक युक्ति फुड़ने मुस्की दैत कहलखिन- ‘‘माए, जखन हम छीहे तखन तोरा चिन्ता कियए होइ छौ?’’

चिन्ता सुनि सुभद्रा कहए लगलखिन- ‘‘बौआ, पुरना बात मन पड़ि गेल छलए तँए कनी चिन्ता आबि गेल।’’

लाड़ैन चलबैत शीला पुछलकनि- ‘‘बुढ़ोमे पुरना बात मने छन्हि?’’

‘‘कनियाँ, अहूँ एक उमेरपर आब एलौं तँए कहै छी। हमरा दादी कहने रहथि जे जहिना माटिक कोठी बना लोक अन्न रखैए, जे बहुत दिन तक सुरक्षित

रहैत तहिना मनुष्यकेँ अपन जिनगीक कर्मक लेल कोठी बना राखक चाही। सभसँ पहिने गणेशजी बनौलनि। जहिना अन्नक खढ़-भूस्सा, सूपसँ फटकि हटा दै छिऐ तहिना जिनगीक कर्मक जे भूस्सा-भूस्सी अछि ओकरा हटा कर्मकेँ मोन राखक चाही। सुभद्रा बजिते छलीह कि बिचहिमे आशा जोरसँ पुछलकनि- ‘‘कोन पुरना गप छिऐ?’’

आशाक मुँह देख सुभद्रोक मुँहमे पुरना अंकुर फुटल। मुस्की दैत कहए लगलखिन- ‘‘बुच्ची, बहु दिनका कथा छी अपने गाममे दू समुदायक छौड़ा-छौड़ीकेँ प्रेम भऽ गेलै। बच्चेसँ दुनू झंझारपुर हाट माए-बापक संग जाइत-अबैत रहए। गाममे दुनूक सभ काज-उद्यम फुट-फुट रहए। ने खेनाइ-पीनाइ एकठीन होय आ ने पावनि-तिहार। मुदा खेती दुनू गोटेक एक्के रहए। दुनू गोटे तरकारीक खेती करए आ हाटमे जा-जा बेचै। गामेसँ दुनू गोटे संगे जाए आ हाटोपर एक्केठाम बैस तरकारी बेचै। जखन दुनूक बच्चा कनी चेष्टगर भेलै तँ कोनो-कोनो समान कीन-कीन आनए लगलै। दुनू संगे जाइ। एकटाकेँ ने हराइक डर रहैत मुदा संगीक संग तँ बच्चा कम हेराइत अछि। बच्चेसँ दुनू गोटेकेँ वैचारिक मिलान हुअए लगलै। अपना सन-सन लोककेँ हँसी-चौल देखै-सुनै। देखा-देखी दुनू गोटेक बीच सेहो हँसी-चौल हुअए लगलै। हाटमे तरकारी बेचैक लूरि आ खेतमे गोला-फोड़ैक, पटबैक, रोपैक, कमठौन करैक लूरि सेहो भऽ गेलैक। दुनूक नव दुनियाँ बनए लगलै किएक तँ बाप-माएसँ पाँच-दस किलोक मोटा फाजिल उठबए लगल। जइसँ परिवारक काजो आ आमदनियो दोबरा गेलै। बीचमे एकटा घटना घटलै।

‘‘की घटना?’’ फुदकि कऽ आशा पुछलकनि।

‘‘बुच्ची, झुठ की सत्य, भगवान जनथिन। मुदा गाममे चर्चा चलए लगलै। तना-तनी बढ़ए लगल। जहाँ-तहाँ गारि-गरौबलि आ पकड़ा-पकड़ी शुरु भऽ गेल। मुदा गामक जते मुँह पुरुख रहए, सभकेँ अपने-अपने अपेछितसँ कहा-कही हुअए लगलनि। कखनो काल माथा ठंढ़ा होइत नै तँ बेसी काल गरमाएले रहए लगलनि। मुदा पनचैती के करत से पंचे नै एक्कोटा गाममे। सभ मुँह-पुरुख अपनहिमे कनफुसकी कए पनचैतीक समए निर्धारित कऽ दुनू -

लड़का-लड़कीक- बापकेँ कहि देलकनि। हाट-बजारक लोक दुनू गोटे रहबे करए, जबाब देलकनि जे पंच हम वएह मानब जे निष्पक्ष होथि। मुँह-पुरुखक बीच दोसर उलझन ठाढ़ भऽ गेलनि। जँ एक समुदाइक रहैत तखन तँ दोसर ढ़ंगसँ पनचैती धरा कएल जा सकैत अछि मुदा से नै! दू जाति दू सम्प्रादायिक बीचक विवाद। सभ मुँह-पुरुखक माथ चकरा गेलनि। गाममे एक्को गोटे शेष नै जे एक पक्ष नै भऽ गेल होथि। तकैत-तकैत बुढ़ापर नजरि पड़लनि। सभ दिन तँ बुढ़ा अपन खेत-पथारसँ परिवार धरि रहलाह। गामसँ ओतबे मतलब जे मुरदा डाहए जाथि, बरियाती पुरथि, भोज खाथि, कतौ अगिलग्गी होय तँ जाथि। पर-पनचैतीक लूरि नै। मतलबो नै। कियो पुछबो नै करनि।''

हँसैत शीला बजलीह- ''एहेन सोहल-सुथनी बूढ़ा छलनि?''

पुतोहूक बात सुनि सुभद्राक आँखिमे सिंहक ज्योति एलनि। उत्साहित होइत बजलीह- ''कनियाँ, की-की लीला भेल, से की कहब। बुढ़ाक भीड़ि तँ कियो जाथि नै मुदा हमरा भरि-भरि दिन बरदबए लगल। अपन काज सभ खगए लगल। हमरा लग जे आबए तेना कऽ अपन बात कहि दिअए जे हम ''हँ'' कहि दिऐ। जइसँ हमर विचारे उधिया गेल। तखन बुढ़ाकेँ कहलियनि। जखने कहलियनि कि फड़कि उठलाह जे गाममे की कतऽ होइ छै से हम नै देखै छी। खाइ-पीबैकाल सभ एक भऽ जाएत आ इज्जत-आबरुक बेर औतै तँ पड़ा जाएत। एहेन गामसँ हटले रहब नीक। जेकराले चोरि करी सएह कहए चोरा। एहेन गामक कुचालिमे हमरा नै पड़ैक अछि। भने अपन नून-रोटीक ओरियानमे समए बितबैत छी, शान्तिसँ रहै छी। एक्के-दूइये सभ आबि-आबि कहए लगलाह। हारि कऽ हुनका बुझबैत-बुझबैत सुढ़ियेलौं। मानि गेलाह। चारि बजेक समए निर्धारित भेल। सौंसे गामक लोक एकत्रित भेलाह। आँखिक देखलाहा तँ एकौटा गवाह नै मुदा दुनूक -लड़का-लड़की- क्रिया-कलापसँ साबित भऽ गेल। एक मतसँ सभ सहमत भऽ गेलाह जे दुनूक बीच संबंध अछि। जखन संबंध अछि तखन निराकरण हुअए। गुन-गुनी फुस-फुसी बैसारमे शुरु भेल। चुपचाप बुढ़हा सभ देखैत-सुनैत रहथि। गुन-गुनी, फुस-फुसी जोड़ पकड़ए लगल। जोर पकड़ैत-पकड़ैत हल्ला हुअए लगल। दुनू

दिस गाम बँटा गेल। एक पक्षक कहब रहै जे एहेन-एहेन संबंध कोन समाजमे नै होइ छै? कोनो कि अपने गामक पहिल घटना छी। आइ धरि की भेलै? कहियो कोनो मुँह दुबराहाकेँ चारि थापर मारल गेलै तँ ककरो पाँच-दस रुपैया जुर्माना भेलै। दोसर पक्षक कहब रहै जे जाति-सम्प्रदायक बंधन काँच सूतक बन्धन छी। एक वृत्ति, एक उम्रक लड़का-लड़की जँ अपन जिनगीक निर्णए स्वयं करए चाहैत अछि तँ समाजकेँ ओइमे प्रोत्साहन करक चाही। दोसर विचार बुढ़ाकेँ जँचलनि। अपनो निर्णए दऽ देलखिन। ले बलैया, एक पक्षकेँ तँ खुशी भेलै। मुदा दोसर पक्षक जे अगिला-वहान रहै ओ बुढ़हाक गट्टा पकड़ि कहलकनि- ‘‘बड़ पैनिचैतियाक सार बनलथिहेँ। गट्टा पकैड़ते बुढ़हाक नरसिंह तेज भऽ गेलनि। सभ बुझबो ने केलक। हाँइ-हाँइ कऽ बुढ़ा चारि-पाँच थापर ओकरा मुँहमे लगा देलखिन। लगक लोक कियो एक थापर देखलक तँ कियो दू थापर। मुदा बुढ़ो आ मारि खेनिहारो पाँच थापर बुझलक। गाममे सना-सनी भऽ गेल। दौड़-दौड़ कऽ सभ अपना-अपना अंगनासँ लाठी आनि-आनि दू साइड भऽ गेल। अपन-अपन घरबलाकेँ लाठी लऽ-लऽ जाइत देख स्त्रीगणो सभ दौड़-दौड़ अबए लगलीह। ओना मारिक डर सभकेँ होय। एकबेर १९४२ई.मे एहने घटना पहद्दीमे भेल रहए। जइमे लड़का-लड़कीकेँ आगि लगा घरेमे जराओल गेल रहए। जेकर परिणाम हत्याक मुकदमा चलल आ एकतीस गोटेकेँ आजन्म कारावास भेल रहए। गामक स्त्रीगण ढेरिया गेलीह। कियो बजए लगलीह जे मनुक्खक जिनगीकेँ मनुक्खक जिनगी बना जीबैक चाही तँ कियो बजै- कुल-खानदानक नाक-कान कटौलक। कियो-किछु, कियो-किछु बजए। सभ अपने-अपने बजैमे बेहाल। जहिना पुरुख तहिना स्त्रीगण। मुदा तत्खनात झगड़ा रुकि गेल। सभ पुरुखकेँ अपन-अपन घरवाली लाठी छीन-छीनि बाँहि पकड़ि-पकड़ि अपना-अपना आंगन लऽ गेलीह। गामक खेलौनाकेँ सरकारी खेलाड़ी पकड़लनि। रंग एलै।

दुनू पक्षक जते पंच पनचैतीमे रहै सभकेँ कोट-कचहरीसँ लाट-घाट पहिनेसँ रहए। नव खेलाड़ीक लेल नव खेल आ नव फील्ड तैयार भेल। दुनू परानीकेँ

मारि-पीटक मुकदमामे फँसा देलक। जे पच्चीस बर्खक उपरान्त हाइ-कोर्टसँ फड़ियाएल।''

आत्म विभोर भऽ सुभद्रा बेटा-पुतोहू आ पोतीकेँ अपन जिनगीक कथा सुनबैत रहथिन। जहिना एकाग्र भऽ देवनन्दन सुनैत रहथि तहिना शीलो। आशाक बुद्धिमे बात अँटबे ने करैत, तँए कखनो दादीक बातो सुनैत आ कखनो बाबाक अरथियो दिस देखैत। चौबन्नियाँ मुस्की दैत शीला सासुकेँ पुछलनि- ''माए, जहलो देखने छथिन?''

पुतोहूक प्रश्नसँ सुभद्राकेँ दुख नै भेलनि। मनमे एलनि जे भरिसक जिज्ञासा जागि रहल छन्हि। ओना देवनन्दनक नजरि सेहो माइयेपर अँटकल रहनि मुदा चुपचाप सुनैक इच्छासँ कान पथने रहथि सुभद्रा कहए लगलखिन- ''कनियाँ, बुढ़ा-संग तँ हमहूँ हाइ-कोट धरि लड़लौं। मुदा हाकिमक आगू दुइये दिन जाइ छलौं। जखन मैमला भेल तखन जमानत करबै जाय आ जै दिन पुछै गल्ती केलौं अछि आकि नै, तै दिन।''

शीला- ''जहलमे की सभ होइ छै से तँ नै देखलखिन?''

सुभद्रा- ''नै कनियाँ! झूठ केना बाजब। जे नै देखलिऐ से केना कहब। भगवान सबहक देहमे रुइयाँ देने छथिन ककरो आगि कियए उठेबै।''

शीला- ''बुढ़ा, कतेक बेर जहल गेल छथिन?''

बुढ़ाक नाओं सुनि सुभद्राक मनमे खुशी आइल। मुस्की दैत कहलखिन- ''अपने मुँहे एक्कैसबेर कहने छथि। ओना देखियनि तँ हमहूँ मुदा हमरा ठेकान नै अछि।''

''भेँटो करए जाथिन?''

''कहू, केना नै जैतियनि। खाइ-पीबैक बौस मनाही केने रहथि मुदा तमाकुल-चून दऽ दऽ अबियनि।''

''देख कऽ कनबो करथिन?''

"कनितौं कियए! कोनो कि नै बुझिऐ जे दस-पाँच दिनमे फेर निकलबे करताह। तइले कनितौं कियए। दस-पाँच दिन तँ लोक कुटुमैतियोमे जा कऽ रहैत अछि।"

"बुढ़ासँ झगड़ो होइन?"

"झगड़ा कियए होइताए। तखन घरक काजमे कहा-कही हुअए। मुदा ओ हिसाब जोड़ि कऽ बुझा दथि। मन मानि जाए। एकबेर एहिना भेल बौआ वियाह लए।"

बौआक वियाह सुनि आशो चौकन्ना भेल आ शीलो देह-हाथ समेट सुनैले कान ढाढ़ केलनि। मुदा देवनन्दनमे कोनो तरहक उत्सुकता नै एलनि।

"बौआक वियाह लऽ की भेलनि?"

"बौआ जखन पढ़िते रहए तखन विचार देखिऐ समाजमे बौओसँ छोट-छोट बच्चा सभकेँ वियाह होय। जखन समाजमे रहै छी तखन तँ समाजक संग चलए पड़त। मुदा बूढ़ाक विचार रहनि जे जखन देव पढ़ि कऽ अपना पाएरपर ठाढ़ भऽ जाएत तखन वियाह करब। हमरा हुअए जे ऐ जिनगीक कोन ठेकान अछि अगर जँ वियाह केने बिना मरि जाएब तँ अपनो मन लागले रहि जाएत। मुदा बुढ़ाकेँ परिवारक खर्च जोड़ए पड़नि। कहियो हाथमे सए-पचास रुपैया नै रहै छलनि। सदिखन एकटासँ एकटा भूर रहबे करै छलै।"

पत्नी आ माइक गप-सप्प सुनैत देवनन्दन विचारक दुनियाँमे डूबल रहथि। मने-मन विचारैत रहथि जे जहिना लंकामे विभीषण छलाह तहिना तँ अहू समाजमे अछि। सदिखन एक नै एक आक्रमण होइते रहैत अछि। जै समाजकेँ हम नीक बुझै छिऐ ओइमे अन्न-पानिसँ लऽ कऽ बुद्धि धरिक चोर कियए अछि। सदिखन लोक झुठे कियए बजैत अछि? अनका नीक देख जरैत कियए अछि? दोसराक बहू-बेटीक इज्जत कियए लैत अछि? ककरो-कियो गारि-मारि कियए करैत अछि? देवनन्दनक मन फटए लगलनि। किएक तँ मनमे प्रश्न उठलनि जे समाजमे अछूत के अछि जे कोनो नै कोनो रोगसँ ग्रसित नै अछि। जँ सभ रोगिये अछि तँ समाज नीक केना भेल? जाधरि समाजक लोक समाजकेँ नीक नै बनाओत ताधरि समाज नीक बनत केना? जै गाममे

एक गोटेकेँ हेजा होइ छै ओइसँ सौंसे गाम रोग पसरि जाइ छै। तहिना तँ आनो-आनो रोगक अछि। खास कऽ समाजक रोग! अपनापर नजरि एलनि। अपनापर नजरि अबिते अपनाकेँ डॉक्टर देखलनि। मुदा केहेन डॉक्टर, जे खाली शरीरक रोगक छथि। मुदा रोग तँ एतबे नै? शरीरक संग-संग मन-रोग आ परम्परा रोग सेहो अछि जकरा समाजक व्यवहारक रोग सेहो कहि सकै छिऐ। जहिना तेज धाराक धारमे भट्ठासँ सीरा दिस बढ़ब कठिन अछि, असंभव नै? तहिना तँ समाजोमे अछि। जेम्हर देखै छी ओम्हर कोनो झाड़ीक बोन तँ किम्हरो तीत फलक गाछक बोन तँ किम्हरौ मीठो फलक गाछक बोन अछि। जे जिनगीक सैद्धान्तिक फलक बोन दिस पहुँचबैत।

तीत-मीठ फलक गाछ देख संतोषक अंकुर हृदेमे जन्म लेलकनि। संतोषक अंकुरकेँ उगिते दुनियाँक रंग बदलल बुझि पड़लनि। नजरि पितापर गेलनि। सिर दिससँ निङहारब शुरु केलनि। पाएर लग अबैत-अबैत मन पड़लनि पिताक ओ रामकथा जे गामक स्कूलमे नाओं लिखबै दिन सुनौने रहनि। भगवान राम जंगल विदा भेला। गामक -अयोध्याक- समाज अरियातए संगे चललाह। गामक सीमानपर पहुँचैत-पहुँचैत साँझ पड़ि गेल। समाजक आग्रह होनि जे अपने बोन नै जाय पुनः अयोध्या घुमि जाय। राम अपन संकल्पपर दृढ़ जे पिताक आदेश नै काटब। साँझ भेने सभ कियो रात्रि विश्राम करए लगलथि। जखन सभ सुति रहलाह तखन राम लक्ष्मण सीता विदा भेलथि। स्थल रास्तासँ नै। स्थल छोड़ि अकासक रास्तासँ। भोरमे जखन सबहक नीन टुटलनि तँ रामकेँ नै देखलनि। रास्ता दिस बढ़लाह तँ ने घोड़ाक टापक चेन्ह रहै आ ने रथक पहियाक। निराश भऽ सभ घुमि गेलाह। एहेन समाजमे पूर्ण जीवन पिता केना जीब लेलनि? नजरि बढ़लनि जे समाजमे कत्ते परिवारसँ दोस्ती अछि आ कत्तेसँ दुसमनी? नजरि खिरबए लगलथि तँ वौआ गेलथि। माएकेँ पुछलखिन- ''माए, आइ तँ समाजक काज पड़त। कते परिवारसँ बाबूकेँ दोस्ती छलनि?''

दोस्तीक नाओं सुनिते सुभद्रा हेरा गेलीह। जना शरीरसँ मन उड़ि गाममे वौआए लगलनि। मन पड़लनि संग मिल कुमरम गीत, वियाह गीत, सामागीत, घरक

गोसाँइसँ लऽ कऽ दुर्गास्थान धरिक गीत गाएब। सासुकेँ एकाग्र होइत देख शीला बजलीह- ''बूढ़ी तँ नीन पड़ि गेलीह?''

नीनक नाओं सुनिते आँखि खोलि सुभद्रा बजलीह- ''नै कनियाँ नीन कहाँ पड़लौंहेँ। मन पड़ि गेल आमक गाछीक धिया-पूता। भगवानो बड़ अनर्थ केने छथिन जे ककरो ढेरीक-ढेरीक चीज देने छथिन तँ ककरो ढेरीक-ढेरी खेनिहार। पाकल-पाकल आम जखैन बच्चा सभकेँ दै छिऐ आ ओकर हृदए जुराय छै तँ अपनो आत्मा जुरा जाइए।''

मुस्की दैत शीला- ''बूढ़ी फेर ओंघा गेलीह।''

बोलीमे जोर दैत शीला पुन: बाजलि- ''बेटा पुछै छन्हि गाममे कत्ते गोटेसँ दोस्ती छन्हि?''

''एहेन गप कियए पुछलह, बौआ? ने कियो दोस अछि आ ने कियो दुसमन।''

देवनन्दन- ''जखन गाम पहुँचब तँ बाबूकेँ जरबैले तँ लोक सभकेँ कहए पड़त किने?''

बेटाक बात सुनि सुभद्रा बजलीह- ''छिया, छिया। मिथिलाक समाज छी। ऐ समाजमे मुरदा जरबैले, ककरो घरक आँगि मिझबैले, ककरो-साँप-ताप कटने रहल आकि गाछ-ताछपर सँ खसलापर ककरो कियो कहै नै छै। ई सामाजिक काज छी। तँए, अपन काज बुझि सभ अपने तैय्यार भऽ जाइत अछि।''

माएक बात सुनि देवनन्दन नमहर साँस छोड़लनि। गामक सीमापर अबिते सभ चुप भऽ गेलाह। अपन गाछी लग पहुचिते देवनन्दन गाड़ी रोकबौलनि। रघुवीरभायकेँ अबैत देखने रहथिन।

एकबेर पछिमसँ कमला आ पूवसँ कोशीक बान्ह टूटि गेलै। बरखो खूब होइत रहए। नेपालक पहाड़सँ तराइ धरिक पानि सेहो टघरि-टघरि बेग बनि अबैत रहए। पानियो कियए ने आओत आखिर ओकरो तँ समुद्रमे समेबाक लिलसा छै। तहूमे मिथिलांचल बीच बाटपर अछि ओकरा कियए नै संग करैत जाएत। गामक उत्तरसँ बाढ़िक पानि ढूकल आ एक दिससँ पसरैत दछिन मुँहेक रास्ता धेलक। जाधरि पानि वासभूमिसँ हटि बाधक रास्ता धरि रहल ताधरि ककरो

चिन्ता नै भेलै। मुदा जखन पानि मोटा कऽ अंगना-घर ढूकए लगल तखन सभकेँ चिन्ता हुअए लगलनि। गामक एकटा टोल गहीरगरमे बसल। चारु दिससँ पानि चढ़ैत-चढ़ैत आंगना घर ढूकि गेल। एक तँ ओहिना, बरखामे टटघरो आ भीतघरो ढहि-ढनमना गेल। तइपर सँ बाढ़िक बेग अबिते भीतघर खसए लगल टटघर सभ मचकी जकाँ झुलए लगल। घर खसैत देख टोलक सभ मालो-जाल आ चीजो-बौस आ धियो-पूतोकेँ लऽ पोखरिक महार दिस बिदा भेल। पच्चीस परिवारक टोल। बेदरा-बुदरी लगा एक सए तीस आदमी। चालिस-पेंइतालीसटा गाए-महींस, पच्चीस-तीसटा बकरियो। मालो-जाल बाढ़िक पानि आ आवाज सुनि डरे थरथर कपैत। कोनो-कोनोकेँ ऑखिसँ नोरो खसैत। मुदा एक्कोटा ने खाइले डिरियाइत आ ने पानि पीबैले। सभ अपन-अपन माल जालक डोरी खोलि देलक। डोरी खुजिते आगू-पाछू जोरिया सभ पानिक बेगसँ उपर भेल। मुदा एक्कोटा जान-माल नोकसान नै भेल। एकाएक पानि नै चढ़ल। टोलक समाचार सुनिते रघुनन्दन करियाकाकाकेँ (दुलारुसँ बटू कहैत रहथिन) सोर पाड़ि कहलखिन- ‘‘एम्हर आबह हौ बटू।’’

करिया काकाकेँ अबिते कहलखिन- ‘‘सुनै छी जे पूबाइ टोलमे बाढ़िक पानि चढ़ि गेलै अछि। चलह तँ देखिऐ?’’

बिना किछु बजनहि करियाकाका संग भऽ गेलनि। थोड़े आगू बढ़लाह तँ देखलनि जे चेतनसँ लऽ कऽ धिया-पूता धरि किछु ने किछु माथपर उठौने भीजैत-तीतैत गामक ऊँचका जगह दिस जाए रहल अछि। मनमे उठलनि जतऽ जा रहल अछि ओतऽ रहत केना? मुदा आँखि उठा कऽ तकैयौमे लाज होनि। जे जनिजाति कहियो सोझामे बजैत नै ओ सभ साड़ीक फाँड़ बन्हने माथपर कियो अन्न तँ कियो ओछाइन तँ कियो बरतन-बासन नेने बच्चा सबहक पाछू-पाछू जाए रहल छथि। लोकक दशा देख करियाकाकाकेँ कहलखिन- ‘‘बटू, सभकेँ अपना ऐठाम लऽ चलह जहाँ धरि सकड़ता धरत तहाँ धरि पार लगेबै।’’

दुनू गोटे सभकेँ संग केने अपना घर चललथि। समस्या तँ देशक नै सिर्फ एक टोलक अछि मुदा पहाड़ोसँ नमहर। समाजक मनुक्खो तँ सभ रंग अछि कियो अनका दुखकेँ अपन दुख बुझि कनैत तँ कियो हँसैत। जे विपत्ति छै ओ एक गोटे बुते केना मेटाओल जाएत। जँ नै मेटौल जाएत तँ लोक मरैत केहेन परिस्थितिमे अछि। मनमे बुकौर लागि गेलनि कोनो बाटे नै सुझैत रहनि। सभसँ पहिल समस्या अछि लोको आ मालो-जालकेँ पानिसँ बँचैक लेल जगह। अपना घरे कएटा अछि। तहूमे सभ व्योतले। अंगनाक घर अन्न-पानिसँ आ जरना-काठीसँ भरल अछि। लऽ दऽ कऽ एकटा दरबज्जा। जे परिवारक प्रतिष्ठा छी। दोसराक आश्रम-स्थल। मनमे नव आशा जगलनि जे जे विपत्तिमे पड़ल अछि ओ तँ अपन विपत्तिक मुकाबला करैक लेल सेहो अछि। मुँहसँ हँसी निकललनि। अंगनासँ दरबज्जा धरि सभकेँ ठर धड़ौलनि। माल-जालकेँ तत्खनात् तँ बान्हे माने रस्तेपर खुँटा गारि-गारि बन्हैले कहलखिन। खाइक ओते जरुरी नै बुझलनि जते माल-जालक ठरक। करियाकाकाकेँ कहलखिन- ‘‘बटू, तत्खनात तँ सभ असथिर भेल। पहिने सभकेँ -मनुष्यो आ मालो-जाल- खाइक ओरियान करह। तेकर बाद अगिला काज देखबै।’’

खेनाइ बनबैक लेल आगि आ चुल्हिक जरुरत पड़त। चूड़ा तँ घरमे ओते अछि नै। तहूमे फक्का-फुक्की भेल। ओइसँ काज नै चलत। जँ चाउर-दालि, तरकारी सभकेँ फुटा-फुटा देबै तँ ओते चुल्हिक बेबस्था कतऽ हएत? से नै तँ पहिने नारक टालसँ नार घीच सभ माल-जालकेँ दऽ देल जाए। लोकक लेल चारि गोटे एक्केठाम भानस करए। सएह केलनि। भानस हुअए लगल। दुनू गोटे -रघुनन्दनो आ करियोकाका- गाममे घूमि-घूमि सभकेँ गर लगौलनि। बीस दिन बाद सभ अपना-अपना ऐठाम गेल।

करियाकाकाक कानमे पड़िते, दौड़ कऽ गाड़ी लग आबि देवनन्दनकेँ कहलखिन- ‘‘डॉक्टर सहाएब, भैयाकेँ पहिने घरपर लऽ चलियनु। घरपर मृत्यु

नै भेल छन्हि। अपनो परिवारक आ समाजोक लोक अंतिम दर्शन कए लेतनि। तेकर बाद बरियाती साजि गाछी अनबनि।''
करियाकाकाक विचार सुनि सबहक मनमे समाजक प्रति श्रद्धा जगलनि। देवनन्दनक मनमे एलनि समाजमे पिताक कएल काज। जे समाजक प्रतिष्ठाक कारण रहनि।
करियाकाकाक बात देवनन्दन मानि, चारुगोटे- देवनन्दन, सुभद्रा, शीला आ आशा गाड़ीसँ उतड़ि गेलथि। तै बीच गाममे समाचार पसरि गेल। समाचार पसैरते जे-जेत्तै सुनलनि ओ ओत्तेसँ देखैले दौड़लथि। धिया-पूता, बूढ़-बूढ़ानुससँ रास्ता अन्हरा गेल। गाड़ी केना आगू बढ़त से रस्ते नै। जे पहुँचैत, मूड़ियारी दऽ दऽ मुँह देखए चाहथि। मुँह झाँपल। तँए सभ चद्दरि ओढ़ने सुतल आदमी देखैत। लोकक भीड़ चारु भरसँ गाड़ीकेँ घेड़ नेने। ने आगू बढ़ैक बाट खाली आ ने कियो रघुनन्दनकेँ देख पबैत छलाह। माटिक मुरुत जकाँ चारु गोटे निच्चाँमे ठाढ़ भऽ सबहक मुँह देखथि। रंग-बिरंगक मुँह देख पड़नि। ककरो-ककरो आँखिमे नोरो आ मनमे सोगो तँ ककरो-ककरो आँखिमे ने नोर आ ने सोग। मने-मन करियाकाका विचारि बजलथि- ''अहाँ सभ रास्ता छोड़ि दियौ। भैयाकेँ अंगना लऽ चलै छियनि ओतै उताड़ि कऽ रखबनि आ सभ दर्शन करब।''
करियाकाकाक बात मानि रास्ता छोड़ि देलक। आगू-आगू गाड़ी पाछू-पाछू सभ घर दिस बढ़लाह घरपर अबिते रधुनन्दनक मृत्यु शरीरकेँ उताड़ि उत्तर सिरहौने सुता देलकनि। लगमे सुभद्रा, शीला आ आशा बैस गेलीह। देवनन्दनकेँ करियाकाका कहलखिन- ''बौआ, अहाँ दरबज्जापर बैसू। समाज सभ जिज्ञासो करए औताह आ एम्हर हम आगूक ओरियानो करै छी।''

दियादिक सभ चुल्हि मिझा गेल। मुदा सबहक मनमे खुशी रहनि। सभसँ उमेरगर रघुनन्दने छलाह। ओना तैयो बेबहारिक रुपमे सबहक आँखिमे नोर रहनि मुदा मनमे दुख नै। उत्तर-मुँहे सुतल, नव वस्त्रसँ मुँह छोड़ि सौंसे देह झाँपल। सिरमामे तुलसी गाछ आ गूगूलक सुगंध अंगनामे पसरैत। मर्द-औरतसँ

आंगन भरल। मर्द सभ तँ दर्शन कऽ-कए दरबज्जापर आबि जाइत मुदा स्त्रीगण सभ अंगनेमे बैस गप-सप्प करए लगथि। छोटका-बच्चा सभ ओसारपर खेलए लगल। एक साए एगारह बर्खक रधिया दादी, बाँसक बत्तीक ठेंगा हाथे एलीह। झुनकुट बूढ़ि। ने मुँहमे एक्कोटा दाँत आ ने एक्कोटा केश कारी। चौड़गर मुँह। दहिना गालपर एकटा नमहर मसुहरि। जइपर इंच-इंच भरिक दूटा पाकल केश। सौंसे देहक चमड़ी ढील भऽ घोकचि-घोकचि गेल। चानिपर तीनटा रेघा जकाँ बनि गेल। गालक उपरका भागमे सेहो रेघा जकाँ मुदा निचला भागमे गाएक गरदनि जकाँ चमड़ी लटकि गेल। आंगनमे पाएर दैते नवतुरियो आ सियानोसभ दादीक लेल रस्तो बनौलकनि आ सुभद्रा लग बैसैक जगहो। मुदा दादीक आँखिक नोरमे दर्द रहनि। ओना अखन धरि नोर पुतलीसँ भीतरे छलनि। तै काल पाँच बर्खक एकटा छौड़ा लुचबा दादीक ठेंगा पकड़ि तीनू झुनझुना -तारक बना ठोकल रहनि- डोला-डोला बजबए लगल। अंगनाक सभ खढ़ू-मढ़ू लगमे जमा भऽ गेल। धिया-पूताकेँ देख डाॅटि कऽ सुबधी बाजलि- ‘‘भने ते तूँ सभ ओसारपर खेलै छलँ, ऐठीन कियए एलँ?’’

सुबधीक बात दादीकेँ नै सोहेलनि बजलीह- ‘‘कनियाँ, बच्चा सभकेँ कियए डँटै छिऐ। अहाँ समरथ छी तँए ने बुझै छिऐ, ई सभ अखैन कियाँने गेलै। जहिना जाड़क उत्तर गरमी मास अबैए आ गरमीक उत्तर बरखा। जे गरमीसँ शुरु भऽ जाड़मे ठेका दै छै। तहिना तँ ई देहो अछि। हम तँ कातिक-अगहनक जाड़ भेलौं ई बच्चा सभ तँ फागुन-चैतक जाड़ छी। मुदा सूर्ज तँ वएह रहै छथि। भलहिं कहियो उग्र तँ कहियो शीतल भऽ जाइ छथि।’’

दादी बजिते रहथि कि शीला उठि कऽ दहिना बाँहि पकड़ि आगू लऽ जाए लगलीह। रघुनन्दन लग पहुँचते आँखिसँ साओनक बरखा जकाँ, नोर झहरए लगलनि। मुदा बेसी काल नै झहरलनि। केबल ओतबे काल झहरलनि जतेकाल अपन उमेरपर मन अँटकलनि। आगूसँ पाछू मुँहेक रघुनन्दनक जिनगी दिस नजरि बढ़िते मुँहसँ हँसी निकलए लगलनि। दादीक हँसी देख आशा बाजलि- ‘‘बाबीकेँ एक्कोटा दाँत नै छन्हि। आब हेतनि?’’

आशाक बात सुनि दादी जोरसँ हँसलीह। बिनु दाँतक चौड़गर मुँह तीन गोटेक मुँहक बरोबरि। एक झोंक हँसि दादी सुभद्राकेँ कहए लगलखिन- "दियादिनी, अहाँ बच्चा छी। तँए, कने दुख होइते हएत। मुदा अहाँसँ कम्मे उमेरमे हमर स्वामी संग छोड़ि चलि गेलथि। तै आगू अहाँक बिपत्ति छोट अछि। भगवान अहाँकेँ सभ किछु देने छथि। भरल-पूरल परिवार अछि श्रवणकुमार सन बेटा, लछमी सन पुतोहूँ छथि। एहेन सुन्नर खेलौना सन पोती अछि तहन कियए सोग करै छी। आब अपना सभ सृष्टिक ओहन बीज स्वरुप बनि गेल छी जइसँ अंकुरक संभावना नै। जहिना कोनो अन्नक बीया आकि फलक बीया साल भरिक उत्तर पुरान भऽ जाइत, जइमे अंकुरक शक्ति झीण भऽ जाइ छै तहिना भऽ गेलौं। मुदा तँए कि अन्ने फलक बीज जकाँ मनुष्योक शक्ति साले भरिमे झीण भऽ जाएत। सबहक शक्तियो एक समान नै होइत।"
तै बीच फुदकि कऽ आशा पुछलकनि- "बाबी, अहाँकेँ कते दिन भेल अछि?"
आशाक बात सुनि- "हे गै डकडरबा बेटी, तूँ हमरा दिन पूछै छेँ। साढ़े बाइस गाही बर्ख भेल अछि।"

दादीक बर्खक हिसाब कियो नै बुझलनि। सभ अकबका गेलीह। सभ-सबहक मुँह देखए लगलीह। दादी बुझि, मुस्कुराइत शीलाकेँ कहलखिन- "सासु, सासु नै माए छथि। हमर छोट दियादिनी छथि। जखन हमरा पाँच बर्ख ऐठाम एला भेल रहए तखन रघू बौआक जन्म भेलनि। एकबेरक खेरहा कहै छी। काकियो समर्थे रहथि। मुदा हमरासँ उमरगर रहथि। माघ महीनाक मकरक मेला शुरु भेल। अपना गाम सबहक बेसी लोक हरड़ी जाइत छल। हमरा संग रघू बौआ हरड़ी गेल। हरड़ीसँ कनिए बेसी बिदेसर छै। मुदा बिदेसरक मेला गड़बड़ हुअए लगलै। निरमलीसँ दड़िभंगा धरिक रेलबे कातक जते उचक्का अछि, सभ भोरुके गाड़ीसँ आबि उचकपन्नी शुरु कऽ दैत। जइसँ नीक घरक लोक जाएब छोड़ि देलक। ओना बिदेसरो बाबा बड़ जगताजोर तँए केतबो उचकपन्नी होइ तैयो मेला बढ़ले जाइत। अपना गाम सबहक लोक जाएब छोड़ि देलक। ओना क्षेत्रो नम्हर छै, तइपर सँ स्थानक लग-पासक

लोक सेहो कान्ह उठेलनि। जेकर फल भेलै जे स्थानसँ उचकपन्नी समाप्त भेल। हरड़ीक संग दूटा बाधा उपस्थित भेल। परसा धाममे सूर्य भगवानक मुरती उखड़लासँ नव स्थान बनल। ओना मुरतियो दिव्य अछि। एक तँ सूर्य भगवानक दोसर बेस किमती पाथरो अछि। मंदिरो नीक। मुदा हालमे जे साम्प्रदायिक प्रभाव मदनेश्वरकँ बढ़ौलक ओइसँ परसो आ हड़ियोकँ नीक झटका लगल। हरड़ी महादेवो छथि गहीरमे, जइसँ सभ दिन जल भरल रहैत अछि।''

बीचेमे सुभद्रा दादी दिस देख पुछलीह- ''बहीन कत्ते दिन बौआकेँ -रघुनन्दन- दूध पियौने छियनि?''

पुन: दादी बजए लगलीह- ''समरथाइमे हम खूब बुफगर रही। पहिल सन्तान भेले रहए। मरसम्फे दूध हुअए। काकी रोगा गेलीह। दूध टूटि गेलनि। हमरे दूध पीब-पीब बौआ जीयल। जखन बौआ साल भरिक भेला, अन्न-तन्न सेहो खाए लगलथि, डेगा-डेगी चलौ लगलथि, बोलियो फुटलनि तखन काकी सिखा देलकनि दूधवाली माए कहैले। हमरो नीक लागए। बेटा तँ नै कहियनि मुदा बच्चा कहैत रहियनि। डेढ़ साल भेलापर हमरो दूध टूटए लगल। खाइ-पीबैमे तँ कोताही नै हुअए मुदा दोसर कारण भऽ गेल। मकरक मेला जाइत रही। काकी बच्चोकेँ नेने जाइले कहलनि। सभ साल ओतैसँ तरिपात कीन-कीन आनी आ सालो भरि मसल्ला खाइ छलौं। ओना हरड़ी मेलाक हरीस, माटिक नादि, टाड़ा-टाड़ी नामी रहए। सात-आठ बर्खक बच्चा रहथि। गामक बहुत जनिजातियो आ धियो-पूतो रहए। अपनो बेटा आ बच्चोकेँ हमहीं नेने गेलियनि। अरबा चाउरक रोटी आ सीम-भाँटाक तरकारी बना लेलौं। गामोपर खा लेलौं।''

बिचेमे आशा टोकलकनि- ''खा कऽ महादेव दर्शन करए गेलिऐ?''

आशाक बात सुनि दादी ठहाका दैत कहए लगलखिन- ''हरड़ी मेला स्त्रीगणक मेला छी। पुरुखसँ बेसी स्त्रीगण आ धिया-पूता रहैत अछि। दस बजेमे सभ खा-खा जाइत अछि आ दोसरि-तेसरि साँझि धरि घुरि-घुरि अबैत अछि। अपना सबहक कुटुमैती बेसी अही भाग अछि। एक दिससँ धीओ-बेटी अबैत

आ दोसर दिस सँ माइयो-पितियाइन जाइत। तँए ओम्हरसँ बेटियो-जति अबैत आ एम्हरसँ माइयो जाइत। सभकेँ मेलामे भेँट-घाँट भऽ जाइत। जहिना बड़ियाकेँ बान्ह नै छै, जे मन फुड़ै छै से करैए तहिना तँ जनिजातियो आ बूड़िबकहो अछि। जे मन फुड़तै से करत। हँ तँ कहै जे छेलियह, बच्चाकेँ नेने गेलियनि। बेरहटिये पोखरिक महारपर बैस खाए लगलौं। बच्चोकेँ एक खाड़ा रोटी आ तरकारी देलियनि। हम दछिन-मुँहे-पोखरि दिस घूमि कऽ खाए लगलौं। मूड़ी गोतने रही, माथपर साड़ी लटकल रहए। तै बीच एकटा झुनझुनाबला घुमैत-घुमैत आएल। धिया-पूता सभ पाछू-पाछू रहए। ताड़क पातकेँ गुलाबी रंगमे रंगि झुनझुना बनौने रहए। एकटा झुनझुना हाथसँ बजबैत रहै आ बाकी पथियामे माथपर रखने रहए। आँएले-वाँएले बौओ रोटी खाइते पाछू धऽ लेलनि। हम बुझबे ने केलिऐ। धिया-पूता तँ खुरलुच्ची होइते अछि। झुनझुनाबला आगू बढ़ि गेल। बाटीमे पानि पीब जखन पानि दइले तकलौं तँ देखबे ने केलियनि। ले बलैया, ओते लोकमे कतऽ ताकब? भारी पहपटिमे पड़ि गेलौं। हाँइ-हाँइ कऽ तरिपातो आ टड़ो लेलौं आ तकैले बिदा भेलौं। एकटा झुनझुनाबला रहैत तखैन ने ठेकना कऽ जैतौं। से तँ जेम्हर देखिऐ ओम्हरो झुनझुनाबला रहए मन हारि मानि लेलक। मनमे हुअ लगल जे काकीकेँ की जबाब देबनि। मुदा मने-मन चण्डेश्वर बाबाकेँ कहलियनि जे आन देवस्थानमे तँ कियो नै हराइत अछि मुदा तोरा स्थानमे भऽ गेलह। अखनुका जकाँ ताबे धिया-पूताक चोरि देवस्थानमे नै हुअए। मुदा तैयो मनमे खुटखुटी रहबे करए। तेकर कारण रहै जे कहियो-काल सुनिऐ फल्लां स्थानसँ फल्लांक बेटा आकि बेटी हरा गेलै। तँए मनमे हुअए जे काकी की कहतीह? तहूमे रोगाएल छथि। मने-मन समोह लागि गेल। मुदा फेर मनमे भेल जे जँ कहीं घुरि-फिरि कऽ चलि आबथि। थोड़े-काल गुन-धुन कए, एक हाथकेँ तेरपात लेलौं आ दोसर हाथमे टाड़ा, तकए बिदा भेलौं। रस्ताक दुनू कात दोकानबला सभ दोकान लगौने रहै आ बीच देने लोक सभ चलए। मंदिरक आगू एक्केबेर मंदिरक फाटकसँ बहुत लोक निकलल। रास्तापर रेड़ा भऽ गेल। तहीकाल माथपर सँ साड़ी ससरि गेल। आब की करब? दुनू हाथो बरदाएल रहए।

माथपर साड़ी केना लेब? नै लेब तँ लोक की कहत? तै काल दहिना हाथक टाड़ा छुटि गेल। फुटि गेल। झुटका-झुटाक भऽ गेल। मुदा पहिने साड़ी ससारि कऽ माथपर लेलौं। एक गोरेकेँ पाएरमे झुटकाक कान गरि गेलै। ओ भिन्ने खिसियाइत कहलक- ''एहेन ढहलेल छह ते मेला-ठेला कियए अबै छह?'' मुदा अपन हारल रही, किछु नै कहलिऐ। चुपे-चाप रेड़ासँ बहरेलौं। बाहर अबिते आँखि उठा कऽ तकलौं आकि देखलौं जे उत्तरसँ दछिन मुँहे एकटा झुनझुनाबला अबैए। रस्ता कातमे ठाढ़ भऽ हिया-हिया देखए लगलौं आकि पाछू-पाछू हिनको (रघुनन्दनकेँ) देखलियनि। देहो हल्लुके रहए। खाली एक्केटा हाथ बरदाएल रहए। दौड़ कऽ जा बाँहि पकड़ि कात केलियनि। फेर जखन पोखरिक महारपर एलौं तँ ककरो नै देखिलिऐ। सभ चलि गेल रहए। आनो-आनो गामक यात्री घरमुँहा भऽ गेल रहए। हमहुँ ओही लाटमे विदा भऽ गेलौं।

मुस्की दैत शीला पुछलकनि- ''तमसाएलमे फज्झतियो केलखिन?''

सिनेहसँ भरल दादीक मुँहसँ निकललनि- ''राम-राम। अबोध बच्चाकेँ कियए किछु कहितिऐन। अबोध बच्चाकेँ तँ बुझा कऽ ने कहबै आकि मारि कऽ। मारलासँ बच्चा हेहरु भऽ जाइ छै किने? हँ ते कहै छलौं ने, गामपर एलौं तँ काकीकेँ कहलियनि जे एहेन-एहेन खुरलुच्ची बेदरा सेने कोनो मेला-ठेला नै जाय। काकी अकचका कऽ पुछलनि तँ सभ खेरहा कहलियनि। उमेरक अन्तर रहितौ चौल करबे करै छलियनि। जूरशीतलमे अछीनजलसँ असीरवाद दैते छलियनि। फगुआमे रंग-रंग खेलबो करै छलौं। (सुभद्रा दिस देख) बहीन, अहाँक मालिकसँ कम्मे उमेरमे हमर मालिक संग छोड़लनि। करीब साठि बरीससँ उपरे भेल हएत। अहाँ तँ एक बएसपर आबि गेल छी। भगवान कोनो चीजक परिवारसँ समाज धरि कमी देने छथि जे सोग-पीड़ा करब। दुनियाँ फुलवारी छिऐ। एक अबैत अछि एक जाइत अछि। जहिना सालो भरि एकटा (जड़-चेतन) जन्म लैत अछि, एकटा जुआनीक आनन्द लैत अछि आ एकटा पाकि कऽ सुखैत अछि। तहिना तँ मनुक्खोक होइत अछि। तहूमे भगवानक फुलवारीक अजीब गति छन्हि। हुनका फुलवारीमे सालक कोन, मासक कोन, दिनक कोन जे छने-छन एकटा अबैत अछि तँ दोसर जाइत अछि। हम अहाँ

मनुक्ख छी। असकर मनुक्ख रहितो सामाजिक सेहो अछि मुदा पहिने मनुक्ख छी तखन किछु आर। मनुष्यकेँ मनुष्यत्व प्राप्त करब प्रमुख काज छी। जखने मनुष्यकेँ मनुष्यत्व प्राप्त भऽ जाइत तखने ओ दुनियाँकेँ चिन्हए-जानए लगैत। अपन परिवारसँ समाज (मनुष्य-मात्र) धरिक संबंध स्थापित कऽ लैत अछि। जइसँ संबंधक अनुरुप अपन दायित्व निमाहए लगैत अछि। ओना बच्चा-रघुनन्दन हमरा आगूमे बच्चे छथि। भलहिं सामाजिक संबंधमे भाए-भौजीक संबंध अछि। मुदा भगवान अनुचित केलनि। उचित ई होइत जे पहिने हमरा लऽ चलितथि।
ई विचार मनमे अबिते दुनू आँखि ढबढ़बा गेलनि।

बचनू, चंचल, झोली, बौकू आ बतहू, देहक कपड़ा उताड़ि खाली देहपर तौनी आ डाँड़मे धोती पहीरने कान्हपर कुड़हरि नेने पहुँचल। अंगनासँ दरबज्जा धरि जनिजाति, पुरुख आ बच्चा सभसँ भरल लोकक भीड़ि देख देवनन्दनक मन उड़ैत रहनि। अंगनासँ दरवज्जा धरि पिताक हँसैत आत्मा देखथि। बिसरि गेलाह अपन जिनगी। मनमे हुअए लगलनि जे बिनु कहनौ समाज केना अप्पन काज बुझै छथि। एहेन काज समाजक केबल मृत्युए समए नै, बेटा-बेटीक बियाहक संग अनेको समए होइत अछि। संग मिल हँसी, संग मिल कानी, संग मिल गाबी आ संग मिल नाची, तँ ऐसँ सुन्दर की होइत अछि। सुख ककरा कहबै? जै सुख लेल लोक नीचसँ नीच काज करैत अछि मुदा पाबि नै पबैत अछि।

एकछिन्ना धोती पहिरने श्रीकान्त पहुँचलाह। श्रीकान्त मधुबनी कोर्टसँ बड़ाबाबूक पदसँ सेवानिवृत भेल छलाह। मुँह निच्चाँ केने सोझे आंगन पहुँच ओ पाएर छुबि गोड़ लागि एकटंगा दऽ ठोर पटपटबैत फुसुर-फुसुर कहए लगलखिन- “काका, अहाँ परसादे जिनगी भरि कुरसीपर बैस सेवा निवृत भेलौं। जइसँ जहिना जिनगी चैनसँ बितेलौं तहिना अगिला शेष जिनगी सेहो बिताएब।”

सुभद्रा दिस देख पुन: बजलाह- ''काकी, हमहूँ अही समाजक बेटा छी। जहिना अहाँ देवकेँ बुझैत छियनि तहिना बुझब।''
श्रीकान्तक बात सुनि सुभद्रोकेँ मन पड़लनि। मनमे उठलनि जे देखियौ कौल्हुका छौड़ा बूढ़ भऽ गेल। बूढ़ा तँ सहजहि झुनकुट बूढ़ छलाह। हवा-बिहाड़िमे टूटि कऽ खसबे करितथि। एहेन मृत्यु भगवान सभकेँ देथुन। एहेन मृत्यु तँ धरमतमे सभकेँ होइ छन्हि। कोनो कि हमरेटा चूड़ी फुटल, सिन्नुर धुआएत आकि दुनियाँमे बहुतोकेँ होइ छै।

मूड़ि निच्चाँ केने श्रीकान्त अंगनासँ निकलि दरबज्जापर आबि देवनन्दनक बगलमे चुपचाप बैस गेलाह। किछु बजैक साहसे नै होइत रहनि। जना जीह्वामे थरथरी आबि गेल रहनि। साहस बटोरि, आँखि उठा, देवनन्दनकेँ कहलखिन- ''बाउ देव, ओना अहाँ बच्चा छी मुदा हमरासँ सभ तरहेँ उपर छी। अपन बात कहै छी। अखुनका जकाँ पहिने घरक स्थिति नै रहाए। बाबू बड़ मेहनती रहथि। जहिना मनुक्खक किरदानी तहिना दैवीए प्रकोप सेहो सदिकाल चलिते रहए। एक दिस बइमानी-शैतानी तँ दोसर दिस पानि-बिहाड़ि भूमकम, रौदी, शीतलहरी होइते रहए। तइपर सँ रोग-व्याधि सेहो चलिते रहए। जखन टेस्ट परीक्षा दऽ पास केलौं तँ फार्म भरैक समए आएल। बाबू अस्सक रहथि। कालाजार भऽ गेल रहनि। (कालाज्वर सुनि देवनन्दनक मनमे एलनि जे सचमुच अपना इलाकामे कालाज्वर अखुनका केन्सरसँ कम नै छल) दिनानुदिन देह हहड़ले जाइत रहनि। गुणाकरपुरसँ हाथीक लिद्दी आनि-आनि दियनि। बच्चे रही तँए बुझबो कम करिऐ। माए जे कहए से कऽ दिऐ। फारम भरैले रुपैया माएसँ मंगैक साहसे ने हुअए। भरि दिन तंग-तंग देखियनि। दोसर-दोसर विद्यार्थी सभ फारम भरि लेलक। हमरा मनमे विचित्र उथल-पुथल होइत रहए। अंतिम तारीख अबैत-अबैत आशा टूटि गेल। जेना विपत्ति कपारपर आबि गेल हुअए तहिना बुझि पड़ए। दुनियाँक रंग बेद-रंग लागए लगल। अंतिम दिनक चारि बजे, हेड मास्टर सहाएब एकटा विद्यार्थी दिअए समाद देलनि जे- काल्हि धरि हमरा लग फारम रहत तँए तूँ आबि कऽ

फारम भरि लाए। कौल्हुका बाद भरब कठिन भऽ जेतह।? ने कोनो काज नीक लगे आ ने खेनाइ-पीनाइ। मनमे आएल एकबेर रघुनन्दन कक्काकेँ कहियनि आबि कऽ सभ बात कहलियनि। पुछलनि जे कहिया धरि काज छह? कहलियनि- आइ तँ आखिरी तारीक छी मुदा हेड मासएब एते दया केलनि जे काल्हि धरि समए देलनि। दरबज्जेपर सँ काकीकेँ बक्सामे सँ रुपैया नेने अबैले कहलखिन। जहिना बच्छाबला पैकार देने रहनि, तहिना आनि कऽ आगूमे रखि काकी कहलकनि जे घरमे एक्कोटा चाउर नै अछि....। जहिना काकी कहलखिन तहिना कक्का उत्तर देलखिन- एक-दू साँझ भुखलो रहि जाएब। मुदा एक जिनगीक प्रश्न अछि। तँए एहने सभ काजकेँ ने लोक धरम बुझैए। रौदियाह समए रहए। जइसँ गामक लोक कियो मड़ूआ रोटी, तँ कियो कोटाक जनेरक रोटी, कियो अल्हुआ तँ कियो खेसारीक उसना खाए। सेहो सभकेँ भरि पेट नै होइ। कते गोटेकेँ तँ साँझक-साँझ चुल्हि नै चढ़ैत रहए...।''

कहैत-कहैत श्रीकान्तक आँखिमे नोर टघरए लगलनि। जते दुखक ताप श्रीकान्तक आँखिसँ टघरि-टघरि निच्चाँ खसैत तते देवनन्दनकेँ धरतीसँ उठैत हवासँ हृदए शीतल हुअए लगलनि। पुछलखिन- ''अखन परिवारक की स्थिति अछि?''

धोती खूँटसँ आँखि पोछैत कहलखिन- ''बाउ, बड़ सुखसँ जीबै छी। दुनू भाँइ बी.ए. पास कऽ नोकरी करैए। जेठका हाई स्कूलमे अछि आ छोटका ब्लौकमे। शनिए-शनि दुनू भाँइ अबैए आ सोमकेँ सबेरे खा-पी कऽ चलि जाइए। दुनू पुतोहूओ आ पाँचो-पोतीसँ घर भरल अछि। अपनो पेन्शन भेटते अछि। भगवान बेटी नै देलनि। मुदा तैयो दुनू बेटाकेँ पढ़ा, रहैले छह कोठरीक माकन आ तीन बीघा खेत कीनलौं। चौमासमे एकटा कल गरा देने छिऐ, जइसँ तीमन-तरकारी कीनए नै पड़ैत अछि। बाकी खेत बटाइ लगा देने छिऐ। भरि दिन अनमेनामे लगले रहै छी। कखनो ई नै बुझि पड़ैए जे समए केना काटब। एते दिन तँ ऑफिसेक फाइल उघलौं मुदा आब दू घंटा कऽ रामायण, महाभारत पढ़ै छी। तै लागल बच्चे सभकेँ अपनो पढ़ा दै छिऐ आ गोटे-गोटे खिस्सा रामाइनो-महाभारतसँ सुना दै छिऐ। सालमे एकबेर महिना

भरिक हिसाबसँ देशाटन सेहो कऽ लैत छी। जइसँ तीर्थाटनो भऽ जाइत अछि। अपनो तँ बहुत नहिये अछि मुदा कक्काक बताओल बातकेँ अखनो कान धेने छी जे अपनासँ निच्चाँक जँ कियो किछु मांगए अबैत तँ नै पान तँ पानक डंटियो लऽ जरुर सेवा करै छिऐ। मनमे कखनो कोनो चिन्ता नै रहैए।''

तै बीच किसुनलाल साबेक जुटि खोलि भिजौने आबि दलानक आगूमे बैस खरड़ै लगल। कान्हपर कुड़हरि नेने सोधन आबि करियाकाकाकेँ पुछलकनि-
''भैया, बाँस कटबै?''
''के सभ जाइ छह?''
''कएक टा कटबै?''
''रौ बुड़िबक, इहो पुछैक गप्प छी। खूब नमगर-चौड़गर चचड़ी बनबैक अछि। कोन चीजक कमी भैयाकेँ छन्हि जे मचोड़ि-सचोड़ि कऽ घरसँ बहार करबनि। कमसँ कम तँ चारिटा बाँस आनह। दूटा मुठबाँसी आ दूटा छिपगर लऽ आनह।''
''कोन बीटमे कटबै?''
''एना अनाड़ी जकाँ कियए पूछै छह। तोरा कि नै देखल छह?''
''से तँ सभटा देखल अछि। साले-साल काटि कऽ लऽ जाइ तैयो ने देखल रहत। आकि आबे बिसरि जाएब। जहिना जेठ भैया जीबैतमे छलाह तहिना तँ आगूओ रहता किने। पाँचटा बाँस साले-साल सोझहोमे कटै छलियनि परोछोमे कटबनि। मुदा से ने कहलौं। कहलौं जे हरोथक बीटमे कटबै आकि चाभमे?''
सोधनक बात सुनि करियाकाका गुम्म भऽ सोचए लगलथि। मुदा बुझल-गमल काज तँए सोचैमे देरी नै लगलनि। मुस्की दैत कहलखिन- ''हरोथ मरदनमा बाँस होइए छाती धरि मोंछ-दाढ़ी रहै छै। ओकरा चिक्कन बनबैमे देरी लगतह। संगे एकटा आरो ओजार -पगहरिया- तीन दिन जहल चलि जाएत। काजक घरमे सभ चीजक काज बढ़ि जाइत अछि।''

करियाकाकाक बात सुनि हँसैत सोधन बौकू दिस बढ़ल कि तखने धड़-फड़ाएल दुनू परानी लेलहा आएल। अपनाकेँ अपराधी बुझि करियाकाकाक आगूमे ठाढ़ भऽ गेल। करियाकाका बुझि गेलखिन जे भरिसक कतौ गेल छलै तँए पछुआ गेल। आगू चलैबला जँ पछुआ जाइत तँ तेकर कारण होइ छै पछिला काज। मुस्कुराइत कहलखिन- ''चेला, अखन धरि सुतले छेलह?''

ठोर बिचकबैत लेलहा कहलकनि- ''काका, कतेक दिनक पछाति आइ काज लागल। वएह करैले चलि गेल छलौं।''

''कोन काज करए गेल छेलह?''

''घुरना भैयाकेँ आठ गो मझोलके शीशो गाछ छै वएह पांडेले गेल छेलौं। एक ते एहन गाछ नै देखलौं। सदिकाल चुट्टी आ घोरन लड़ाइये करैत रहै छै। मुदा आइ तँ अद्भुत देखलौं। चारिटा गाछपर ने चुट्टी ने घोरन छलै। मुदा एक भागक दूटा गाछमे लोहाड़ि रहए आ दूटा पर घोरन। तीनटा तँए पांगि नेने छलौं कि सोनमा माए दौड़ल आबि कऽ कहलक। जे रघू दादा मरि गेलखिन। छिप्पी दिससँ थोड़े पांगि नेने रही। सोचलौं जे उतड़ैमे ओते घोरन कटबे करत जते कटैक छै...;

उत्तेजित भऽ पुन: ....ऍह काका की कहब पाँखिबला बड़का-बड़का घोरनक छत्ता रहए। ओही पुरबैमे कनी अबेर भऽ गेल।''

''अच्छा की हेतै। अखन ते ढेरो काज पछुआएल अछि। भने टेंगारियो अननहि छह। सोधनक संग जा बाँस काटि आनह।''

''काका, कड़ची टाट बनबैले लऽ लेब। ताबे ओतै बोझ बान्हि कऽ रखि देबै।''

''बड़बढ़ियाँ।''

''कक्का मूजक काज तँ सेहो ने हएत।''

''भने मन पाड़ि देलह। बिसरले छेलौं।''

घरवालीकेँ लेलहा कहलक- ''पहिने दुनू गोटे काकाकेँ दर्शन कऽ लिअ। तखन हम बाँस काटए जाएब आ अहाँ मूज नेने आउ। गठूलाक बत्तीमे खोंसि कऽ रखने छी। अधा रखि लेब अधा नेने आएब।''

कहि लेलहा करियाकाकाक कानमे फुस-फुसा कऽ कहलकनि- ''कक्का, थाकि गेल छी। पियासो लगि गेल अछि। पानि तँ पीब लेब मुदा अखन खाएब केना। एकबेर चीलमक भाँज लगा दियौ।''

लेलहापर करियाकाका बिगड़लखिन नै! सोधनकेँ आँखिक इशारासँ कहलखिन- ''कुड़हरि-टेंगारी लेलहो आ झोलीकेँ दऽ दहक आ हमर नाओं कहि बौकासँ पाँच रुपैयाक गांजा लऽ ओतै माने बँसबिट्टीयेमे पीब लिहह।''

काजक जुति-भाँति लगा करियाकाका बँसबाड़ि पहुँच गेलाह। तीनू गोटे गजोक पीबैक तैयारी करैत आ दुनू बापूत रघुनन्दन-देवनन्दनक तुलनो करैत रहए। सोधन बाजल- ''देवनन्दन कतबो पैघ डॉक्टर सहाएब भऽ जेता मुदा तइमे की रघू कक्काक परतर हेतनि?''

सोधनक बात सुनि करियाकाका जिज्ञासासँ पुछलखिन- ''से की?''

''भरि दिन कक्का महादेव जकाँ लेन-देन करैत छलाह। डॉक्टर साहाएब बुते से हेतनि।''

चीलममे दम मारि, उपर मुँहे धुँआ फेकैत करियाकाका बजलाह- ''अपने बात सोधन कहै छिअ। भलहिं लोक हमरा माइयो-बापकेँ दोख लगा कहि दैत अछि जे जाबे माए-बाप, जन्मदाता भगवान ओ किछु गुण नै देखलखिन ताबे करिया नाओं कियए रखि देलखिन। कोनो की हमर देहक रंग कारी अछि। तँए, हम तँ समाजमे कलंके बनि जन्म लेने छी। कतबो लोककेँ बुझेबै तैयो हमर बात तरे पड़ि जाइत। जकरा बुझा देबै ओ बुझि कऽ मुँह बन्न कऽ लेत। जेरक-जेर जे जनमि-जनमि कऽ नवका पीढ़ी बनबैत अछि ओ केना बुझतै? मुदा तइले दुख कहाँ होइए। हम तँ ओहन समाजक लोक नै छी जे वित्तीय गामक सीमामे घर बना बुझैत अछि। हम तँ ओइ समाजक छी जइमे जन्मसँ मृत्यु धरिक गाड़ी गुड़कैत अछि। पलहनिक ऐठामसँ लऽ कऽ असमसान धरि।''

जाधरि करियाकाका बजैत रहथि ताधरि लेलहा दू दम मारि लेलक। गहूमन साँपक बीख जकाँ लेलहाकेँ निशाँ चढ़ि गेल। सोधनक हाथमे चीलम दैत बाजल- ''कक्का, एकबेर पटुआ काटए असाम गेलौं। अपना इलाकाक बहुत

लोक साले-साल पटुओ आ धानो काटए मोरंग, असाम, ढाका धरि जाइत छल। मुदा हम पहिले-पहिल गेल रही। काकरभिट्टासँ बस पकड़ि सिलीगोड़ी होइत असाम गेलौं। एकटा बड़का धार -ब्रह्मपुत्र- देखलिऐ। बसक कंटेक्टर ओंगरीसँ एकटा पहाड़ देखबैत बाजल जे कामरुप कामाख्या मंदिर ओही पहाड़पर छै।''

चीलम बढ़बैत सोधन पुछलक- ''कोन कमख्या?''

सोधनक बात सुनि ठहाका मारि हँसि लेलहा बाजल- ''भैया, तहूँ अनठा-अनठा बजै छह। हौ वएह कमख्या जइठामसँ लोक जोग-टोन सीख-सीख अबैए आ अपना इलाकामे मौगी सभकेँ ठकैए। कहतह जे सभसँ पक्का मंत्र हमर कोखिया गुहारिक अछि। शुक्रक बेरागनक दस बजे रातिमे गुहारि करए जेतह।''

सोधन- ''ओइ स्थानपर जा कऽ नै देखलहक?''

''ऐँह, भैया तोहू हद करै छह। जखैन गौहाटी पहुँच गेलौं। तखैन नै जइतौं। गेलौं। ते देखलिऐ जे चिड़ैसँ लऽ कऽ मनुक्ख धरिक बलि होइए। हँ, ते कहै छेलियह जे जखन बससँ उतड़लौं ते पानि पड़ैत रहए। कनियेँ काल अँटकलौं कि पानि छुटि गेलै चाह पीना बड़ीकाल भऽ गेल रहए। चाह पीबैले मन लुस-फुस करैत रहए। किछु नीके ने लगाए चारु गोटे एकटा चाहक दोकानमे गेलौं तँ दोकानक सजाबट देख कऽ किछु ने फुड़ल। अपना इलाकामे ओ सजावट कहाँ अछि।''

सोधन- ''केहन सजाबट रहए?''

लेलहा- ''दोकानदारेसँ पुछलिऐ ते कहलक ई बाँसक कैमचीक बनौल छिऐ। ओकर बनाइ देख आश्चर्य लगल जे केहेन-केहेन लुरिगर लोक सभ अछि। बाँसेक कुरसी, टेबुल आ गिरहक कप बनौने अछि। सिंहदुअरि परक मेहरावकेँ आध घंटा देखैत रहलौं। पथिया-मौनी तँ अपनो इलाकामे बनबैत अछि मुदा ओहन कहाँ बनबैए। ने ओहन मेघडम्बर बनबैए आ ने ओहन मंदिर नुमा घर...;

मुस्की दैत पुन: ...ओम्हुरका बाँसो अजीब अछि। अपनो इलाकामे बीस-पच्चीस रंगक बाँस अछि। मुदा ओम्हर तँ सइयो रंगक अछि। जेहन कड़चीक दतमनि बनबै छह तेहन सऽ लऽ कऽ भरि-भरि पाँजक देखब'हक। पालकीमे जे बाँस देखै छहक, बीटक-बीट ओ बाँस अछि। छत्ता बेट बनबैबला सेहो अछि। पुरान-पुरान बाँसक बीट सभ फुलाएल-फड़ल सेहो अछि।''

चीलमो सठल। उठैत करियाकाका बजलाह- ''बेसी देरी नै लगबिहह। हम ताबे आगू बढ़ै छी।''

करियाकाकाक बात सुनि लेलहा- ''कक्का जहिना पानि उतड़ल कोदारि, खुरपी, हँसुआ इत्यादिसँ काजो कम होइत आ भीरो बेसी होइत। तहिना पैनउतड़ू पुरुख आ पैनचढ़ू पुरुखक काजमे होइत अछि। एत्तेकाल पनिउतड़ू छलौं आब पानि चढ़ि गेल। अहाँ पहुँचबो ने करब कि तइसँ पहिने हमसभ पहुँच जाएब। मुदा एकटा बात कहि दै छी ''रघू कक्का गामक मेह छलाह।'' ई अंतिम काज समाजक कान्हपर अछि तँए नीक जकाँ होनि।''

चारिटा बाँस काटि तीनू गोटे पहुँचल। दुनू मुठबाँसीक दूटा बल्ला बनौलक। वाकी दुनू छिपगरहा फट्ठा बनबैले टोनए लगल। दू गोटे टोन बनबै आ दू गोटे दू-दू फाँक कऽ फट्ठा बनबए लगल।

रघुनन्दनक मृत्युक समाचार सुनि दियादीक बीच चुल्हि बन्न भऽ गेल। मुदा दि तइमे यादमे एकरुपता नै। जहिक चलैत किछु चुल्हि बन्न भेल आ किछु जरिते रहल। गाममे सभसँ नमहर दियादी रघुनन्दनक छन्हि। से कोनो एकाएक आइये भेलनि, से नै। पहिनेसँ चलि अबैत छन्हि। पहिलुका रुतबा आब नै छन्हि मुदा तैयो गामक लोक मने-मन बुझैत अछि। पहिलुका रुतबा कमैक कारणो भेल। बेटीक बाढ़ि एने किछु परिवार तँ उपटिये गेल जे जहियासँ सतना आ रमचन्द्रा भेल तहियासँ तँ आरो दियादी घिना गेलनि। दुनू एहेन भेल जे गामक कोन बात जे अपनो कुल-खनदानक बहीनकेँ बहीन नै बुझैत। जइसँ आनो-आनो आ अपनो परिवाक बूढ़-पुरान ''छगड़ा गोत्र'' कहए

लगलनि। ऐ सभ दुआरे रघुनन्दनोकेँ दियाद-वादसँ ओते मेल नै रहनि जते सभ चाहनि। एकटा बात अखनो जरुर अछि जे आन दियाद आन जातिसँ कोनो तरहक झगड़ा-झंझटमे सभ एक भऽ जाइए। अखन धरि एते जरुर निमाहैत एलनि जे अर्थी-लहासकेँ अपने दियाद उठा कऽ अंगनासँ गाछी लऽ जाइत छथि।

अखनो गाममे सभसँ अधिक पढ़ल-लिखल दियादी-परिवार देवनन्दनेक छन्हि। मुदा गुरुकाका आ पढ़ुआभैया ओछाइने धेने छथि। जहिया दयाकान्त डॉक्टरी पढ़ि नोकरी शुरु केलनि तहियेसँ धिया-पूताक संग गाम छोड़ि देलनि। तहिना उमाकान्तो इंजीनियरिंग पढ़ि केलनि। आब तँ सहजहि चलनिये माने फैशने भऽ गेल अछि साधारणो नोकरी केनिहार सभ गाम छोड़ि दइए। उमेरे तँ गुरुओकाका आ पढ़ुओभाय बूढ़ नहिये भेलाहेँ मुदा सोगे दुनू गोटे ओछाइन पकड़ि लेलनि। नीको मन रहै छन्हि तैयो घरपर सँ कतौ नै जाइ छथि
अखुनका लोकक माने मर्द-औरतक जे छिछा-बिछा देखै छथिन तइमे मन सदिखन खसले रहै छन्हि। नवका लोको तेहने भऽ गेल अछि जे नीक विचार, नीक काजकेँ शब्द मात्र बुझै छथि ओकर व्यवहारिक पक्षक गुणकेँ नै बुझै छथि। बुझबो केना करताह? जे कोनो फल काज केलाक उपरान्त भेटैत अछि ओ बिनु केने केना भेट सकैए। दियादीक परम्पराकेँ निमाहैक लेल सुखदेव देवनन्दन लग आबि कहलखिन- ''बौआ देव, अहाँ बच्चा छी तँए दियादीक परम्पराकेँ नै बुझै छिऐ। अखन धरि अपना दियादीमे चलनि रहल जे लहासकेँ आंगनसँ गाछी अपन परिवारक -दियादीक- समांग उठा कऽ लऽ जाइत अछि।''
सुखदेवक बात सुनि देवनन्दन किछु नै बजलाह। मुदा कातमे ठाढ़ करियाकाका मुस्कियाए लगलाह। मनमे नचैत रहनि जे अखन गाममे छथि तँए बेसी फुड़ै छन्हि। देह तेहन बनौने छथि जे अपन धोधि सम्हरबे ने करै छन्हि, डॉड़सँ धोती ससरि-ससरि खसैत छन्हि आ रुआब बब्बेबला छन्हि। देवनन्दन दिस देख सुखदेवकेँ कहलखिन- ''हओ सुखदेव, भाय-सहाएब जाति-दियादसँ

आगू बढ़ि समाजमे छथि तँए कियो अपन करबह। जँ तोँ गाछिये लऽ जेबहुन तँ ऐमे अधला की? इहो ते एकटा काजे भेल। लेकिन खाली बजनहिटा सँ ते नै हेतह। तै लेल संगोरो करए पड़तह।''

कहि करियाकाका मुँह चुप कऽ लेलाह किन्तु मनमे अबैत जे- जिनगी बितलनि बौहुक संग सिनेमा देखैमे आ एलाहैँ अपनत्व बुझैले। कोनो गत्रमे लाजो ने होइ छन्हि। मुदा ऐ गप्पकेँ मनहिमे रखि बात बदलैत फेर बाजलाह- ''जाधरि हम सभ एम्हुरका ओरियान करै छी ताधरि तहूँ संगोर केने आबह।''

तहि बीच सुन्दरकाका धड़फड़ाएल पहुँचलाह। दुनू ममियौतभाय परसू कपड़-फोड़ोबलि कऽ नेने रहथिन ओहिक जिज्ञासामे गेल रहथि। दुनू ममियौतक बीच डेढ़ कट्ठा घरारी। बीच गाममे घर छन्हि। गामो गदाल तँए एक्को घुर घरारी कीनब असाध छन्हि। के अपन घर तोड़ि देतनि। ओना बाधमे पाँच बीघा खेत छन्हि मुदा धरारीक सुखे तँ असकरे बाधमे नै बसताह। नानाक परिवार समटल रहने ऐल-फइलसँ रहै छलाह। मालोक थैर नारक टालो बना लैत छलाह। इनारो अंगनाक कोनेमे रहनि। मुदा अपना परोछ होइते मनुक्खक बाढ़ि घरमे आबि गेलनि। दुनू भाँइ भिनौज कऽ लेलनि। कर'बो नीक बुझि पड़लनि। करमी लत्ती जकाँ जेठकाभायकेँ परिवार चतड़ि गेलनि। भगवानो दहिन भऽ सातटा बेटा आ छहटा बेटी देलखिन। पढ़बैक तँ कोनो समस्ये नै जे वियाहो-दान पछुआएले रहनि। मुदा तैयो घरक अभाव बुझि पड़ए लगलनि। अपने टी.बीक रोगी। धिया-पूता जनम'बैत घरोवाली तेहने। मुदा जहिना क्रोध तहिना जेठ हेवाक रुआब मनमे दुनू गोटेकेँ रहबे करनि। छोट भाएकेँ दूटा बेटेटा। तँए, कोनो तरहक अभाव नै बुझि पड़नि। एक पीठिया पाँचो भाँइ लाठी उठौलक। समांगक पातर छोट भाए, कपार फोड़ा लेलनि। मुदा घरवाली बदला लैये लेलखिन। पहिने भाइक चानिपर खापड़ि फोड़ि दियादिनीपर कनखा पटकैत कहलखिन- ''भरि दिन आहि-आलम करैत रहतीह आ रातिकेँ केहन सुरखुड्डू भऽ जाइ छथि।''

छोट दियादनिक गारि सुनि तँ उनटबए चाहलनि मुदा ताबे टोलक लोक सभ आबि झगड़ा छोड़ा देलकनि। ओइ झगड़ाकेँ निपटबैक लेल सुन्दरकाका गेल

रहथि। मात्रिकेमे पता लगलनि जे रघुनन्दनभाय देश छोड़ि देलनि। मामकेँ पनरह दिनक समए दऽ आबि गेलथि। गाम अबिते अंगा, चप्पल निकालि धोतीक खूँट देहपर लऽ विदा भेलाह। अंगनासँ निकलिते पता लगलनि जे लहास अंगनेमे अछि तँए गाछी दिसक रास्ता छोड़ि घरे दिसक पकड़लनि। डेढ़ियापर पहुँचते करियाकाका सोझमे पड़ि गेलखिन। पुछि देलखिन- "काज सूढ़ियाएल छह कि पछुआएल छह?"

नजरि घुमबैत करियाकाका कहलखिन- "एम्हुरका काज तँ डोरियाएले अछि मुदा......?"

"बड़बढ़ियाँ? कहि सुन्दरकाका आगू बढ़ि रघुरन्दन लग पहुँच गोड़ लागि ठोर पटपटबैत फुसुर-फुसुर कहलखिन- "जिनगी भरि संगे रहलौं तँए जँ किछु ऊँच-नीच भऽ गेल हुअए ते बिसरि जाएब।" कहि सुभद्रा दिस देख मुस्किया कऽ कहलखिन- "भौजी।"

सुन्दरकाकाक बोली सुनि सुभद्रा आँखि मिलबैत कहलखिन- "बच्चा।"

सुभद्राक मुहेँ "बच्चा" सुनि सुन्दरकाका चोट्टे अंगनासँ निकलि देवनन्दन लग आबि कहलखिन- "वाउ देव, दुनू भाँइमे तीनिये मासक जेठाइ-छोटाइ अछि। बच्चेसँ दुनू भाँइ संगे बितेलौं। सभ ओरियान तँ देख रहल छी मुदा भजनियाँ सभ कहाँ अछि? मृत्यु सोगे नै खुशियो होइत अछि। खुशी तँ तखन होइत जखन खुशीक काज होएत। भाय-सहाएब अपनो रामायण, महाभारत गबै छलाह। संगे भजनियो-कीर्तनियाँक सेहो सुनै छलाह। आइ जखन दुनियाँ छोड़ि रहलाहेँ तखन पाँचटा भजनो कियए नै संग कऽ दियनि।"

सुन्दरकाकाक विचार सुनि देवनन्दन अवाक् भऽ गेलाह। मने-मन विचारि कहलखिन- "कक्का, सभ बात तँ समाजक बुझैत नै छी तहन ते करियाकाका जेना-जेना करै छथि, से देखै छी।"

देवनन्दनक बात सुनि सुन्दरकाकाक मनमे एलनि जे भरिसक किसुनलालकेँ नजरिमे नै एलै। मन लहरए लगलनि। जोरसँ तँ नै मुदा आस्तेसँ बजलाह- "सुआइत लोक ओकरा कन्हा कहै छै। जेम्हरे देखत ओम्हरे बरिसत।" टाटक अढ़सँ किसुनलालो सुन्दरकाकाक बात सुनलनि। मुदा किछु टोक-टाक

नै केलनि। भजनियाकेँ बजबैले सुन्दरकाका विदा होइत जोरसँ बजलाह- ‘‘किसुन, भजनिया ऐठाम जाइ छी ताबे ऐठामक ओरियान करह।’’

किछु दूर आगू बढ़लापर मन पड़लनि कि घुरि गेलाह। सुन्दरभायकेँ घुमैत देख किसुनलालकेँ भेलनि जे भरिसक किछु गंजन बाकी रहि गेल से करैले घुमलाह। डोलैत छातीकेँ असथिर केलनि। मुदा भऽ गेल उन्टा। जहिना किसुनलाक मन गंजन सुनैले मन्हुआएल तहिना सुन्दरोभाइक किसुनलालसँ पूछैले मन्हुआएल। लगमे आबि पुछलखिन- ‘‘किसुन, समरथाइमे तँ साज-बाज बला भजन-किर्तन सुनै छलौं मुदा आब तँ मने-मन गबै छी। अखन के सभ गबैया अछि?’’

अपन पुछब सुनि किसुनलाल उत्तेजित भऽ कहलखिन- ‘‘आब की कोनो कमी छै। एते दिन ढोल-पीपहीपर जीबछभाय गबै छलाह। गुणापर छीतन आ रंगलाल सिंगा बजबै छलाह। तीनूकेँ भाय-सहाएबसँ अपेछा छलनि। तीनू जीबते अछि, तँए तीनू गोटेकेँ कहि देब आवश्यक अछि।’’

दुनू गोटे गप-सप्प करिते रहथि कि बाँस-टेंगारी रखि लेलहा आबि बाजल- ‘‘कक्का, एकबेरक खिस्सा कहै छी। भैयाक वियाह रहनि। बाउ हमरा लोकनियाँ जाइले कहलक। अपन मन बरियाती जाइक नै रहए। किएक ते रजकुमराक वियाह रहए। बच्चे रही। बिनु कहनहि बरिआतीक पछोर लागि गेलौं। अखुनका जकाँ गाड़ी-सवारी थोड़ै रहै जे उताड़ि दैत। घरवारी ऐठाम पहुँचलापर हमरो गिनती भऽ गेल। भुजल बदाम आ चूड़ा जलखै देलक। लूँगी मिरचाइ तेहेन कड़ू रहै जे ओइ लाटमे खूब खेलौं। रातियोमे खूब खेलौं। गद्पर गद् भऽ गेल। अफरि गेलौं। मन हुअए जे खूब फलिगर बिछान होइत तँ ओंघरा-ओंघरा सुतितौं। दलान छोट रहए। चेतन सभकेँ ते दलानपर अँटाबेश भऽ गेलै मुदा बच्चा सभकेँ जगहे नै भेलै। पछाति घरवारी मालक घरसँ मालकेँ निकालि बहरामे बान्हि देलक आ ओइमे पुआर पसारि बिछान कऽ देलक। ओछाइन देख मन खुशी भेल। एक कातमे पहिने जा कऽ जगह पकड़ि लेलौं। कत्तू रातिमे घरबारी छौंड़ा सभ आबि टीकमे चिड़चिड़ी आ देहमे कबछुआ पत्ता रगड़ि देलक। लगबै काल नै बुझलिऐ मुदा जखन चुलचुलाए

लगल कि नीन टुटल। बोरामे कसल धान जकाँ पेट रहए। कुरियबैबला हाथ दुइयेटा रहए, आ कुरियाए सगरे देह। उठि कऽ ठाढ़ भऽ निच्चाँसँ उपर कुरियाबए लगलौं कि माथपर हाथ पड़ल। दुनू हाथ देलिऐ कि सौंसे माथ मानी-चानी सुपारी जकाँ बुझि पड़ल। टोबैत-टोबैत ओंगरी टीकपर गेल कि मौगीक खोपा जकाँ बुझि पड़ल। एक भागसँ चिड़चिड़ी टीकमे छोड़बी तँ दोसर दिस पकड़ि लिअए। एम्हर सौंसे देहो चुलचुलाइत रहए। तइपर सँ हुअए जे पेट फुटि जाएत! महा-मोसकिलमे पड़ि गेलौं। तामस उठि गेल। दुनू कान पकड़ि सप्पत खेलौं जे बरियाती नै जाएब। मुदा फेर मनमे आएल जे अगर हम नै ककरो बरियाती जेबै तँ हमरा के जाएत? जँ बरियाती नै जाएत ते वियाह केना हएत? कोनो कि ककरो फुसला कऽ मंदिरमे जा कऽ लेब आ पछाति पनचैतीमे लाठी खाएब। बिनु बरियातिये वियाह केहन हएत? वियाहक गवाह के हएत? कहियो कोनो भगड़ा हएत तँ पनचैती के करत। एक तँ सगरे देह नोचैत तइपर सँ वियाह मन पड़ि गेल। वियाह मन पड़िते मनमे उपकल जे जाबे दुख नै काटब ताबे बोहूक सुख केना हएत?''

मुस्की दैत करियाकाका कहलखिन- ''तोहूँ सभ दिनक ढहलेले-बकलेल रहि गेलँ। भैयाकँ की कहै छहुन से ने कहबहुन?''

करियाकाकाक बात सुनि लेलहाक मन नोचनीसँ हटि भाइक वियाहपर पहुँचल बाजल- ''जखन बाउ कहलक जे लोकनियाँ जैहें, तखनेसँ आँगी-पेन्ट साफ करैक मन भेल गामपर तँ फटलौ-पुरान आ मैलो-कुचैल पीहिन लै छी। बरियातीमे ते छौड़ी सभ पीहकारिये मारत। उसराहा परतीपर सँ उस आनि माएकँ कहलिऐ खूब नीक जकाँ उसैन दइले। जखन उसैन देलक आ सरेलै ते पोखरिक घाटपर जा कऽ खूब उज्जर कए कऽ खीचिलौं। दू ठीमन अंगा फाटल रहए। माएकँ सी दइले कहलिऐ। काकीसँ सुइयाँ आनि पुरना साड़ीक पाढ़िसँ डोरा निकालि सी देलक।''

काजक धुमसाही देख करियाकाका कहलखिन- ''अखन कते पछुआएल छह सेहो बुझै छहक। जे कहैक छह से झब दे कहुन?''

लेलहा- ''हँ ते काका, वियाहसँ दू दिन पहिने रघुनीकाका आबि बाउकेँ कहलखिन जे जेहने बेटा-बेटी धनिकक तेहने तँ गरीबोक। माए-बाप तँ माइये-बाप होइत। सबहक हृदए तँ भगवान एक्के रंग बनौने छथिन। बेटा-बेटीक वियाहमे तँ सभकेँ एक्के रंग मनोरथ होइत अछि। गामेमे सिंगहरिया बाजा अछि। एकटा सोहनगर बजो भऽ जेतह आ ओहो बेचारा -रंगलाल- समाजक संग खेबो करत आ हँसि-बाजि कऽ बिताइयो लेत। काकाक बात सुनि बाबू कहलकनि- ''ओ-सिंगाबला तँ रुपैइयो लेत, से कतएसँ देबै। तइपर रघुनन्दनकाका कहलखिन- ''हमरा संगे चलह। कहि देबै जे समाजक काज छिये तँए नै पान तँ पानक डंटियो लऽ कऽ काज सम्हारि दहक। रुपैया नै ने हेतह मुदा खाइले ते देतह। सएह भेलै। दुआर लगैसँ पहिने, रस्तेमे हमरा कहि देलक जे बौआ, नाच देखा देबौ। तूँ हमरे लग रहिहँ। जखन बर दुआर लागल आकि सौंसे गामक बुढ़िया-सुढ़िया सभ चंगेड़ामे चरि-मुँहा दियारी बारने भैया लग गीत गबैत रहए। जते ढेरबा आ समरथकी सभ रहै ओ पाछूमे हाँ-हाँ, हीं-हीं करैत रहए। चुपेचाप रंगलालकाका बीचमे सन्हिया गेलखिन। हमहूँ पाछू-पाछू गेलौं। अन्हार रहबे करै कि एके-बेर खूब जोरसँ सिंगा फूँकि देलखिन। तते जोरसँ अबाज भेलै जे सभटा पड़ाएल। एक्केबेर जे पड़ाएल आकि ऍंड़ी-दौड़ी लगलै। एकटा खसल कि ओइपर भेड़ी जकाँ खसए लगल। जहिना अन्नक ढेरी लगबै काल पथिया-पथिये उपरसँ देल जाइ छै, तहिना। हमहूँ बीचमे पड़ि गेलौं...;

ठाहाका मारि पुनः बाजल- ''काका की कहब? दसटा सँ बेसिये ढेरबासँ अधबेसू धरि तरोमे रहै आ उपरोमे। तते भारी लगै जे कनैए लगलौं।''

मुस्की दैत करियाकाका- ''धुर बूड़ि, एहने पुरुख।''

''ताबे ते बच्चे रही किने...

मुस्की दैत- ''से कि कोनो हमहींटा कनैत रही आकि तरमे पड़ल सभ कनैत रहए।''

''आ उपरका?''

‘‘ओ सभ ते खिखिर जकाँ हँसैत रहए। तँए काका, ओहो बेचारा आब चौथापनेमे अछि। आब ते नवका-नवका बम्बैया बजन्त्री सभ भऽ गेल ओकरो कहि देबै कक्का।’’

सुन्दरकाका मूड़ी डोलबैत बजलाह- ‘‘अच्छा, तूँ सभ एम्हुरका काज सम्हारह, हम ओम्हर जाइ छी।’’

सुन्दरकाका बिदा भेलाह आकि करियोकाकाकेँ मन पड़लनि। बाजलाह- ‘‘भाय, कने सुनि लिअ। एक गोटे छुटि जाएत!’’

‘‘के?’’

‘‘छीतनभाय। एक दिनक बात मन पड़ल। अगहन मास रहए। धुरझाड़ धन कटनी चलैत रहए। एक्के ठीन हमहूँ रही आ भइयो रहथि। हुनका जन रहनि हम अपने कटैत रही। करीब-बारह-एक बजे छिऐ। दुनू परानी छीतनभाय सुगर हहकारने खसलाहा खेतमे चरैले छोड़ि गुना नेने भाय-सहाएब लग पहुँचलथि। काटल धान जे पसरल रहै ओइपर दुनू परानी बैस गुना टुनटनबए लागल। भैया कहलनि- बटु, तमाकुल खाए लाए। एलौं। खूब बढ़िया जकाँ तमाकुल चुनेलौं। दुनू भाँइयो खेलौं आ छीतनोकेँ देलिऐ। छीतन घरवालीकेँ रघुभैया दिस देखबैत कहलक- भाय-सहाएबक धानमे अपनो सबहक साझी अछि किने। पाँचटा गीत सुना दिअनु। दुनू परानी गुनापर गीत गबए लगलाह। से की कहूँ भाय, हुअए जे दुनू गोटेकेँ हाथसँ उठा माथपर लऽ ली। ओहन सिनेहसँ कहियो नै सुनने छलौं, जेहन सुनलौं। राजा भरथरी आ पिंगलाक गीत गौने रहए। बेचारा जीबते अछि। ओहू बेचाराकेँ कहि देबै।’’

‘‘बड़वढ़िया’’ कहि सुन्दरकाका आगू बढ़लाह। जीबछक घर पहिने पड़ैत रहए। जीबछक ऐठाम पहुँच जीबछकेँ कहलखिन- ‘‘भाय, रघू-भैया दुनियाँ छोड़ि देलनि। अपन बाजाक संग चलह।’’

सुन्दरकाकाक बात सुनि घरवालीकेँ सोर पाड़ि जीबछ कहलक- ‘‘गिरहत बौआ मरि गेलखिन। छौड़ा सभकेँ सोर पाड़ियौ। सभ बापूत जाएब।’’

बेटा-भातिजकेँ बजबए मुनियाँ विदा भेल। सुन्दरकाकाकेँ जीबछ कहए लगलनि- ‘‘भाय, एक दिनक गप कहै छी। माध मास रहए। शीतलहरी लागल रहए।

जहिना दिन तहिना राति। दिनोमे नै खेने रही। जाड़े बुझि पड़ए जे मरि जाएब। घुरले जरनो सठि गेल। की डाहब से रहबे ने करए। बिछानमे पुआर देने रहिऐ, बस ओतबे रहए। मन हुअए जे ओकरे जरा ली फेर हुअए जे जखैन आगि मिझा जाएत तखन सुतब कतऽ। भुखे मन सेहो छटपटाइत रहए। दुनू परानी गिरहत बौआ ऐठीन गेलौं। रघुनन्दन बौआ करसीक बड़का घुर मालक घरमे लगौने रहथि। अपनो बैसल रहथि। हिनका लग पहुँचैक डेगे ने उठए। जी-जॉति कऽ खरीहानेसँ सोर पाड़लियनि। घुरे लगसँ कहलनि एम्हरे आबह। गेलौं। खेबो केलौं आ मालेघरमे घुरे लग बिछान बिछा सुतबो केलौं। जँ कनियो कानमे भनक लागल रहैत तँ अपने आबि जैतौं मुदा अखैन तक नै सुनने छलौं। चलू-चलू पीठेपर चलै छी।''

ढोल-पीपही लऽ जीबछ, गुना लऽ छीतन आ सिंगा लऽ रंगलाल पहुँच, अपन-अपन बाजा बजबए लगल। जहिना बेटीक वियाहमे सोहनगर गीत गाओल जाइत, तहिना बाजाक मुँहसँ निकलए लगल। घरे-अंगना नै गामक वातावरण महमह करए लगल। बाजाक धुनपर कियो घुनघुना-घुनघुना गीत गबैत तँ धिया-पूता नचैत। बूढ़-बुढ़ानुस मने-मन रघुनन्दनकेँ स्मरण करैत तँ टूटैट संबंध परिवारक गार्जन सभ देखैत।

धड़फड़ाएल फोचभाय आबि देवनन्दनकेँ कहलखिन- ''डॉक्टर सहाएब सभ किछु तँ ओरियान देखै छी मुदा सरर आ घी कहाँ अछि?''

फोचभाइक बात सुनि देवनन्दन उत्तर देलखिन- ''करियाकाका, सुन्दरकाका सभ ओरियान कऽ रहल छथि। हुनके उपर सभ भार छन्हि। बजा कऽ पुछि लियनु।''

एकाएकी करियाकाका, सुन्दरकाका, लेलहा, बचनू देवनन्दन लग एला। करियाकाकाकेँ अबिते फोचभाय पुछलखिन- ''कारी-भाय, सभ काज तँ समटाएले बुझि पड़ैए मुदा घी आ सरर, नै देखै छी यौ?।''

फोचभाय पाही जमीन्दारक मुँहलगुआ। ओना ने आब जमीन्दारी अछि आ ने जमीन्दार। मुदा एक साए पाँच बर्खक ढीलाबाबू जीबते छथि। खेत-पथार तँ कमि गेलनि मुदा दरबारी चालि छन्हिहेँ। अखनो भाँग पीसै, पान लगबै, मालिश करै, संगे टहलै आ भानस करैले नोकर रखनहि छथि। वएह संगे टहलैबला फोचभाय।

फोचभाइक गप्प सुनि करियाकाकाक मन नाचए लगलनि। सुन्दरकाका मने-मन खुश जे भने हमरा नै पुछलनि। करियाकाका मनमे अबए लगलनि जे आँखिक सोझमे देखै छी जे कियो लहासकेँ धारमे फेकैत अछि तँ कियो धारक कातमे गाड़ैत अछि। कियो आमक लकड़ीसँ जरबैत अछि तँ कियो बगुरसँ। कियो संठी-गोइठासँ जरबैत अछि तँ कियो मुँहमे आगि छुबा गाड़ैत अछि। तइठाम सरर आ घीक कोन जरुरत अछि।

फोचभाइक बात सुनि बचनू बाजल- ‘‘फोच काका, अपन कएल काज कहै छी। नानी मरि गेलि। ओना मरैसँ तीन दिन पहिनेसँ दुनू माय-पूत ओतै रही। आँखिक देखल नानाक गाछी अछि। जै साल अपन गाछी नै फड़ै छलए। तइसाल चलि जाय छलौं। खूब मारि-धुसि कऽ डेढ़ मास खाइ छलौं। तेसर साल जे कोसी नाश केलक ओइमे मामाकेँ के कहे जे इलाकाक गाछी-कलम, बँसबारि उपटि गेल। अंगनाक सभ नानीकेँ मुइने कनैत रहए आ मामा जरबैक लकड़ीले कनैत रहथि। कानब दू रंग बुझि पड़ल। जहिना एक धुनक गीत भिन्न-भिन्न गबैयाक मुहेँ एक्के स्वरमे गाओल जाइत। तहिना तँ मरैयोक अछि। मामाक कानब सुनि लगमे जाए पुछलियनि। तँ कहलनि जे भागिन माए मरि गेलीह तेकर दुख नै अछि। दुख तँ तखन ने होइत अछि जखन माए-बापकेँ अछैत बेटा-बेटी मरैत। मुदा अपन जे पूबरिया गाछी छलै ओ माइये-बाबूक रोपल छलनि। बाल-बच्चा जकाँ दुनू गोटे सेवा कऽ लगौने रहथि। उत्तरबारि भाग एक-पाँति सरही आम लगौने रहथि आ सौंसे कलम कलमी रहए। मुदा सरही तँ सरहीये रहए। एकदम बड़बड़ीया। कनियेँ-कनियेँटा आम होय। तहूमे गोटे-गोटे मीठ होय नै तँ सभ खट्टे। मुदा कलमीक चुनल रहनि। अगते रोहणिसँ गुलाबखास आ डोमाबम्बै पकऽ लगए। जाबे सठबो ने करए ताबे

कृष्णभोग, लड्डूबा पाकब शुरु भऽ जाए। पीठेपर मालदह पकए लगैत। मालदह सधबो ने करै कि कलकतिया पकए लगैत। पाल परक कलकतियासँ सभ साल आद्रा पावनि हुअए। कलकतिया सठिते फैजली, मोहर, ठाकुर आ राइर पकए लगए। ऐ हिसाबकेँ देख पुछलियनि ते कहलनि जे बौआ सभ रंग आमक जरुरत होइत अछि। जखन जारैनिक जरुरत हेतह ते कलमीक डारि कटैमे मात्सर्य लगतह। मुदा सरहीमे से नै हेतह। हँ सरहियोमे तखन हेतह जखन कलमिये सन नम्हरो आ सुअदगरो रहतह। जरनाक जरुरत चुल्हियो आ मुरदो डाहैमे हेतह। केबल जरबैयेक काजटा तँ नै अछि। मुइलाक बाद गाछोक उत्सर्ग होइत अछि। तै लेल तँ बड़बड़िये नीक अछि। काटि कऽ जरबैक बात तँ जँचल मुदा उत्सर्ग नै जँचल। हुनकर लगाओल छलनि। अपना विचारसँ लगौलनि। कोसीक बिकराल बाढ़िसँ पहिने नाना मरल रहथि तँए हुनका सुकाठ माने सरही आमक लकड़ीसँ जराओल गेलनि। एक-एकटा गाछ पुरहितो-पात्रकेँ देलियनि। हुनका तँ सोलहो आना गाछी रोपैक फल भेट गेलनि। मुदा माएकेँ केना जराएब आ की दान देबै। मामाक बात सुनि दुखो भेल आ तामसो उठल। जखन छल तखन भोगलौं। अखन नइए तँ कानब कियए? कहलियनि- ''मामा जँ कनलासँ दुख भगितै आ सुख भेटितै ते एहिना ई दुनियाँ रहितै? अनेरे अंगनामे रखने छी आ कनै छी। चलू, हमरा सभ लूरि अछि। खाधि खुनि गोरहोसँ जरबैक लूरि अछि आ सनठियो-मनेजरसँ, सुकाठोसँ जरबैक लूरि अछि आ कुकाठोसँ। अगबे बाँसो-कड़चीसँ।''

बचनूक बात सुनि सभ ठमकलाह मुदा फोचभायकेँ तामस चढ़ि गेलनि। दाँत पीसैत बजलाह- ''साओनमे जनमल गीदर भादबमे आएल बाढ़ि तँ कहलक जे एहेन बाढ़ि देखबे ने केलौं। देखैत-देखैत दाँत-पोन झड़ि गेल हमर आ सिखबै छँए तूँ।''

करियाकाका सुन्दरकाका दिस तकलनि। सुन्दरकाका पहिनेसँ करियाकाका दिस देखैत रहथि। दुनू गोटेकेँ फोचभाय दिससँ नजरि हटल देख लेलहा फोचभायकेँ चोहटैत बाजल- ''फोचभैया, अहाँकेँ ओतबे काल धरि भैया कहब जते काल अहूँ भाए बुझब। अहाँक देहमे हजार रुपैयाक कपड़ा, हजार रुपैया

घड़ी आ दस हजारक मोवाइल अछि। मुदा हमरो दिस देखू। रघूकाका आ देवभायसँ हमरो ओते अपेछा अछि जते अहाँकेँ अछि। अहाँ कहने हम पड़ा जाएब से बात नै। अंतिम संस्कार कइये कऽ जाएब। ने काज अहाँ परिवारक छी आ ने हमरा परिवारक। काज करए ऐठाम एलौंहेँ घरवारी जना आदेश देताह तना कऽ देबनि। अहाँकेँ फुचफुचेने की हएत?''

लेलहाक बात सुनि फोचभाय सहमलाह। भाषा बदलैत बजलाह- ''एँह, खिशिया गेलह लेलहू। दस गोटे जखने एकठाम बैसलौं तखने दस रंगक गप चलत। तै लेल एते बिगड़बाक कोन काज अछि। एहेन-एहेन छोट-छीन गपक लेल समाज टूटि जाइ छै। जहिना सभ एकठाम रहैत एलौंहेँ तहिना आगूओ रहब की ने।''

वातावरण ठंढ़ाइत देख सुन्दरकाका दरबज्जासँ उठि जीबछ लग पहुँच, कहलखिन- ''बटगवनीक समए आएल जाइत अछि। धियान राखब।'' कहि दरबज्जापर आबि करियाकाकाकेँ कहलखिन- ''किसुन, अखन बैसैक समए नै अछि। बैसलासँ काज पछुआएत।''

''हँ-हँ, से तँ ठीके'' कहैत करियाकाका उठि गेलाह। करियाकाकाकेँ उठिते एका-एकी कतेक गोटे उठि गेलाह। मने-मन फोचभाय जरल जाइत रहथि। ठोर पटपटबैत बजलाह- ''जकरा जे मन फुड़ै छै से करैए। ने बजैक ठेकान आ ने बाप-दादाक कएल काजक।''

दरबज्जापर सँ उठि फोचभाय आंगन दिस टहलि गेलाह। मनमे अन्हर उठल रहनि। भेल काज -जना चचरी बनाएब- सभपर नजरि-गड़ा-गड़ा देखए लगलथि जे कतऽ की गल्ती अछि। मुदा नजरि गल्तीक जड़िपर जाइते ने रहनि। जँ से जइतनि तँ इहो बात बुझितथि जे ''गल्ती, ओहन व्यवस्था पैदा करैत अछि जे चलनिमे रहैत अछि नै कि आगूक बेबस्थामे। दरबज्जाक डेढ़ियापर चंचल चचरी बनबैत रहए आ बौकू साबेक जौर बँटैत रहए। आँखि गुड़रि फोचभाय चचरीक लम्बाई-चौड़ाइ देखए लगलथि। फट्ठा बैसबैत चंचल मुस्की दैत कहलकनि- ''नजरि नै लगा देबै, भैया?''

चंचलक मुस्की फोचभाइक छातीमे महुराएल तीर जकाँ लगलनि। किछु बोकरए चाहलथि आकि तखने उत्तरबारि टोलमे जोरसँ हल्ला होइत सुनलखिन। जत्तए जे कियो रहथि कान ठाढ़ कए सुनए लगलथि। हल्लाक कारण रहै अढ़ूलिया-आपराजितक झगड़ा।

रधुनन्दनक दियादक भगिनमान मनोहरक परिवार। तीन पुस्तसँ मनोहर ऐ गाममे। बाब्बे आबि सासुरमे बसल रहनि। मुदा जे मनोहरो परिवारक छिऐ ओहो दियादे जकाँ काज-उद्यममे संग-साथ दैत। पैछला हाट लौफामे मनोहर बीस हजारमे गाए बेचलक। ओइसँ नीक बगलेक गाममे तीस हजारमे टोहिया गेलै। पनरह दिनक समए बना रुपैयाक ओरियान करए लगल। हिसाब जोड़ने जे बीस हजारमे गाए बिकाएल बच्छोक पोसिनदार कहलक जे दुनू बच्छा बेच हमहूँ गाइये पोसब। बच्छा पोसब तँ ओइ पोसिनदारक लेल अछि जे खेतीयो करैत हुअए। जहिना सभ दिन, नवका कारमे बैसनिहारकेँ आनन्द होइत तहिना नव बड़द जोतिहार हरबाहकेँ। ने गियर बदलैक काज आ ने स्पीड कम बेसी करैक। रहबो कियए करतै, अपन-अपन खेतक यात्रा बीचमे कतौ दू-बट्टी-तीन-बट्टी नै पड़ैत। जै चालिमे जोतए चाहब ओइ चालिमे हर लाधि दियौ। एक्केबेर खोलै बेरमे लदहा छिटकबैक काज। बेचारा पोसिनिहारकेँ खेती नै छै। छोट पूँजीकेँ पैघ बनबैक काज कऽ रहल अछि। मुदा ओही बेचाराकेँ की दोख देबै, जैतै तँ पछिले हाट मुदा बीमारीक चक्करमे तेना पड़ल अछि जे दुनू बच्छो हलि गेलै। बेचाराक बड़ सुन्दर विचार छै। अपन ढेनुआर गाए (उत्पादित पूँजी) भऽ जेतैक। समैक फेर देख मनोहर बीसो हजार रुपैया देवालमे तख्ता देल आलमारीक ग्रन्थमे रखि देलक। खुल्ला रैक। रैकपर सिर्फ भागवत, देवी भागवत, सुखसागर, योगवशिष्ट, कबीर मन्सुर, बाइबिल, कुरान आ कृष्ण-उद्धव संवाद धरि। कृष्ण-उद्धव संवादमे बीसो हजारीक नोट पन्नामे दऽ दऽ सैंत कऽ राखल। काल्हि दिनमे सोहन आबि मनोहर माएकेँ कहि कृष्ण-उद्धव संवाद लऽ गेल। ग्रन्थ उनटा कऽ देखैक काजे नै। अविश्वासक कतौ गंधे नै। साँझमे जखन मनोहर लालटेन लेसि ग्रन्थ निकालैले

गेल तँ कृष्ण-उद्धव संवाद नै देखलक। मनमे शंका भेलै। मुदा चोरीक शंका नै भेलै। लगातार दुनू गोटेक बीच पोथीक लेन-देन होइत। माएकँ पुछलक- ''माए, सोहनभाय किताबो लऽ गेल छथि।''
''हँ।''
''किछु पोथीमे छेलैहियो?''
''खोलि कऽ कहाँ देखिलिऐ।''
मनोहर गुम्म भऽ गेल। मनमे एलै, अखने जा कऽ बुझि ली। फेर दोसर मन कहलकै- ''पाइयक मामलामे रातिकँ नै जाएब, नीक। आगूमे लालटेन रखि बैस गेल। मुदा मनकँ अन्हार दाबए लगलै। सोग बढ़ए लगलै। माएकँ कहलक- ''माए, मन नीक नै लगैए। नै खाएब।''
जोर करैसँ पहिने माइयक मनमे आएल भोजन तँ नीक मनक छिऐ। अधला मनक तँ ओ.......। सोचि पुतोहू-अढ़ूलियाकँ कहलनि- ''कनियाँ, बौऔक मन दबे छै हमरो -बेटे दुखसँ दुख जनमैत- खाइक मन नै होइए।''
मुदा पुरनकी पुतोहू थोड़े नवकी पुतोहूकँ झझकारि कऽ उत्तर देलकनि- ''चुल्हि लगमे जखन अधपक्कू भऽ गेलौं। तखन हिनकर मन खराब भेलनि। होइताए हमरा तँ भऽ गेलनि हिनके। एक ताव लगतै तरकारियो भइये गेल। रोटी पहिने पका नेने छलौं। खहिहथि भोरे। तखन मन नीक हेतनि।''
मुदा फेर बेचारीक मनमे पत्नी आ पुतोहूक रुप आबि बैस गेलनि। जिनकाले भानस केलौं से जखन खेबे ने करताह तँ हमहीं.....। ओहिना झाँपि कऽ सभ किछु रखि देबै।
सबेरे जखने मनोहर सुनलनि। जे रघुनीभैया मरि गेलाह। तखने आबि दरबज्जापर मूड़ी झुका कातमे बैस गेल। सभकँ होइत जे गाममे सभसँ बेसी दुख मनोहरे कँ भऽ रहल छै। असीम दुख। सेर-समांग दुनूक। माइयो माछूसँ गेलखिन। खाली आंगन देख अढ़ूलियाकँ भुखे नै रहल गेलनि। बेचारी चारिटा रोटी आ घेराक भुजिया लऽ खाए लगलीह। तै काल अपराजित आबि अढ़ूलियाकँ डेढ़ियेपर सँ चिकरल- ''कनियाँ, काकी गेलखिन।''

मुँहमे घेरा-रोटी चिबबैत अढ़ूलिया बाजलि। मुँह भारी देख अपराजित ससरि कऽ आंगन आबि गेलीह तँ देखलनि जे बीचे दुआरिपर केबाड़ लग बैस हाँइ-हाँइ खाइत अछि। जहिना करियाभेम्ह कटलासँ एक्केबेर सनसना कऽ बीख चढ़ि जाइत, तहिना अपराजितकेँ चढ़ि गेल। मुदा निधोखसँ अढ़ूलिया चपा-चैप चपने जाइत। जत्ते अढ़ूलियाक मुँह चलै तत्ते अपराजितकेँ तरसँ खौंत चढ़ैत। अढ़ूलिया बुझि गेल जे जँ कहीं सरेरा माने हल्ला केलनि तँ सीनेपर पकड़ा जाएब से नै तँ जाबे मुँह खोलथि-खोलथि ताबे थारी अखारि कऽ रखि देबै। वरदाससँ बहार होइते झपटैत अपराजित बाजलि- ‘‘आइँ गे निरविचारी तोरा कोनो गत्तरमे लाज छौ की नै?’’

अखन धरि अढ़ूलिया मुँह नै खोललक। थारी माँजि अँठि फेर हाथ धोइ लोटा रखि उत्तर देलक- ‘‘हिनका बड़ लाज छन्हि। जे झूठ-मूठ कऽ बझा कऽ अलबट जोड़ै छथि। हमरे नै कोनो गत्तरमे लाज अछि। बूढ़ भऽ कऽ ई झूठ बजै छथि से बड़बढ़िया, हम बड़ निरलज्जी।’’

‘‘अइँ गे तोरा एतबो ने विचार छौ जे जाबे अँगनासँ लहास नै उठलै ताबे मुँहमे अन्न कियए देलौं। पहिने अंगना-घर करितेँ तखन ने भानस-भात करितेँ।’’

‘‘हिनका दियादी छन्हि आकि हमरा। हम भगिनमान छी। लोकक सहोदरो भाए अनतए रहने बिरान भऽ जाइ छै आ दूरोक लोक लगमे रहने अप्पन भऽ जाइ छै। हमरा कोन अंगना-घर करैक काज अछि।’’

अढ़ूलियाक बात अपराजितकेँ बेसम्हार कऽ देलक। बाजलि- ‘‘जेहने कुल-खुट रहतौ तेहने ने वुधियो हेतौ?’’

कुल-खनदानक उपराग बुझि अढ़ूलिया बेसम्हार भऽ बाजलि- ‘‘यएह जँ बड़ नीक कुल-खनदानक छथि तँ कहाँ भेलनि जे मनुक्ख जकाँ चुपचाप लगमे अबितथि। खाति देखितथि तँ पुइछ लितथि जे कनियाँ एना कियए करै छी। रातिमे नै खेने रही से बुझैक काज हिनका नै भेलनि मुदा छुछे उपदेश दइले चलि एलौं। अपन काज आँखि-मूनि कऽ करैत रहितथि, हमरा टोकैक जरुरत कियए भेलनि।’’

मुदा अपराजितो अपने सीमामे रहथि तँए बोलीमे गरमी रहबे करनि। अधो बात अढूलियाक नै सुनलनि, अपने बजैमे बेताल रहथि। मुदा मनमे शंका उठलनि जे हो-न-हो अखन एकरे अंगनामे छिऐ, कोनो दोखे लगा दिअए। रसे-रसे पाछू मुहेँ डेगो उठबैत आ दूरीक हिसाबसँ बोलियोमे जोर दैत। मुदा भऽ गेलै केनादन। एक्के-दुइये टोलक धियो-पूता सहटि-सहटि आबए लगल। तहिना जनि-जाइतियोक ढबाहि लागि गेल। चिपड़ी पाथैत महिनाथपुरवाली गोबराएले हाथे पहुँचलीह। तहिना फुल तोड़ए जाइत नवानीवाली फुलडाली नेनहि पहुँचलीह। सभसँ कमाल ननौरवाली केलनि। खाइले बेटा कनैत रहै ओकरा आरो चारि थापर उपरसँ लगा फनकैत पहुँचलीह। तहिना लखनौरवाली खिसिया कऽ बेटाक आगूमे भात-दालिक बरतने रखि, अपनाकेँ पछुआइत बुझि लफड़ल पहुँचलीह। बिचित्र भऽ गेलै। सभ अपने-अपने फुड़ने अपन-अपन बिरोधीकेँ चिक्कारी दऽ दऽ गरियबैत। केयो ककरो बात सुनैले तैयार नै। मुदा बजैत-बजैत मुँह दुखेने कि वुधि जगने आस्ते-आस्ते हल्ला कम हुअए लगलै। कम होइत-होइत हल्ला सोलहन्नी शान्त भऽ गेल। मुदा तरे-तर केना नै कौना दू पाटी बनि शब्दवाणक तैयारी करए लागलि। मुदा खलीफा किम्हरहुँ नै। अखन धरि पूवारिपारवाली दादी आ पछबारिपारवाली दादीकेँ सभ अपन-अपन अगुआ बुझैत। अगुआइ करैक वुइधो छन्हि। मुदा पूवारिपारवाली ऐ दुआरे नै पहुँचलीह जे चारिमे दिनसँ दुखित छथि। आइ एकादशी केना छोड़ितथि। बिछानसँ उठैक होश नै। तहिना पछबारिपारवाली अपना घरबलाकेँ डेढ़ बीघा जमीनक जिनगी बुझा दुनू परानी अपनो मालक गोबर आ बेरु पहर एकबेर चारागाह जा एक छिट्टा आरो लऽ अनैत। सएह अनैले गेल रहए। जइसँ गामक किछु गोटे कुट्टी-चालि करैत। मुदा दादियो पाछू घुरि कऽ देखैवाली नै। जखने कनियो भनक लगि जानि जे फलनी-चिनली बाजल तँ अंगना पहुँच उपराग दऽ अबैत। आब कहाँ कियो गोबरबिछनी कहै छै।

आंगनसँ टहलैत आबि फोचभाय चचरी लग पहुँच आँखि दौड़ा-दौड़ा नाप-जोख करए लगलाह। मुदा काज अधखड्डुए तँए गरे ने अँटनि। काजक दुनियाँमे

अपन अँटाबेश नै देख वाद-विवादक दुनियाँमे पहुँच बतहूकेँ पुछलखिन- ‘‘कतेटा चचरी बनत?’’

डोरी फट्टेपर रखि आगूमे ओँगरीक नहसँ चेन्ह दैत बतहू बाजल- ‘‘ऐठीन तक।’’

‘‘झुझुआन बुझि पड़ै छौ।’’

‘‘से की?’’

‘‘साढ़े तीन हाथ तँ सएह भेल। तेकर वाद जँ एक्को बीत आगू-पाछू नै रहत से केहन हएत?’’

फोचभाइक बात सुनि बतहू गुम्म भऽ गेल। कातमे ठाढ़ भऽ लेलहा सभ बात सुनैत। मुदा ऐ आशामे अखन चुप रहै जे जिनकासँ गप करै छथि पहिने हुनकर जबाब ने सुनि लेब। जँ अपने सक्षम वाद-विवाद कऽ सकथि तँ सर्वोत्तम। नै तँ जखन ऐठाम छी तँ ओते दूर धरि केना बतहा भैयाकेँ पाछू हुअए देब। बतहूकेँ चुप देख लेलहा बाजल- ‘‘फोचभैया, अहाँसे अधिक उमेरक बतहाभैया शरीर धुनि रहल छथि, तहिकालमे एतबो नै बुझलिऐ जे जिनका जै काजक लूरि अछि से तइमे सहयोग करथि। तइकालमे अपन कोनो कर्तव्य नै मुदा.......। अखन धरि जिनगीमे कते चचरी बनेलौं आ कते मुरदा जरौलौंहेँ। हँ ई बात जरुर अछि जे गोटि-पंडरा जँ जरौनौ हएब तँ ओहन मुरदा जिनका चचरीक जरुरते नै भेल। पलंगपर उठा असमसान पहुँचै छथि। चचरीक स्कूलमे पढ़लौं हम आ हिसाब बुझि गेलिऐ अहाँ।’’

लेलहाक बात सुनि फोचभाय तिलमिला गेलाह। क्रोधसँ आँखिमे नोर एलनि आकि डरसँ, ई बात लेलहा नै बुझि सकल। अगिला गप सुनैले कान पाथि देलक। मुदा कोनो प्रश्न नै अबैत देख बाजल- ‘‘पचासो ओहन मुरदा डाहने छी आकि गारने छी जेकरा चारि गोटे बदला दू गोटे पथियामे उठा सीक लगा, बाँसक ढाठपर उठा अंगनासँ असमसान लऽ गेल छी। एहेन-एहेन की सभ केने छी से कहैक अखन समए नै अछि। नै तँ......।’’

आँगनसँ पटपटाइत दरबज्जापर आबि देवनन्दनकेँ दुनू हाथ जोड़ि कहलखिन- ‘‘कठियारीक हमरो हाजिरी।’’

“बेस-बेस। गेल जाओ। एतबे की कम छिऐ।”
दरबज्जापर सँ फोचभाय विदा तँ भऽ गेलाह। मुदा मनमे अन्हर-बिहाड़ि उठए लगलनि। आगू मुँहे डेगे ने उठनि। पाछू घुरि बेर-बेर तकथि।

अरथी उठबैक लेल आ कठिआरी जाइ लेल घोल-फचक्का हुअए लगल। जनिजति आ धिया-पूताक झुण्ड बाजाक लोभे आगू- आबि-आबि ठाढ़ भऽ गेल। किछु गोटेक कहब जे अपन पत्नियो धरि असमसान नै जाएत तँ किछु गोटेक कहब जे जिनका बेटा नै रहै छन्हि हुनका तँ पत्निये आगि दै छथि। केना मनाही कएल जाएत! तहिना धिया-पूताक संबंधमे सेहो प्रश्न उठैत जे ई तँ अन्तिम संस्कार कर्म छी जइमे खाधि खुनल जाएत, लकड़ी काटि जराओल जाएत! तइमे धिया-पूता अनेरे जा कऽ की करत। मुदा संस्कारे ने संस्कार पैदा करैत अछि। अरथीक मुँहमे आगि लगाएबो ने संस्कार छी। जेकर जरुरत ककरा नै छै? आजुक धिये-पूते ने काल्हि जुआन बनि करत। तँए ओकरा काजसँ बिमुख करब उचित नै। मुदा काज -मुर्दा जराएब- जतेटा अछि, जते लोकसँ कएल जाएत ततबे लोक ने चाही। फेर एत्ते लोकक काज कोन छै? फेर बाजा-बूजीक कोन काज अछि? काज केबल मुरदे जराएब टा छी आकि बेटी जकाँ एकठामसँ दोसरठाम पहुँचएबो छी। इम्हर बाजा गनगनाइत। रंग-बिरंगक सोहर, रंग-बिरंग दुआरि निकालि, वटगबनीक रिहलसल मने-मन चलैत। जहिना तरे-तर करियाकाकाकेँ तहिना सुन्दरकाकाकेँ छातीक पसीना गोलगलाकेँ भिजबैत। मन घोर-घोर दुनूक। दुनूकेँ अपन मन हारि मानि गेलनि। सहयोगीक जरुरत पड़लनि मुदा सहयोगी के? करियाकाकाक नजरि सुन्दरभायपर आ सुन्दकाकाक नजरि किसुनपर अपन-अपन जगहसँ उठि आँखिक इशारा चौमासक आड़िपर देलनि। आगू-पाछू दुनू गोटे चौमासक आड़ि दिस चारि डेग बढ़ौलनि कि पाछूसँ लेलहा टोकलकनि- “काका कतऽ ससरल जाइ छिऐ। काज अछि ऐठाम आ अहाँ विदा भेलौं बाध दिस? लेलहाक बात दुनू गोटेक करेजकेँ छेद देलकनि। छटपटाइत मन कहलकनि- “तेहेन उफाँटि टोकि देलक जे, कि बिचार हएत की नै। मुदा

दरवारमे जहिना भिखमंगाक बिजकल मन रहैत तहिना दुनू गोटेक रहनि। कठहँसी हँसी-हँसि दुनू गोटे संगहि कहलखिन- ''जमात करे करामात? बौआ। तोहूँ इम्हरे आबह?''

तीनू गोटे चौमासक आड़िपर बैस काजक समीक्षा करए लगलाह। मुदा मुर्दा जराएब आ कठियारी जाएब दू प्रश्न भेल। किछु गोटेकेँ लकड़ी कटैसँ खाधि धरि खुनए पड़त। किछु गोटे ओहिना मूड़ी गोति कऽ शोक मनौताह। सवा पहर मुरदा जरैमे लगै छै तइपर सँ जारन काटै, फाड़ैसँ लऽ कऽ अछिया सजाएब धरि अछि। घरोपर कते खटनी भेल अछि। ओहूना दू घंटा खटलाक बाद किछु खाइ-पीबैक मन होइ छै। बिचेमे लेलहा टपकल- ''ओइ जगहपर खाइक मन हएत?''

सुन्दरलाल- ''धुर बूड़ि, सभ दिन आड़िये-धुर, गाछिये-विरछीमे खाइछेँ से बिसरि गेलही।''

मुँह सकुचबैत लेलहाक मन लेलहाकेँ कहलकै- ''अनेरे बजलौं।''

तीनू गोटे बिचारलनि जे पहिने घरवारी (जे जरबए नै जेती) केँ जनाए दियौन जे कमसँ कम दूबेर चाह आ लोकक हिसाबसँ सुखल जलखै आ पानि पठा दथि। अपने सभ ने बारीक रहब जेकरा जते मेहनत हेतै ओकरा ओते अहगर कऽ देबै। मुदा नै लऽ गेने तँ एकटा आफद हएत जाबे धिया-पूताक पेट भरल रहतै ताबे ने नाचत। जखने पेट कुलकुलेतै कि घर दिस विदा हएत। बिना हाथ-पाएर धोनहि भनसा घर पहुँच जाएत! तँए ओकरो तँ घेर कऽ रखि नचबैक अछि। किछु गोटे एहेन जरुर छथि जे मुँहमे किछु नै लेता। लेबो केना करता। एक जिनगीक ओहन सीमान छी जे सोझाक प्रश्न छी। तँए हटल आकि बाइस-तेबाइसकेँ आनबो उचित नै। सुन्दर काकाक मनमे उठलनि- सीमानक विवाद तँ दू खेत, दू गाम, दू दुनियाँ भऽ जाइत। कियो मृत्युकेँ खुशीसँ छाती लगबैत छथि तँ कियो कानैत-कलपैत। शुभ काज तँ खाइत-पीबैत हएब नीक। मुँहसँ हँसी निकललनि कि तै बीच लेलहाक नजरि मुँहपर पड़लनि। मुस्की देख अपनेपर शंका भेलै जे फेर ने तँ किछु हूसल। मुदा

अहं जगलै बाजल- ‘‘काका, जते अबेर करब ओते अबेर हएत। अबेर भेने कते गोटे बीमार पड़त।’’
तीनू गोटे बाड़ीसँ दरबज्जापर आबि एक्केबेर कहलखिन- ‘‘राम- नाम सत्य छी।’’

आहि रे बा! फेर चचरी लग हुज्जति शुरु भेल। केयो बजैत जे जीबैतमे काकाक उपकारक बदला नै दऽ सकलियनि, तँए उठाएब? किछु गोटेक कहब जे काका की बाबा आकि भैया हमरो माए-बाबूकेँ उठौने रहथि, तँए उठाएब। किछु गोटेक कहब जे बड़ बेरपर रुपैया सम्हारने रहथि तँए अपन कर्ज चुकाएब? आड़िपर गप सुनि लेलहोमे पावर एलै। हुज्जतियाकेँ दुनू हाथे इशारा दैत कहलक- ‘‘सुनै जाइ जउ कान्ही लगा कऽ उठवियनु नै ते एक भग्गु भेने दरद हेतनि।’’
लेलहाक विचार सभ मानि चारि गोटे चचरी उठबए बाबा लग पहुँचल। चचरी लग पहुँचते जना एक्केबेर सबहक मुँह चहा उठल। रघुनन्दन नै रघुनन्दनक अरथी उठि रहल छन्हि। सुभद्रा आँखि, कोसिक ओइ धारा सदृश्य बहए लगलनि जे पहाड़क झरना होइत समतल जमीनपर आबि अनबरत चलैत रहैत अछि।

आंगनसँ निकलिते एक दिस ‘‘राम-नाम सत्य छी? तँ दोसर दिस शहनाइपर बहीनक बिदाइक धुन। यएह तँ सुख-दुखक जगहक दुनियाँ छी। घरक मुहथरिपर एक दिस करियाकाका आ दोसर दिस सुन्दरकाका ढाढ़ भऽ अंतिम प्रणाम कऽ आगू बढ़ौलकनि। तै पाछू देवनन्दक हाथमे आगि दऽ विदा केलनि। तै पाछू बरियाती सजि गेल। सभ बरियातीकेँ निकललाक बाद सुभद्रा आ शीला रुकि गेलीह। समए पाबि करियाकाका शीलाकेँ चाह-जलखै-पानिक बात कहि, रेलगाड़ीक गार्ड जकाँ, पाछू-पाछू चलला। गाछीक माने कलमक कोनपर पहुँचते करियाकाका आ सुन्दरकाकाक खोज हुअए लगल। मूड़ि-उठा देवनन्दनो तकैत। मुदा दुनू गोटे अधे रस्तामे अबैत रहथि। गाछी पहुँचते करियाकाका

आगू बढ़ि ओंगरीसँ इशारा दैत कहलखिन- ''ऐठाम भैया मचान-खोपरी बनबैत रहथि...।

दोसर दिस माने उत्तर-पूरब कोनमे देखबैत- आ ऐठाम बेसी काल बैइसै छलाह। तँए नीक हएत जे बिचेमे दियनि।''

कहि लेलहाकेँ कहलखिन- ''लेलहुँ, चलह। पहिने लकड़ी देखी। करियाकाका, सुन्दरकाका, लेलहा, बचनू, चंचल सभ बढ़ल। इम्हर जीबछो, छीतन आ रंगलाल अपन-अपन जगह टेबि बाजा उठौलक। केवल मालदहक कलम। खाली चारु हत्तापर शीशो, जामुन, गम्हारि लगौने रहथि। एकोटा आमक गाछ सुरेब नै। सभ अष्टावक्र। तहूमे मृत्युक लेल जीबितकेँ बलि देब उचित नै बुझि आमक गाछसँ नजरि हटा लेलनि। गम्हारि दिस नजरि दैते लेलहा बाजल- ''गम्हारि महराज आ जामुन महराज तँ तेहन छथि जे अपना बुते अपनो नै पार लगतनि तँ मरल देह माने मुरदा हिनका बुते जराओल हेतनि। लेलहाक बात सुनि सुन्दरोकाका आ करियोकाका आँखि मिला मुस्की देलनि। मुदा लेलहाक बाजबसँ चंचलकेँ तामस पजरऽ लगलै। खढ़क आगि जकाँ लगले पजरि गेल- ''यौ सुनरकाका, जहिना पनियाह जामुनक लकड़ी होइए तहिना गमहारियोक। ऐसँ नीक आमक हएत। कने रुखो होइए। ऐसँ रुख इलचीक होइ छै। अनेने काजमे कोन भदबा लगौने छी। हैबाए तँ देखै छी दछिनबरिया हत्ता परक शीशो सुखल अछि। मुरदा जरबैले ओहन जारन चाही जेकर धधड़ा कड़गड़ होय।''

सभ कियो दछिनबरिया हत्ता लग पहुँचलाह। दस-पनरहटा शीशो पैछला साल हवाक बीमारीमे सुखि गेल छलैक। तीनिए चारिटा साइजक गाछ नै तँ सभ अनसाइजक। जे जरने भाव बिकाइत। पातर गाछ कटने चारिटा पाँचटा काटए पड़त। से नै तँ ओहन दूटा गाछ काटि लिअ जइसँ सभ काज नीक जकाँ भइयो जाएत आ थोड़-थाड़ डोमोले रहि जेतै। मुदा लेलहाक नजरि तर चलि गेल। बाजल- ''काका, कते लकड़ीसँ मुरदा जरै छै।''

करियाकाकाकेँ सुनल तँ रहनि मुदा लिखल नै पढ़ने रहथि। प्रश्नक जबाबो नै देब उचित नै। भलहिं कहि दिऐ, नै बुझल अछि। मुदा जे काज संगे मिल

एत्ते केने छी तइमे हमहीं सोलहन्नी केना मूर्ख बनि जाइ। फड़कि कऽ कहलखिन- ‘‘अँइ रौ लेलहा, तोहर हम ठकदरुआ छियौ जे एहेन बात पुछलँ। एते मुरदा जे संगे जरौलौं से हम देखलिऐ आ तूँ आँखि मुनने रहँ।’’

करियाकाकाक बात सुनि दोहरी नजरि खसलै। मनमे रहए जे काजक लकड़ी छी, बेसी जराएब उचित नै, जँ जड़ि दिससँ टोनि कऽ लऽ जाय तँ घरक केबाड़ी भऽ जाएत। पहिने टोनि कऽ कलमक सीमा टपा कऽ रखि दिऐ। पछाति लऽ जाएब। से मंगैसँ पहिने करियाकाकाकेँ खिसिया देलकनि। अपन काजक रुखि खराब होइत देख सोचलक जे से नै तँ सझिया कए कऽ बाजी। बाजल- ‘‘कक्का, दुनू भाँइ छी। बहुत लकड़ी अछि। निचका टोनि कऽ केवाड़ बनबैक विचार होइए?’’

मने-मन हिसाब जोड़ि कहलखिन- ‘‘काज जोकर निकालि कऽ सिरौना-पथौना सौंसे रहए दिहक आ उपरका फाड़ि लीहह। ताबे हम अगिला काज देखै छिऐ।’’

कहि कोदारि लऽ अछियाक खाधि नापि खुनैले झोलीकेँ कहलखिन- ‘‘हँसैत झोली बाजल- ‘‘भाय लोकनि सुनि लिअ। हमहूँ बुढ़ाएले जाइ छी मुदा जाबे बाँहिमे दम अछि ताबे समाजक भार -अछिया खुनब- उघैत रहब। एक साए पच्चीसम अपनासँ उमेरगरक अछिया खुनने छी। अपनासँ कम उमेरक खुनैक मौका नै भेटल।’’

कहि अछिया खुनए लगल। तै काल जीबछ शहनाइपर उठौलक- ‘‘मन सुमिरन करले रात-दिना। जगमे कोइ नै अपना।’’

अछिया खुना गेल। शीशोक ओहन मोट लकड़ी सिरहौना-पतौनामे देल गेलनि जते मोटगर ओछाइनपर जिनगीमे कहियो सुतल नै छलाह। एक-एक चेरा चढ़बैत छाती भरि ऊँच चेरा काकाक संग जरैक लेल तैयार भऽ गेल। सुन्दरकाका देवनन्दनकेँ बाँहि पकड़ि, धधकैत उक मुँहमे लगौलनि।

मुँहमे उक पड़िते, बिजलोकाक इजोत जकाँ, सबहक मनमे पहुँच गेलखिन। बाबा, काका, भैया, भाए, बौआ, बच्चा, नूनू इत्यादि हजारो रुप पटेरक फुल

जकाँ उड़ए लगल। जहिना पटेरक एकटा डाँटमे हजारो-लाखो पूर्ण फूल निकलैत तहिना रंग-विरंगक फूल बनि रघुनन्दन मने-मन उड़ए लगलथि।

आंगनसँ अरियाति सुभद्रो आ शीलो रहि गेलीह। शीलाक मनमे चाह, जलखै पठबैक ओरियान करब रहनि। जबकि सुभद्रा सोचथि जे घर-निप्पो सुखाइये गेल अछि। मास दिन केना भीजल रहत। पुतोहूजनीकेँ ओरियाने-बात करैक छन्हि। तइमे नीक जे एक-गिलास पानि छिटि लाभर-जीभर बाढ़निसँ बहारि देबै। आब तँ चारिम दिनसँ सभ दिन घर-अंगना होइते रहत। सएह केलनि। चाह-जलखै लेल गाछियेसँ बौकू आ शीतला चलि आएल। दुनू गोटेकेँ सभ समान दऽ निचेन भेलीह। धिया-पूताक हलहोरिमे आशा सिंगरिया-बाजाबलाक पाछू-पाछू चलि गेलि छलि। ताधरि सुभद्रो आंगन बहारि निचेन भेलीह।
शीला- “माए, कतौ बैस कऽ बुढ़ाक बात कहथु?”
सुभद्रा- “हँ तँ कनियाँ! जइठाम बुढ़ा सुतल छलाह तहीठाम आउ। भने तुलसियोक गाछ बगलेमे अछि।”

दुनू गोटे बैसते छलि कि लोहनावाली दादी हहाएल-फुहाएल पहुँचलीह। लोहनावालीकेँ देख शीला कहलकनि- “आबथु बाबी, अंगने आबथु। अखन तँ अंगनामे दुइये गोरे छी। सभ पाछू-पाछू गेला।”

आंगन घर नीपल नै देख लोहनावालीक मनमे तरे-तरे क्रोधक लहकी-लहकए लगलनि। मुदा क्रोधकेँ दबैत सुभद्राकेँ कहलखिन- “दियादनी, अहाँ तँ हमरासँ जेठ छी मुदा सभ विधि-बेबहार सभकेँ थोड़े मन रहै छै। ऐमे एकटा विधि आरो होइ छै।”
“की?”
“स्वामीक निमित्ते कपारमे पाथर लगाएब।”
“मुस्की दैत सुभद्रा- “हँ, हँ, ई तँ हमरो मन अछि।”
“अखन नै बैसब। जाइ छी।”
“बेस, बेस। जाउ।”

पुनः दुनू गोटे बुढ़ाक जगहपर जा बैसलीह आखिसँ नोर हराएल।

मुस्की दैत शीला बजलीह- ''माए, बुढ़ासँ कहियो झगड़ो भेल छलनि?''

''बूढ़ा नर्कसँ स्वर्ग गेलाह। हुनकर आगि नै उठेबनि। हमरो माए-बाप सिखा देने रहथि। मुदा जत्ते माए-बाबू सिखौने रहथि तइमे बहुत बेसी बुढ़ा सिखौलनि। सदिखन कहैत रहै छलाह जे जेकरा मनुक्ख बुझै छिऐ ओ मनुक्खक हॉड़-मांसक बनल एक ढॉचा मात्र छी। मुदा एकरा मनुक्ख बनबै छै मन। मन जेहेन रहत तेहेन ओ मनुक्ख बनत। जेहेन मनुक्ख बनत तते लोकक मनमे जगह भेटत। जगहो दू तरहक होइ छै। एक तरहक होइत अछि नीक आ दोसर अधला। मनुक्खकेँ सदिखन नीक विचार मनमे रखैक चाही।''

बिचहिमे शीला टपकि पड़लीह- ''परिवारमे तँ घरहटो होइ छै, विआहो, पावनि होइ छै। ओ काज केना करै छेलखिन।''

''कनियाँ, परिवारमे नमहर काज भेने चुल्हियोक काज बढ़ि जाइत अछि। मुदा सदिखन ई मनमे राखी जे अपन काज सम्हारि किछु दोसरोक काज करी। जहिना बाँसक बीट तीन-सलिया, चरि-सलिया धरि समटल रहैत अछि। पातरो रहैत कते-कते नमहर रहैत अछि। कड़ची सभकेँ समटि कऽ रखै छै। वएह कड़ची छी परिवारक अपनासँ बढ़ि दोसराक काजमे सहयोग करब। आजुक लोकक मन ढील भऽ गेल छै। जेकर फलाफल सोझेमे अछि।''

२

खूब अन्हरगरे माने चारि बजे भोरेमे सुभद्रा शीलाकेँ उठबैत कहलखिन- "कनियाँ, उठू। उठू झब दे उठू।"

सासुक धरफड़ाएल बोली सुनि शीला उठि कऽ बैसैत पुछलखिन- "की भेलनि जे एना अधनीनामे उठा देलनि?"

"असथिरसँ बाजू। अखन गामक लोक नै उठल अछि। अपन काज आगू बढ़ाउ।"

"कोन काज?"

"जखने एक्के-दुइये लोक सभ जागए लगत कि भूत सभ आबए लगत। अहाँ नव-नौताड़ि छी तहूमे शहर-बजारमे रहै छी। अहाँ गामक भूतकेँ नै चिन्हबै बुरहा सभटा भूतकेँ चिन्हा देने छथि। अखन एतबे सुनू। नै तँ जिनगी हूसि जाएत। बुरहा मरि गेलाह तँए कि सभ ओइ लागल मरि जाएब। सभकेँ अपन-अपन दाना-पानी अछि। मुदा फेर कहै छी? गप-सप्प करैले भरि दिन खालिये अछि। समाजक लोक सभसँ सभ बात पुछबनि आ बुझब। अखन जल्दी बिस्कुटक डिब्बा निकालू आ चाह बनाउ। ताधरि हमहूँ बौआकेँ एकटा दतमनि दऽ अबै छियनि। जाबे अहाँकेँ चाहो नै बनत ताबे ओ तैयार भऽ जाएत। चुल्हिमे तँ छाउर नै अछि, माइटिये लऽ कऽ हाँइ-हाँइ कऽ दू घूसा दाँतमे दियौ आ कुड्डड़ कऽ पानि पीब लिअ।"

कहि सुभद्रा देवनन्दनकेँ उठबैले दलानपर गेली। जै जगहक चौकीपर रघुनन्दन सुतैत रहथि ओही अखड़े चौकीपर देवनन्दन सुतल रहथि। देहपर हाथ दऽ आस्तेसँ डोलबैत बजलीह- "बाउ, बाउ। उठू। लिअ दतमनि। पहिने मुँह-हाथ धोइ लिअ।"

मृत्यु कर्ममविधि बुझि देवनन्दन किछु पुछलखिन नै। सोलहन्नी मानि दतमनि करए लगलथि। अपनो मुँह धोय कुड्डड़ कऽ सुभद्रो आंगनक ओसारपर

बैसलीह। प्लेटमे चारिटा छोट साइजक बिस्कुट आ गिलासमे पानि नेने शीला पतिकेँ दइले चललीह। शीलाक हाथमे गिलास-प्लेट देख कहलखिन- ‘‘पौआही पाँव-रोटी नै अछि। तँए बड़का डिब्बा चारि साए ग्रामबला बिस्कुटे दऽ अबियौ।’’

शीला सएह केलनि। चाह पीबैत सुभद्रा कहए लगलखिन- ‘‘अपना सभमे तँ तेरहे दिनमे सभ कर्म भऽ जाइत अछि मुदा अपने गामक आन टोलमे ककरो पनरह तँ ककरो सत्तरह तँ ककरो महिना दिनपर कर्म सम्पन्न होइत अछि। हम कियए एते भोर उठा देलौं से बुझै छिऐ? आइ एक्केबेर बौआकेँ एक-भुक्त करए पड़तनि गोसाँइ लहसैत बुढ़ाकेँ पारस माने पातरि दैत खेताह। आब अहीं कहू जे जे-आदमी, बानर जकाँ, किछु ने किछु सदिखन खाइत रहै छथि ओ भरि दिन ओहिना माने निराधार केना रहताह? बुरहा जिनगीक संगी छलाह मुदा बौआकेँ दस मास पेटमे पालने छी। ओ पालब हम नै बुझबै ते पुरुखकेँ बुझब छिऐक। अखन कियो नै अछि कहि दै छी जे हमरा कोन, हमरा तँ हरिबासयक साधल देह अछि मुदा अहाँ दुनू परानी तँ से नै छी। लोके भूत छी से बुझि लिअ। जखन अंगना खाली रहै आ खाइ-पीबैक मन हुअए तँ घरमे जा कऽ खा लेब। बुढ़हाक क्रिया-कर्मक जे विधान अछि आ समाजमे रहै छी ओ तँ समाजेक विचारानुसार हएत। मुदा इहो ने मनमे राखए पड़त जे एक तँ समांगक सोग मनमे अछि तइपर सँ खेनाइयो-पीनाइ छोड़ि देब तँ कि बुरहा लागल सभ चलि जाएब? जते काल जीबैत छलाह, सेवा-टहल केलियनि वएह दायित्व भेल।’’

एकटा खिस्सा कहै छी कनियाँ। खिस्सा नै आँखिक देखल घटना....।

ओंगरीसँ टोलकेँ देखबैत- ....ओइ टोलमे फुसनाक घर छै। बहुत दिन तँ नै भेलैए मुदा तैयो पच्चीस-तीस बर्ख भेल हेतै। फुसनाक बाबा मुइलै। ओ पेटबोनिया रहए। मुइलाक पराते अरगासन की देत आ अपने एक-भुक्त की करत? मुदा तैयो ककरो-ककरोसँ पैंइच लऽ लऽ पार लगलै। मुदा बिना आमदनिये परिवार केना चलतै। खाइ बेतरे धिया-पूता सभ टौआइए। चिन्तासँ दुनू परानी सेहो तरे-तर सुखए लगल। धिया-पूताक मुँह देख बेचारीक फुसना

माएकँ करेज चहकि गेलै। मरि गेलि बेचारी। फुसना गरदनिमे माएक उतरी आ बापक गरदनिमे बापक उतरी। तइपर सँ बीस दिन बाद मलेमास पड़ि गेल।''

दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोर खसए लगलै। सुभद्रा आँखिसँ बहैत सरस्वतीक धारा देख शीलाक मुँहसँ अनायास निकललनि- ''वाह रे धैर्य! अपना सोगे नोर नै अनका सोगे धार।''

चाह पीब पान खा पढ़ुआभाय पत्नीकेँ कहलखिन- ''हमरा अबेरो भऽ सकैए। तै बीच जँ कियो खोज करथि तँ कहि देबनि जे देवनन्दन ऐठाम जिज्ञासा करए गेलाह।''

''अखने कियए जाएब?''

''अहाँ जे सोचै छिऐ तइसँ हटि कऽ सोचए पड़त।'' -कहि पढ़ुआभाय डेग बढ़ौलाह।

पत्नी पाछूसँ कहलखिन- ''अच्छा जाउ।''

रास्तामे पढ़ुआभाय सोचए लगलथि जे अपने पढ़ल छी, पोथीक बात बुझै छिऐ। अनको कहै छिऐ। मुदा परिवारक जँ सभ नै बुझत तँ अपन बुझलाहा अपने कतेक पइठ हएत। जाधरि आँखि तकै छी सोचै-बिचारैक शक्ति अछि मात्र ताधरिक भार.......। जँ से नै तँ कि शास्त्र ओकरा लेल नै जकरा कियो अपन नै छै.....।

मन ओझराए लगलनि। मुदा नजरि अहीठाम टिकि पत्नीक प्रश्नपर चलि गेलनि।

माड़किन वस्त्रमे सजल असकरे देवनन्दन गुरुकूलक विद्यार्थी जकाँ चौकीपर दछिन मुहेँ बिस्कुट खा पानि पीब चाह पीबते रहथि कि पत्नी-शीला सिगरेटक डिब्बा आ सलाइ नेने आबि आगूमे रखि खाली गिलास लैले ठाढ़ भऽ गेलीह। तीन-चारि घोंट चाह गिलासमे रहबे करनि मुदा मन जे जबदाह छलनि से आब हल्लुक भऽ गेल रहनि, शीला दिस मुस्की दैत, डेढ़-बराह आँखिये तकलनि। शीलाक आँखिकेँ काजक बोझ दबने। पतिक मुस्की जेना मनक घुरकेँ एक

मुट्ठी सुखलाहा खढ़मे सलाइ पजारि देलकनि। मुदा धधराक लपटकक संग काजे अगुआ गेल। बजलीह- ‘‘आइसँ समाजक लोक काजक विषयमे पुछैले एबे करताह। हुनका सभकेँ खाइ-पीबैले नै देबनि से उचित हएत?’’

‘‘कथमपि नै।’’ देवनन्दन कहलखिन।

‘‘मनक मुस्की, अपन नमहर ॠृण अदाए होइत देख अठन्नियाँ हँसी बनि निकललनि- ‘‘घरमे की सभ अछि?’’

‘‘चाह-पत्ती, चीनी, दूधक डिब्बा सिगरेट-सलाइ तँ अननहि छी आरो किछु जोगार करऽ पड़त से तँ नै बुझल अछि।’’

अपन भार उताड़ैत देवनन्दन कहलखिन- ‘‘गामक सभ बात तँ हमहूँ नहिये बुझै छी। करियाकाकाकेँ बजा पुछि लैत छियनि।’’

‘‘अच्छा होउ। कौआ डकल। झब दे सिगरेट पीब लिअ। ने ते अनेरे सिगरेटक सुगंध चलत। लोक जागत।’’

पत्नीक गतिगर गप्प बुझि गिलास हाथमे दैत देवनन्दन सिगरेट धरा पीबए लगलथि। मनमे एलनि, अपने दुनू परानी ने बहरबैया भेलौं मुदा माए तँ सभ दिन गामेमे रहलीह। हुनका सभ विधि-बेबहार तँ बुझले छन्हि। तहीकाल बिस्कुटक मोनक्काक ढकार भेलनि। मुँह लाड़ए-चाड़ए लगलथि। सिगरेटक खुट्टी फेकते रहथि कि पढ़ुआ कक्कापर नजरि पड़लनि। नजरि पड़िते चौकियेपर सँ बजलाह- ‘‘आशा।’’

पतिक बात बुझि गेलखिन। गैस चुल्हिपर चाहक ओरियान करैत शीला आशाकेँ कहलखिन- ‘‘बुच्ची, दरबज्जाक कोनपर सँ देखने आबह जे कते गोटे छथि?’’

दौड़ल आबि पढ़ुआ बाबाकेँ बैसल देख घुरि माएकेँ कहलक- ‘‘बाबू लगा दू गोरे।’’

पढ़ुआकाका आबि चुपचाप मौन धारण केलनि। दू मिनटक पछाति आँखि खोललनि कि आशाकेँ चाहक कप बढ़बैत देखते जहिना रेलमे कटल आदमीकेँ देख बुइधिक फाटक बन्न भऽ जाइत, तहिना भेलनि। तै बीच देखलनि जे देवनन्दन दू चुस्की मारि लेलनि। मनमे बिहारि उठलनि ओना तँ नह-केश

कटेलाक उत्तर नै तँ कमसँ कम छौरझप्पी धरि तँ शोक मनेबाक चाही। मुदा बूढ़क मृत्युमे शोक मनेबाक चाही आकि हर्ष?

जँ शोक मनाएब तँ की प्रकृतिक संग छेड़-छाड़ नै हएत। मुदा परम्परो तँ अपन महत्व रखैत अछि। अखन धरि कर्ताक संग परिवारो आ समाजोक संग किछु नियम बनल अछि। जेकर संचालक अपने सभ छिऐ। तइठाम की कएल जाए? तहूमे नवकबरिया डॉक्टर छथि, मनमे कचोट लगतनि। आ मरैकालक तँ सीमा नै होइत। बूढ़ो मरैत, जुआनो मरैत आ बच्चो मरैत। तखन तँ सभकेँ अपन-अपन जिनगीकेँ दीर्घायु बनबैक छै। तहीले ने सभ अपन-अपन जिनगीकेँ लगौने रहैत अछि। मुदा असकरे कोनो काज करैसँ पहिने दोसरो गोटेकेँ पुछि लेब आवश्यक अछि। मुदा लगमे के अछि जकरासँ पुछबै। भरोसे रहब तँ चाहे दुइर भऽ जएत। मुदा देवनन्दनकेँ पीबैत देख भरोस भेलनि। चाहक चुस्की लैत सोचए लगलाह- अपना सबहक समाजमे तेरह दिनक कर्म डाहब-जरौनाइसँ लऽ कऽ द्वादसा कर्म धरि अछि। जहिना घरसँ निकालि गाछी लऽ जाए गाछक संग कऽ देलियनि। तहिना ओइठाम काज सम्पन्न कऽ घरपर लऽ अनलयनि। आब घरक काज शुरु हएत। फेर मनमे उठलनि जे काजक दौड़मे जिज्ञासो तँ होइत अछि? फेर मन ओझराए लगलनि। तेरह दिन हिसाब जोड़थि तँ ठीके बैसनि। मुदा जिज्ञासा तँ तखने से ने शुरु हएत जखनसँ आंगनमे लोह-पाथर छुबि लोग अपन-अपन घर चलि जाइत। समाजक तँ एक प्रक्रिया सम्पन्न भऽ गेल। एहनो तँ भऽ सकैत अछि जे जे समाज -समाजक- गाममे नै छलाह। जरौलाक बाद एला। हुनका कखन सामाजिक काजमे संग कएल जाए। जँ छौड़झप्पीक पछाति कएल जाए तँ संस्कारक संगी माने जरबैक संगी मानल जेताह। मुदा जहिना माटि खुनैत-खुनैत कतेको रंगक माटि धरतीमे मिलैत तहिना माथ खोधैत-खोधैत चिक्कन माटि भेटलनि। छह-छह करैत पानियोसँ बेसी छिछलाहट। फुड़लनि। समाजकेँ माने मनुष्यकेँ समैक अनुकूल बना चलक चाही। जहिना अनेको कारणसँ वायुमंडल बदलैत तहिना जँ मनुष्यो नै बदलत तँ गतिहीन भऽ जाएत। गतिहीन आ मृत्युमे की अन्तर छै। जते पढ़ुआकाका सोचथि तते मन

ओझराएल जाइत छलनि। बजलाह- ''बौआ, तीन दिन धरि, जहिना बाधमे हरीयरी नै रहने माल-जालकेँ बहटारि चरबाह अपने गुल्ली डंटा खेलए लगैत तहिना छौड़झप्पीसँ पहिने मन बहटारए एलौं। अखन जाइ छी। फेर आएब। मनमे चिन्ता नै करब। समाज समुद्र छी जइमे घोंघा-सितुआसँ लऽ कऽ बड़का-बड़का पानिक जानवर धरि प्रेम-भावसँ जीवन-यापन करैत अछि तहिना समाजो छी। सभ शक्ति समाजमे छै।'' कहि रास्ता धेलनि।

माथ उधारने, अधा देह वस्त्रसँ झाँपल गुदरी पाछू-पाछू आ डॉड़मे ठेहुनसँ उपर धोती, कान्हपर तौनी नेने आगू-आगू हुलन आबि देवनन्दनकेँ ओसारक निच्चाँ सँ प्रणाम केलकनि। शिष्टाचारकेँ देखैत डॉक्टर देवनन्दन चौकीपर सँ उठि ओसारक निच्चाँ आबि भुँइयेमे चुक्की-माली बैस दुनू परानी हुलनकेँ सेहो बैइसेले कहलखिन।

मुँह सकुचबैत हुलन कहलकनि- ''सरकार, अहाँ लग हम केना बैसब? हम ठारहे रहै छी।'' बजैत-बजैत दुनू परानीक आँखिसँ नोर टघरए लगलै।

गाल परक नोरक टघार पोछैत हुलन बाजल- ''गामक खूटा उखड़ि गेला। काकाकेँ अछैत कहियो चिन्ता नै भेल जे समाजसँ बहार छी। मुदा आन जे अछि ओ सदिखन अगराहिये लगबैत रहैए।''

''अच्छा गामक बात पाछू कहिह। पहिने अपन काज कहह।''

पतिकेँ डटैत गुदरी- ''बौआ, डागडर बाबू, अहाँ देवता छी। कोनो बात छिपाए कऽ नै राखब। हमरो काज बहुत अछि। एक दिन बीतिये गेलनि। दसे दिनपर नह-केश होइ छै। ओइसँ पहिने सभ बरतन बना कऽ दिअ पड़त। बीचमे आठे दिन समए बचलै। दुइये परानी काज करैबला छी। धिया-पूता सभ इसकूले जाइए।''

स्त्रीगणक बोली सुनि अंगनासँ सुभद्रो आ शीलो दरबज्जापर एलीह। दरबज्जापर अबिते सुभद्रा गुदरीकेँ कलखिन- ''कनियाँ, ओजार-पाती नै अनने छह? आब तँ सूपे-चालैनक काज पड़त। कनी ओकरा जोड़ि-जाड़ि दितिहक।''

“नै काकी कहाँ किछो अनने छी। काल्हि बेरु पहर आबि कए कऽ देबनि। अखैन ते काजेक बरतन बुझैले एलौंहँ।”

“बेस-बेस। मुदा एकटा बात मन रखिहह जे जहिना बुरहा मेघडम्बरक सिनेही छलाह तेहने बनबिहह।”

मेघडम्बरक नाओं सुनि मुस्कुराइत हुलन बाजल- “काकी, जहिना भगवान विष्णु वामनरुपमे मेघडम्बर ओढ़ै छलाह तइसँ बीस कक्काक मेघडम्बर हेतनि। पाँच गोटेक परिवार तरमे अँटाबेश कऽ सकैए।”

सुभद्रा देवनन्दनकैं कहलखिन- “वाउ, अपने तँ गामक किछु बुझै नै छह, हम स्त्रीगणे भेलौं। मरदा-मरदीक काज छी। करिया बौआकैं बजा लहुन।”

सुभद्राक बात सुनिते गुदरी करिया कक्काकैं बजबए विदा भेलि।

देवनन्दन हुलनकैं पुछलखिन- “कारोवार की सभ छह?”

कारोवारक नाओं सुनि हुलन हरा गेल। मन पड़लै अपन सुगर। भड़भड़ाएल स्वरमे कहए लगलनि- “भाय, गरीबकैं कियो नीक केनिहार नै। देवस्थानमे दोहाइ दइले गरीब अछि। जहिना कतबो दोहाइ देनौ गहूमन साँपक बीख नै उतड़ैए तहिना दीनदयाल भजने की हेतै। यएह गाम छी धनेसर ऐठीन भोज रहए। अपनो सभ अठि-काँठ समेटलौं आ अँइठारमे फेकल अँठि पातमे सुगरकैं छोड़ि देलिऐ। तेहने धनेसरक बेटा सेतानक चरखी अछि जे चोरा कऽ पोखरिक माछ मारैले इन्डोसेल अनने रहए। ओहीमे पातपर छीट देलकै। सभटा सुगर मरि गेल। तै दिनसँ ने पूजी भेल आ ने फेर दुआरपर पशु।”

देवनन्दन आगू पुछलखिन- “जखन खेतो ने छह, सुगरो सभटा मरिये गेलह तखन गुजर केना चलै छह?”

देवनन्दनक प्रश्न सुनि हुलनक मनक आशा फुटि कऽ निकलल। मुस्की दैत बाजल- “डाकडर सहाएब, समाज जीबैत रहए....।

सुभद्रा दिस देख- ....भगवान काकीकैं औरदा देथुन। काकीकैं बुझले छन्हि जे बारहम-तेरहम मास हिनके दुनू परानीक असिरवादसँ गुजर करै छी।”

हुलनक उत्तर सुनि देवनन्दनक मनमे सुनैक उल्लास जगलनि। भुखाएल जकाँ पुछलखिन- “से की, से की?”

रेगहाए कऽ हुलन कहए लगलनि- ‘‘बाउ गरीब लोकक लिये आसीन-कातिक सभसँ भारी होइए। मुदा सभ साल काका हमरा दूटा बाँस शुरुहे आसीनमे दऽ दै छथि। दुनू बाँस लऽ जाइ छी। ओकरा चिड़ि-फाड़ि कऽ बरतन बनबए लगै छी। ओना कोनियो-छिट्टाक बिकरी दोगा-दोगी हुअए लगैए। मुदा फुलडालीक संग आरो-आरो समानक विक्री हुअए लगैए। जइसँ खूब नीक-नहॉंति तँ नहिये मगर गुजर चलए लगैए। ई आशा अखनो अछिये। जाबे काकी जीबैत रहती ताबे रहबे करत।’’

हुलनक बात सुनि देवनन्दन चौंकि गेलाह। मनमे एलनि जे पिताक कएल कर्म-धर्मकेँ हम मेटा देब। कथमपि नै। मुस्की दैत कहलखिन- ‘‘बाबूक सभ किछु रहबे करतथुन।’’

देवनन्दन विचार सुनि हुलनक आशा बनले रहि गेल।

करियाकाका बजार जाइक तैयारीमे रहथि पत्नी बुझा-बुझा कहैत रहनि- ‘‘अझुका एक-भुक्तक सभ सरंजाम देबनि। बारह-तेरह दिन तँ सभ कियो हुनके काजमे लगि जाएब तँए आइये तेरह दिनक नोन-तेलक ओरियान नै कऽ लेब तँ बीचमे छुट्टी हएत।’’

पत्नीक बात करियाकाका सुनबो करथि आ समान अनैक झोरा-झोरी आ रुपैयाक हिसाब सेहो मने-मन जोड़ैत रहथि। तै बीच गुदरी डेढ़ियापर सँ सोर पाड़लकनि- ‘‘कक्का, काका।’’

टाटक दोगसँ मूड़ी उठा देखलनि तँ गुदरी-डोमिनकेँ देखलखिन। मनमे उठलनि- जतरा बिगड़ि खराब भऽ गेल आब। की हएत की नै? मन खसलनि।

दोहरबैत गुदरी बाजलि- ‘‘काका ते अखैन काकीमे ओझराएल छथि तँए अनकर बात कियए सुनथिन?’’

गुदरीक शब्द-वाण करियाकाकाक छातीकेँ बोधि देलकनि। सान्त्वना दैत अंगनेसँ बजलाह- ‘‘कनी काजमे लागल छी। लगिचा गेल। अबै छी।’’

मुदा शब्द-वाण छाती बेध कऽ मैल निकालि देलकनि। विचार जगलनि कोनो काजमे जाइसँ पहिने ककरो देखने ककरो जतरा किएक भगंठि जेतै। ई मनक मैल छी। आदमी अपन जिनगी आ कर्मक मालिक स्वंग छी। तखन ककरो दोख लगाएब कायरता छी। गुदरीकेँ सुनबैत पत्नीकेँ कहलखिन- ‘‘आब अपन काज ठमकि गेल ताबे अहाँ झोरा ओरिया कऽ रक्खू। डोमिनक बात बुझि लै छिऐ।’’

आंगनसँ निकलि करियाकाका दरबज्जापर आबि पुछलखिन- ‘‘कियए एते हलचलाएल छी।’’

मजबूरीक अवाजमे गुदरी बाजलि- ‘‘कक्का, हम तँ हिनके सबहक लऽ लऽ छी। ई तँ बुझिते छथिन जे सराधमे डोमिनक कते काज होइ छै। एक दिन बीतिये गेलनि। दसे दिनपर नह-केश होइ छै। नहे-केश दिन जँ सभ बरतन नै पहुँचा देबनि तँ येहे की कहताह?’’

बिचित्र द्वन्द्वमे करियाकाका फँसि गेलाह। एकटा मन कहनि जे सराधक काज तँ सरझप्पी बाद शुरु हएत आइ केना करब? फेर दोसर मन कहनि जे भात झंकैले कमसँ कम चारिटा बड़का छिट्टा चीज बौस रखैइयोले आ परसैयोले बीस-पच्चीसटा चंगेरो बनबए पड़तै। तहिपर सँ श्राद्ध-क्रिया बरतन सेहो बनबए पड़तै। दिनो तँ गनले आठटा अछि। जइमे बाँस काटबसँ लऽ कऽ घरपर पहुँचबै धरिक छै। छोट लोकक तँ दुर्भाग्यो छै जे दूटा जबानसँ तेसर एक-ठाम नै रहए चाहत। भलहिं बाप-माए होय कि बेटा-बेटी। फेर मनमे एलनि सुआइत मौगी पुरुखाह आ पुरुख मौगियाह भऽ जाइए। मनमे हँसी एलनि। मुदा लगले पाकल जौ मे पाथर खसलनि। एकरा जखने साय देबै -काज करैक बान्ह- तखने काज करैक अधिकार भेट जेतै। अधिकारमे बाधा देब अनुचित हएत। जँ अखने नै साय दय देबै तँ बेसी समांग छै जे हाथे-हाथ सम्हारि देतै। मनुक्ख तँ लोहाक मशीन नै छी जे बटन दाबि देतै आ ढेरक-ढेर बनबए लगत। कमसँ कम चारि बाँसक काज छै। काटत, फारत। टोनत। कैमची बनाओत। गाड़ा बनाओत आरो कते करए पड़तैक। मौगी कतबो लट-लट करैए तँ पुरुख जकाँ बाँस तँ नै काटि सकैए। जँ काटियो

लेत तँ झोंझमे सँ घीचल केना हेतै। मन धोर-धोर हुअए लगलनि। आशा जगलनि। काज तँ देवनन्दनक छियनि। हम समाज भेलौं। भलहिं दुनू गोटेक परिवार जोट्टल आम जकाँ आकि जोटल फूल जकाँ अछि। मुदा मनुष्य होइक नाते मनुक्खक बात नै मानिऐ। समाजक संगे ई बेइमानी हएत। आँखि मूनि कोनो बात मानि लेब ओ खाधिमे खसाएत। मनुष्य दोहरा कऽ ऐ धरतीपर नै अबैत अछि भलहिं लोक साएबेर अबैक-जाइक बात बुझए। मुदा हमरा गरदनिसँ निच्चाँ नै उतड़त। आगू-आगू फनकल गुदरी आ पाछू-पाछू करियाकाका असथिरसँ रास्ता धेलनि। कनिये आगू बढ़ि उनटि कऽ गुदरी आगूमे ठाढ़ भऽ कहए लगलनि- "आब की इहो जुआने-जहान छथि जे नै बुझथिन। काजक कते छिगरी-तान अछि से नै बुझै छथिन। ओछाइनपर सँ उठै छी आ काजमे लगि जाइ छी। जलखै बेरमे छौरसँ आकि माटिसँ मुँह धोय पानि पीऐ छी। धिया-पूताकेँ खुअबैत-पीयबैत, चरिया कऽ स्कूल पठबैत गोसाँइ कान सोझे चलि अबैए। हमराले कि दोहरा कऽ दिन उगत।" आगूमे ठाढ़ बॉहि-फड़का-फड़का गुदरी करियाकाकाकेँ कहनि।

अकछि कऽ कहलखिन- "चलू .... बुझलिऐ...... जे अहाँक बात नै मानता ओ काजक भार लेथिन।"

काजक बेरमे वाय गौंगियाए लगै छन्हि आ हुकुम चलबै कालमे जएह मन फुड़त सएह बाजि देब। जहिना कोनो घर बनबैमे रंग-विरंग काज, रंग-बिरंगक समान, रंग-बिरंगक ओजारसँ लऽ कऽ रंग-बिरंगक बुद्धि लगैत तहिना मनुष्यक समाज बनबैक लेल मनुष्यकेँ बुझए पड़ैत अछि। दरबज्जापर अबिते करियाकाका देवनन्दनकेँ पुछलखिन- "कियए बजेलौं?" देवनन्दनकेँ बजैसँ पहिने हुलन किछु कहए लगलनि मुदा हुलनकेँ रोकैत करियाकाका कहलखिन- "रघुनी भैयामे हमरो साझी अछि। तँए किनको बिगाड़ने हम हिस्सा दुरि नै हुअए देब। तोहर जे काज छह ओकर मालिक तों छह। जै चीजक जरुरत हुअ ओ कहि दाए।"

हुलन बाजल- "बाँस।"

"बीट देखले छह। जते सँ काज हुअ काटि लिहह।"

बिचहिमे सुभद्रा शीलाकेँ कहलनि- ''कनियाँ, साय दए दियौ।''
आंगनसँ शीला पँचटकही आनि गुदरीक हाथमे दऽ देलखिन। रुपैया लैत गुदरी बाजलि- ''काल्हि बेरमे आबि सुपा-चालनि बान्हि देबनि काकी।''
काज हल्लुक होइत करियाकाका मने-मन सोचलनि जे अधे घंटा ने देरी भेल कने रेसेसँ चलि जाएब। नै तँ कनी अबेरे हएत किने। काजक दौड़मे अहिना होइ छै। तै बीच दुनू परानी हुलनकेँ दू लग्गा आगू आगू-पाछू जाइत देखलनि। गुदरीकेँ पति दिस घुमि हँसि कऽ किछु बजैत सुनलनि।
हुलन- ''किछु छिऐ तँ राज-दरवार छिऐ। मुँह माँगा। आब तँ नवका-नवका लोक सभ भऽ गेल किने। ने ते बाउ कहै जे रघुनी भाइक बाबा जे रहनि से बेटीकेँ खोंछिमे पाँच बीघा खेत देने रहथिन। से जँ नै देने रहितथिन्ह तँ बाल-विधवाकेँ की दशा होइतै?''
गुदरी अपना विचारमे ओझड़ाएल तँए हुलनक बात सुनबे ने केलक। तै बीच करियाकाका हुलनकेँ सोर-पाड़ि कहलखिन- ''सिदहा नेने जा। बेरु पहर बाँस लऽ जहिहह। काजमे बिथुत ने होय।''
सुभद्रा उठि आंगन विदा भेलि। पाछूसँ शीलो गेलीह। हुलन दरबज्जाक आगूमे ठाढ़ रहल आ गुदरी सिदहा आनए आंगन गेलि। हुलन करियाकाकाकेँ कहलखिन- ''करियाकाका, जाबे जीबैत रहबै ताबे संबंध रहबे करत। ओना आब डॉक्टरोभाय बाहरे रहए लगलथि, हमरो सबहक धियापूता अपन व्यवसाय छोड़नहि जाऽ रहल अछि।''
हुलनक बातकेँ करियाकाका व्यवहारिक बुझलनि। मुदा देवनन्दनक नजरि अपन अगिला जिनगीपर पड़लनि। मने-मन सोचए लगलथि रैविये-रवि तँ नै, मासो-मास आएब ओते जरुरी नै अछि। मुदा तीनटा जे मौसम- जार, गर्मी आ बरखा होइ छै ओइमे आबि जँ मौसमी रोगक दवाइयो आ इंजेक्शनो दऽ दिऐ। तँ की हमर सामाजिक संबंध बड़कराड़ रहत आकि मरि जाएत। आकि डॉक्टरभाय बुझि भैया, काका, बाबा, कहत। सामाजिक संबंधकेँ यएह डोर बान्हि कऽ रखैत अछि। जहिना साओन-भादोमे बाबा बैजनाथक डोर कँवरियाकेँ लगि जाइत। तहिना डॉक्टर देवनन्दनकेँ भेलनि।

परिवारक सिदहा आ जारन देख गुदरी निचेन भऽ गप-सप्प पसारि देलक। घरक व्यवहार बुझल तँए गुदरी चारि हाथक साड़ी फाड़ि कऽ बनौलहा टुकड़ा लैये कऽ आएल छलि। जरनाक बोझक लेल बीरबाक जरुरत सेहो होइत तँए बिरबो अनने। सुभद्राकेँ गुदरी कहलकनि- ''काकी, हमरा सबहक अपलेशन डागडर बौआ करै छथिन?''

गुदरीक बातकेँ मजाक बुझि सुभद्रा चुपे रहलीह। शीला बाजलि- ''केहेन अपरेशन?''

''आरो कोन अपलेशन। उहए धिया-पूताबला।''

''होइबला आकि नै होइबला? अपलेशन केने धिया-पूता हेबो करै छै आ नहियो होइ छै।''

''जहन अपलेशनसँ धिया-पूता होइ छै तहन पुरुखे लऽ कऽ की हेतै।'' कहि उठि कऽ ठाढ़ होइत फेर गुदरी बाजलि- ''काकी, आब तँ आबा-जाही लगले रहत। काजक अंगना छिऐ कते रंगक चीज-बौसक खगता हेतनि। नै किछ ते देह तँ अछि। लोके-काज लोककेँ होइ छै।''

दुनू परानी मुस्कुराइत गाछी ठेकना सोझे विदा भेल। जहिना धारमे सुगरकेँ घाटक जरुरत नै होइत मुदा जाएत सोझे हिया कऽ, भलहिं कतेकोबेर घुरि-घुरि आबए पड़ै। तहिना सुगर पोसनिहारोक चालि। केना नै रहतै जिनगी तँ सुगरे चड़बैक पाछू बीतलै।

शीशोक झाँखियो आ मोट-मोट गोटनो देख दुनू परानी आनन्दसँ बैस गप-सप्प करए लागलि।

गुदरी- ''कहुना तँ पनरह दिन चलबे करत।''

हुलन- ''सुखलो अछिये।''

करियाकाका उठि कऽ विदा होइक विचार करिते रहथि कि कुसुमलाल पंडितकेँ धड़फड़ाएल अबैत देखते बुझि गेलखिन जे आब बाजार गेल नै भेल।

फड़िकेसँ कुसुमलालकँ कहलखिन- ‘‘आबह, आबह पंडित। तोरासँ बहुत बुझैक अछि। तूँ तँ बुझिते छहक जे काजक अंगना छी।’’
मुस्की दैत कुसुमलाल कहलकनि- ‘‘हँ, से तँ छीहे?’’

अंगना दिस बढ़ैत, मने-मन करियाकाका सोचथि जे कमसँ कम एक घंटा बजलाक बाद मन ठंढ़ेतै। भलहिं कौल्हुके सभ गप कियए ने दोहरबए। पाँच गोटेकँ एकठाम बैसार बनिते बजैक समए निर्धारित हुअए लगैत। कुसुमलालो तँ पाँच गोटेक बैसारमे रहैत अछि। तहूमे अखन तँ आरो फीरीसान रहैए। धरवालीक गट्टा टुटि गेल छै, एकटा बेटा भीने छै तँए ओकर अधिकार -माए-बापक- कटि गेल छै। दोसर बेटा, जे साझी छै, दिल्लीमे नोकरी करै छै। पुतोहूकँ आठम मास छिऐ। तीनू जमाए परदेशीए, तँए अपन घर-दुआर छोड़ि बेटी केना देखत। तइपर धनकटनी, गहूमक बौग संगे बड़दकँ फाड़ लगि गेलै। मुदा तँए कि कुसुमलालक मन खुशी नै रहै छै अपन दोख हटा बेटा-बेटीकँ जानकारी दइये देने अछि। कियए परिवारक कियो दोख लगाओत। बीमार रहितहुँ बुढ़बा घरकँ थितमारि कऽ रखने छथि। सभ धान कटिये गेल। आब गहुमो बौग भइये जाएत। हमरो पलस्तर भइये गेल अछि। बीस दिन आओर बान्हल रहत तकर बाद तँ दुनू बाल्टीन उठेबे करब। हमरा कोन टूटल अछि अनका तँ जाँघ टुटि जाइ छै, छाती टुटि जाइ छै। फेर ओकरा छुटै छै की नै? तँए खुशी। भगलाहि पुतोहू कखनो अपन माए-बापकँ गरियबैत तँ कखनो पतिकँ। सासु अपने रोगी। एतेक रहलाक वादो कुसुमलालक मन सदिखन खुशी रहैत। जखन कतौ काज करए विदा होइत तँ पुतोहूक भगलपाना पर हँसैत तँ कखनो बेटीक दिन-दुनियाँपर खुशी होइत। एत्ते कम्मल ऊनी कपड़ा तँ बेटिऐ-जमाऐक देल छी। तखन तँ तीनू बहीन आबि कऽ भेँट-घाँट कइऐ लेलकै। इलाजो लेल पँच-पँच सौ तीनू देबे केलकै। जाबे थेहगर छी ताबे......।

करियाकाका घुरि कऽ अंगनासँ आबि पुछलखिन- ‘‘अच्छा पंडित, भनसियाक समाचार कहह?’’

‘‘बीसम दिन पलस्तर कटि जेतै। मुदा अखैन हम औगताएल छी काजे भरि गप करु।’’

‘‘तोहीं बाजह?’’

‘‘कर्मक बरतन तँ नापल अछि मुदा सभसँ झनझटिया दहीक तौलाक अछि किने। सरधुआ बरतनक दसम-एगारहम दिन काज हएत। मुदा दही तँ तीन-चारि दिन पहिनहि पौड़ल जाएत। एक दिन बीतिये गेल। पाँचम-छठम दिन तौलाक काज पड़ि जाएत। माटिक बनैमे तीन दिन टेम लगै छै। तहिना पीटैइयो-सुखबैमे तीन दिन लगिये जाइ छै। तखन एक दिन आबा लागत। आब हिसाब जोड़ि कऽ देखियौ जे आइसँ हाथ नै लगाएब तँ काज केना सम्हरत?’’

कुसुमलालक बात देवनन्दनकेँ ओजनगर बुझि पड़लनि। बजला किछु नै। मुदा मूड़ी जे डोलबैत रहथिन से सुनैबला कि मानैबला, से कुसुमलालकेँ बुझवामे नै अबैत।

हँसैत करियाकाका कहलखिन- ‘‘पंडित, तोहूँ जीवनीसँ अनाड़ी भऽ जाइ छह। रघू भैयाक काज अनकर बुझै छहक जे पूछैले एलह?’’

‘‘नइँ से तँ नहिये छियनि। तखन तँ फेर काजे छिऐ। चारि गोटेमे चरचा भेने छुटल-बढ़ल सभ बात सभकेँ नजरिपर आबि जाइ छै। अखैन जाइ छी....।’’ कहि पुन: कुसुमलाल मुस्की दैत बाजल- ‘‘काजक तेहेन छिगरी तान भऽ गेल अछि जे घरमे कड़ू आकि समाजमे सभ दिन सभ कियो एकठीन बैस कऽ हाँ-हाँ हीं-हीं करै छी से आब ऐ अवस्थामे छुटि जाय, केहेन हएत? अखनेसँ मुरदा बनि घरमे ओंझरा जाय। के खुट्टा गारि कऽ रहैले आएल अछि जे सभ दिन रहबे करत। तखैन ते जाबे घटमे परान ताबे ऐ दुनियाँक लीला देखैए।’’

करियाकाका- ‘‘एह, तूँ ते तेहेन गप पसारि देलह जे चाहो पीब बिसरि गेलौं।’’

करियाकाकाक इशारा पानिकैँ आगू बढ़ाएब छलनि। मुदा पानिक गति तँ सदिखन निच्चे मुहेँ चलैत अछि। देवनन्दन आशाकैँ सोर पाड़लखिन। आंगनमे शीला बुझि गेलखिन। आशाकैँ कहलखिन- ''बाउ, दरबज्जापर पापा शोर पाड़लनि, सेहो बुझि लेब आ काए गोटे छथि सेहो गनि कऽ आएब।''

दरबज्जाक कोनपर आशा गनिये रहलि छलि कि फाँड बन्हने, माथपर तौनी नेने राजेसरकैँ अबैत देख करियाकाका जोरसँ बजलाह- ''आबह-आबह राजेसर। चाह छुटि जेतह?''

''चारि लग्गा फड़िक्केसँ राजेसर बाजल- ''करियाभैया जहिना स्वाती नक्षत्रक अमृत रुपी जल सैकड़ो हाथ समुद्रक पानिमे टपैत सितुआक मुँहमे पहुँच मोती बनि जाइत अछि तहिना जै अन्न-पानिमे हमर अंश चलि गेल अछि ओ घुमैत-फिड़ैत हमरे लग चलि आओत...।'' कहि हाथ उठबैत फेर राजेसर बाजल- ''दना-दानामे लिखल अछि खेनिहारक नाओं।''

''अच्छा आबह। तोहर काज तँ आइ भोरे छेलह?'' करियाकाका पुछलखिन।

चानिपर उल्टा हाथ लैत राजेसर- ''भाय सहाएब, कते तिल ऐ गामक खेने छिऐ से नै कहि। लोको सभ तेहेन बिजकाठी भऽ गेल अछि जे झगड़ो कड़ू तँ दिन-राति कखनो छुट्टी नै भेटत कियो कि एक्को मिनट चैनसँ ककरो रहए दिअ चाहै छै। घरसँ बाहर घरि एक्के रमाकठोला।''

''अच्छा खिस्सा छोड़ह। काजक गप करह?''

''मुस्की दैत राजेसर कहए लगलनि- ''भाय, एना आन जकाँ कियए बुझै छी। जखने माया-जालमे पड़ल छी तखने तँ तबाही रहबे करत किने। तँए कि समाजक काज छोड़ि देब। हमरा सबहक खूटा जहिना रघुभाय छेलाह तहिना हुनकर अंतिम काज सेहो खूँट्टे जकाँ हेतनि।''

राजेसरक बात सुनि देवनन्दन चौंकि गेलाह। हिनका -पिता- सबहक दोहरी चालि जिनगीक छन्हि। जीवनक एक चालि छन्हि आ लोकक बीचक दोसर। जना सौंसे गामक ठकदरुआ ई सभ होथि आ हिनका सबहक ठकदरुआ सौंसे गाम होनि। मुदा साकांक्ष होइत तीनूक -करियाकाका, कुसुमलाल आ राजेसरक- गप-सप्प सुनए लगलथि। तखने शीला तस्तरीमे चारि कप चाह

नेने पहुँचलीह। खाली चाह देख कुसुमलाल मुस्की दैत बाजल- ‘‘आँइ यौ करियाभैया, कुम्हारक टेमकेँ अहाँ अहिना बुझै छिऐ। जते काल चाहले बैसलौं तते कालमे तँ पाइ रखैबला बैंक कत्ते गढ़ि नेने रहितौं।’’

कुसुमलालक इशारा बुझि शीला तस्तरीकेँ पतिक आगू चौकीपर रखि चोट्टे आंगन घुरि बिस्कुटक पॉकेटक कागज फाड़ितहि दरबज्जापर पहुँचलीह। बिस्कुट देख करियाकाका कहलखिन- ‘‘कनियाँ, अहाँ पानि नेने आउ। हम बिस्कुट बाँटि लै छी।’’

सोलहो बिस्कुटमे सँ पँच-पँचटा कुसुमलाल आ राजेसरकेँ देलखिन। तीन-तीनटा अपने दुनू गोटे देवनन्दन सहित लऽ दुनू गोटे दुनू गोटे दिस देखए लगलथि। स्वादिष्ट नमकीन बिस्कुट मुँहमे चिबबैत राजेसर बाजल- ‘‘चारि बजे भोरेसँ भाय खटै छी। खाइयोक छुट्टी नै भेल। मुदा भगवानो तेहने अहारो देलनि। भऽ गेल भरि दिनका कोइला-पानि। दस बजे तालिक राति घुमि कऽ तकैइयोक काज नै। एकटा बिस्कुट खाए एक-गिलास पानि पीब शीलाकेँ गिलासमे पानि भरैक इशारा करैत बाजल- ‘‘कनियाँ एक दिनक खिस्सा छी। पानियो बाँटू आ खिस्सो सुनियौ। एक गोटेकेँ पता माने निमंत्रण दइले छह कोस पाएरे गेलौं। भिनसुरका चलल डेढ़-दू बजे दिनमे पहुँचलौं। थाकियो गेल रही आ भूखो लगि गेल रहए। मुदा बुढ़ी जे रहथिन से महा-सोभावी मुँहसँ मधु चुबनि। जाइते गेलौं कि अपने बिछानपर बैइसैक इशारा करैत जजमान आ पसारीक गप पसारि देलनि। हमर मन तँ जरले रहए। तैयो घंटा भरि जी-जाति कऽ सुनलौं। तखन खिसिया कऽ कहलियनि- ‘‘हमरा घुमैमे अन्हार भऽ जाएत। जाइ छी।’’

धड़फड़ा कऽ उठि पुतोहूकेँ कहलखिन- ‘‘कहुना भेला तँ कुटुमक गामक नौआ भेलाह। चाहो-पान नै खुएबनि-पीयेबनि, से केहेन हएत?’’ मनेमे आएल जे ई सभ गामोमे परदेशिये छथि। शहरमे रहैत-रहैत मूस जकाँ समाजोक जालकेँ काटि रहल छथि। चाह पीब पान खा ओतै विचारि लेलौं। जे झाड़ा-झपटा कमले पेटमे करब। किरिण डूबिते जे पुबरिया छहर टपि जाएब तँ दोसरि-तेसरि साँझ धरि गाम पहुँचिये जाएब। बटखरचा लेल पाँचटा रुपैया देने रहथि

भूखे छटपटी धेने रहए। कमला धारक ठंढ़ेलहा पानिमे जहाँ पाएर देलिऐ कि पैखाना सटकि गेल। मुदा लघी लगि गेल। पूवरिया छहर टपि झंझारपुर बजारमे तीन रुपैयाक छोला-मुरही खेलौं पानि पीलौं तखन कि जानमे जान आएल।''

''कोन गपमे बौआइ छह राजेसरभाय? काजक गप करह?'' कुसुमलाल बाजल।

''बिस्कुट खा पानि पीब चाहक गिलास हाथमे लैते राजेसर शीलाकेँ कहलनि- ''कनियाँ, जँ बिस्कुटे खुएबाक छलए तँ पहिने पानि बिस्कुट अनितौं। एक तँ बेचारी अपने बेइज्जत भऽ चाहसँ पानि भऽ गेली। तहिपर सँ हमहूँ सभ कते बेइज्जत बेचारीकेँ करबै।''

राजेसरक बात सुनि एक लाड़नि चलबैत देवनन्दन बजलाह- ''बेइज्जतीक बोनमे तँ नम्हरे बेइज्जतक गाछक इज्जत होइत।''

काजकेँ देखैत करियाकाका गपक रास्ता बदलि कहलखिन- ''कनियाँ राजेसरकेँ भाड़ी जकाँ एहेन गिलासमे नै पौआही गिलासमे चाह देबनि। अच्छा, राजेसर आइ तँ गाछियेमे कर्म हेतै?''

अपन काज अगुआएल देख राजेसर बाजल- ''भाय, आँझुका गप कि कहू। एक तँ तेहेन-तेहन सिफलाहि मौगी सभ गाममे चलि आएल अछि जे होइए जे झब दऽ मरि जाय जे एहेन-एहेन मनुक्ख सभसँ पिण्ड छूटत।''

''से की?''

''की पूछै छी। पहिलुके नीन रहए। करीब एगारह-बारह बजे राति रहए। गोपला घरमे आगि लगि गेलै। ओकरे मिझबैमे दू-बाजि गेल। सौंसे देह थाल-कादो सेहो लगि गेल रहए। ओकरे धोइत-धाइत तीन बजि गेल। ओछाइनपर एलौं कि अझुका काजसभ मन पड़ल। छुतकाबला केश कटैक अछि। खबरि दइले पुरहित-पात्र ऐठाम जाइक अछि। तइपर सँ परसुए, जुगेसरा कहि देने रहए जे कनी केशो नीक जकाँ छाँटि दिहह। आ बरियातियो चलिहह।''

करियाकाका- ''अखन लगन कहाँ छै?''

राजेसर- ‘‘अहाँ कोन जुग-जमानाक गप्प बजै छी भाय। कियो जे कोटमे वियाह करैए से लगन देख कऽ। तहूमे कि जुगेसराक वियाह हेतै कि चुमौन करत।’’

‘‘केहेन कनियाँ छै?’’

‘‘एह हद भेल भाय। कन्याँ बच्चोकेँ कहल जाय छै आ सासुरो बसनिहारिकेँ। जुगेसराकेँ तेसर छिऐ आ कनियाँ के चारिम।’’

‘‘दुनू तँ उड़नबाजे बुझि पड़ैए?’’

‘‘भाय, मनुक्खमे सभ गुण होइ छै। पालतुओ चिड़ै बोनाए जाइ छै आ बोनेलहो चिड़ैकेँ पकड़ि पोसा बना लैत अछि।’’

‘‘चाहक गिलास हाथसँ पकड़ैत राजेसर शीलाकेँ कहलकनि- ‘‘कनियाँ, काकीकेँ सभ बुझले छन्हि। हुनका हमर नाओं कहि देबनि। डालीक ओरियान करतीह। जाबे तक छौरझप्पी नै हएत ताबे तक गाछिये मे पुजाओल जाएत।’’ शीला आंगन जा सासुकेँ कहलनि। दरबज्जापर सभकेँ चुप देख राजेसर डॉ. देवनन्दनकेँ कहलकनि- ‘‘डाकडर सहाएब, हमर काज (नौआबला) पहिले दिनसँ शुरु भऽ जाइए। काजो दोहरी। एक दिस पूजबैक प्रक्रियामे डाली सजौनाइ दोसर दिस कठियारीबला सभ परातेसँ केश कटबऽ लगैत अछि। ई तँ एकटा काज भेल। जँ गाममे एकटा काज हएत तखन। जँ दोहरा-तेहरा गेल तँ काजो दोहरा-तेहरा जाइत तइपर सँ जन्मौटी छुतका भिन्ने। कते दिनसँ मनमे होइए। जे एकटा नांडरि (गाए-महींस) दुआरपर रखितौं से पारे लगनाइ कठिन अछि। इम्हर श्राद्ध कर्ममे हम छअ आना हिस्साक भागीदार छी तइमे हथ-उठाइ किछु कर्ताक निछुड़लाहा भेटैए। झलफाँफी धोती माटिक बरतन आ किछु हथ-उठाइ भऽ गेल।’’

राजेसरक बात सुनि देवनन्दन तरे-तर सर्द हुअए लगलाह। आँखि उठा करियाकाकापर देलखिन। करियाकाका राजेसरक मुँह दिस तकथि। जना रसगुल्ला खसतै आ लपकब। रसगुल्ला तँ नै एलनि मुदा रसगुल्लाक रस जरुर आबि गेलनि। मुस्की दैत कहलखिन- ‘‘राजे, जे बेसी मनुक्ख लेल

खटत आ कमसँ कममे अपन जिनगी चलाओत ओइसँ बेसी इमानदार ऐ घरतीपर के अछि?''

धरमक एकटा बाट तँ इमानो छिऐ।

मने-मन देवनन्दन तइँ केलनि जे पिताक कर्म करौनाइ हमर जिम्मा छी। जे कोनो काज हएत ओकर नीक-अधलाक भागी के हेतै। गाममे जतऽ जे होइ छै होउ। मुदा अपना ऐठाम एहेन अनुचित नै हुअए देबै। फेर मनमे शंका उठलनि जे ऐ बातकेँ पूरबासय केना कएल जाय? पूर्वाशयक अर्थ की पूर्व+आशय। समाजक जे अधिकांश लोकक कानमे रहै छै ओकरा की मानल जाय।''

रंग-बिरंगक तर्ककेँ मनमे उठैत देख सोचलनि जे दुनू पार्टीक माने पुरोहित-नौआक बीच काजक संबंध अछि। सझिया काजक फल तँ सझिया होइत। कते साझी? तेकर की आधार। से नै तँ दुनू गोटेमे करथि। सोझक जे निर्णए दुनू गोटे करता तँ हमरा मानैमे की लागत। मन असथिर भेलनि।

चारिम दिन। गाछीमे सरझप्पी केला उत्तर कर्म सम्पन्न भऽ गेल। शिवशंकर गाछियेमे भोजन कऽ नेने रहथि। करियाकाका हाथमे कोदारि नेने आगू-आगू तै पाछू शिवशंकर आ देवनन्दन तै पाछू परिवारक सभ। तीनू भाइयो-बहीन आ सासुओ-पुतोहू। आंगन अबिते सभकेँ बुझि पड़लनि जे जना आगूए-आगू रघुनन्दन आबि गेलाह। हुनके बनाओल घर-दुआर, पानिक चापाकल संग-संग सभ किछुमे सन्हिया गेल छथि। जँ हुनकर घरारी स्मारक बनै तँ सभ दिन ओइ स्मारकमे दर्शन दितथिन्ह। मने-मन पिताकेँ स्मरण करैत देवनन्दन संकल्प लेलनि जे पिताक देल जे किछु अछि ओ ऐ समाजक छिऐ। हम तँ अपने तते कमाइ छी जे गामो अबैक छुट्टी नै होइत अछि। बेटी सासुर जाएत। बेटो कतौ नोकरी करत। की बाप-दादाक देल सम्पत्ति हम आनठाम दऽ अबिऐक? तखन गामक मनुक्ख अनतऽ जाए भलहिं अपनाकेँ अगुआ लथि मुदा गाम तँ तरका जाँत जकाँ पड़ले रहि जाएत। चलत कहिया। की जँ दुनू चक्की मिलक चक्की जकाँ चलए लगए तँ कि गहुमक आटा नै पीसल

जाएत। जरुर पीसल जाएत। पिताक देल सम्पत्तिक जे आमदनी अछि ओकरा भोज आ अपना दिससँ गरीब बच्चाकेँ पाँच हजार रुपैयाक पोथी, पाँच हजार रुपैयाक दवाइ समाजक बीच पिताक मृत्युक दिन उपहारस्वरुप देबै। ऐसँ खुशीक बात ई हएत जे हुनका -पिताकेँ- जनमे दिनक तिथिकेँ दितिऐक। बच्चाक संग-संग कियए नै खेलथि। किएक हुनकर मृत्यु शरीरकेँ मृत्यु बुझियनि? मुदा हुनकर जन्म-कुण्डली तँ नै भेटत? स्कूल गेबे नै केलाह। तखन की करब?

मनमे नव उत्साह जगिते करियाकाकाकेँ कहलखिन- ''कक्का अहाँ सभ एक बतारी छी। हमरासँ बेसी देखने छलियनि। अखने बैस कऽ अगिला कर्मक विचार कइये लेब। शंकरोभाय छथिये।''

देवनन्दनक बात सुनि, अपन आमदनी शिवशंकर देखलनि। मनमे गुद-गुदी लगलनि। पानक पीत फैकैत बजलाह- ''बेजाए कोन? अखन सभ समटाएल छी फेर समटैमे समए लागत। तते करियाकक्का ठेल-ठेलि कऽ खुऔलनि जे आराम करैक मन होइए।''

अपन चाब'सी सुनि करियाकाकाक नजरिमे नाचि उठलनि- खेतक आँड़िपर बैस गप्पक संग-संग तमाकुलो खाथि। मन पड़लनि गुनाक गीत। तहियाक छीतन आइयो संग-संग अछि। मन पड़लनि समाज। आइ जे समाज एक भऽ भाय-सहाएबकेँ विदाइ देलनि की ई उचित होय जे लोक अपन-आन गामक जातिकेँ भोज खुअबैत आ अपन ओहन समाजक बच्चाकेँ कनैत सुनिऐ, जे बेर-बिपत्तिमे सदिखन लगमे रहैत अछि। जते खुशी शिवशंकरक बात सुनि भेलनि तइसँ बेसी कचोट मनमे उपकि गेलनि। बजलाह- ''जखन तेरहे दिनक बीच काज नापल अछि तखन तँ अधिकसँ अधिक समाजक उपयोग होएब जरुरी अछि। हम सुन्दरभायकेँ बजौने अबै छियनि?''

करियाकाका बात सुनि देवनन्दन कहलखिन- ''अहाँ कोदारि पाड़ि कऽ एलौंहँ, आशाकेँ पठबै छिऐ।''

देवनन्दनक बात सुनि करियाकाकाकेँ हँसी लगलनि। बजलाह- ''डॉक्टर सहाएब, आशा जा कऽ की कहतनि?''

“बजबै छथि।”

“कथीले?”

देवनन्दन तखन चुप रहि गेलाह। करियाकाका बजलाह- “जँ भैया बुझथि जे कोनो छोट-छीन काज अछि तँ अपन नमहर काजकेँ सम्हारि जाएब। तखन औताह? से नै तँ अपने जाइ छी।”

करियाकाकाकेँ विदा होइते दयानन्द (देवनन्दनक बेटा)केँ कहलखिन- “बाउ, एक लोटा पानि पीयाउ। हमरो अहाँक परिवार कोनो बाँटल अछि अहाँक मात्रिक बरियाती हमहूँ गेल रही। अहाँ सभ तँ परदेशी भेल जाइ छी। हमरा ओहिना मन अछि उपनयनसँ तीन दिन पहिने दालि-भात, तड़ूआ तरकारी, दही-चीनी खेने रही। अहीं सबहक अन्नपर हमहूँ सभ ठाढ़ छी.....।

पानि पीबी- .....अखन दुइये गोटे छी, तँए कहै छी। पुजबैत-पुजबैत हमरा सबहक परिवार निच्चाँ मुहेँ ससरि गेल। अपने बात कहै छी। राजविराजसँ तीन कोस आगू तक बाबूकेँ जजमनिका रहनि। जखन ओइ इलाका जाय तँ मास-मास दिन परदेशे जकाँ रहि जाय। सेवा खूब हुअए। खेनाइ-पीनाइक कमी नै। हमरा तँ एत’सँ नेपाल धरि ने धांगल अछि। अपना सभ तँ कनी हटल छी तँए ने, नै तँ जना-जना उत्तर मुहेँ जेबै तेना-तना बाजब-भुकब, खेती-बाड़ी, माल-जाल मिलल-जुलल देखबै। कथा-कुटुमैती, भोज-काज ऐपार-ओइपार होइते अछि। सीमाकातमे ऐ भागक लोक ओइ भाग जा हाट-बजार करैत अछि आ ओइ भागक ऐभाग। जना-जना आगू मुहेँ बढ़बै तेना-तेना पानियो आ बोलियोमे अन्तर बुझाएत। तेकर कारण छै उत्तरबरिया पहाड़। बाबूकेँ खूब आमदनी होनि। भरि-भरि दिन भाँग-खाए दरबज्जापर बैस तास खेलल करी। “लघु-सिद्धान्त” पढ़ैमे एगारह बर्ख लागल रहए। मुदा बाबूक संग पूरैत-पूरैत अपन जीविकाक सभ लूरि भऽ गेल। पढ़ैमे मझिला भाए चन्सगर। खूब पढ़ि कऽ नीक नोकरी करै छथि। कहि देलनि जजमनिकासँ हमरा कोनो मतलब नै हम मेहनत करब। मेहनतक अन्न खाएब। तखन धिया-पूताक संस्कार तेज हेतै। सभसँ छोटका बकनाएल अछि। दिल्लीमे भाए नोकरीयो

धड़ा देलकनि तँ तते कमाथि जे पेटो ने भरनि। मुदा समाजमे प्रतिष्ठा बनौने रहथि''

प्रतिष्ठाक नाओं सुनि दयानन्दक मनमे भेल जे एक दिस कहै छथि जे बकना गेलाह आ प्रतिष्ठितो कहै छथिन। मनमे अचड़ज भेलै आँखिमे आँखि गरा पुछलकनि- ''की प्रतिष्ठा?''

दयानन्दक प्रश्नकेँ हल्लुक बुझि बजलाह- ''बौआ, अखनो अधिक खेनिहार लोककेँ प्रतिष्ठित मानल जाइत अछि। एत्ते दिन ई प्रतिष्ठा भोज-काजमे भेटै छलै आब घरे-घर भऽ गेलै। हम कतेक रुपैया खेनाइपर खर्च करै छी अहिक भीतर प्रतिष्ठा आबि गेल अछि। भलहिं हजार रुपैया प्रतिदिन परिवारक भोजनमे खर्च कियए ने करथि मुदा समाजक लोक जँ डेरापर आबि जेताह तखन या तऽ गेट खोलि भेँटे नै देबनि या तँ भेँटो देबनि तँ गामक- हालि-चालि पुछि कहबनि जे पत्नी नोकरीक ड्यूटीमे छथि तँए डेरामे चाहो पीयाएब मोसकिल अछि। बेचारा हाले-चाल की कहतनि जे बेसी समयो लागत। ने जिनगीक भेँट आ ने एकठाम रहैबला। हँ, तँ कहै छलौं अपन भाइयक विषयमे। साल भरिसँ महंथ भऽ गेल अछि। देखलिऐक तँ नै मुदा सुनै छी अपनो चिट्ठीमे कताक बेर लिखिलकहेँ। ओना भाए छी आगि नै उठेबै, नअ-दस माससँ लत्तो-कपड़ा आ हजार रुपैया महिनो पठबैए। मुदा आफद की एकटा अछि? साल करीब भऽ गेलनि। कनियाँ एतै छथिन। एकटा बच्चो छन्हि। फोन केलिये जे दसो दिनक लेल गाम आबि बालो-बच्चाकेँ असिरवाद दऽ दहक। आब तँ तौँ महंथ भऽ गेलह....।

देवनन्दन दिस मुँह घुमा कऽ मुस्की दैत- ....भाय, की जबाब देलक से बुझिलिऐ, कहलक जे स्थानक की हमरा खतियान बनल अछि। भरि-दिन भरि-राति कतौ रहू मुदा साँझ-भिनसरकेँ घड़ी-घंट बजा आरती गबै पड़त। मुदा आब चढ़ौआ सभ सेहो हुअए लगलहेँ। भरि गाम-घरक स्त्रीगणसँ लऽ कऽ बजार धरिक जनिजाति सदिकाल अबिते रहैत अछि।''

देवनन्दन- ''भावोओकेँ ओतै पठा दिअनु?''

शिवशंकर- “से तँ अपनो लिखैए जे विदागरी कए कऽ नेने अबियनु। मुदा एकटा आफत रहै तब ने आफतपर आफत अछि। एक तँ कनियाँ जाइले नै गछै छथि। केना उपकैर कऽ घरसँ विदा कऽ दियनि। मुदा बात सेहो नै अछि दोसरो बात अछि। एकबेर विवाह-पंचमीमे जनकपुर नैहरक संगी संगे गेलीह। लोकक ठट्ठ, दिन-राति यात्री इम्हरसँ उम्हर नचिते। एकठाम एकटा नंगा स्थान लग बिजली कटि गेलै। जहाँ-तहाँ अपन जोरी -संगी- छोड़ि यात्री सभमे हरा गेल। हमरो भावो हरा गेलीह। ले बडौड़ रौतुका हराएल दिनोमे ने गौआँ भेटलनि हिनका आ ने ई भेटलखिन गौआँकेँ। मुदा हरेलखिन नै। वौएलखिन। सभ यात्री तँ अपने इलाकाक रहै किने। नानी गामक संगी भेटलनि। जहिना धारमे बाँस आकि रस्सी पकड़ि-पकड़ि लोक धार टपैत तहिना बेचारी नानी गामसँ मेजमानी करैत सात दिनक पछाति गाम एलीह। से मन उड़ल छन्हि।”

देवनन्दन- “सभ स्त्रीगण शहर जाए चाहैत अछि अहाँ उनटे कहै छी?”

मुस्की दैत शिवशंकर- “एँह भाय, अहूँ अनाड़ी जकाँ बजै छी अपन जे मिथिलांचल अछि ऐ क्षेत्रमे कतौ लोक मैथिली बाजि जिनगी गुदस कऽ सकैत अछि। मुदा जइठाम भाषाक दूरी, जीवन-शैलीक दूरी अछि तइठाम कि गिरगिट जकाँ सात बेरि जिनगी बदलि सकैत अछि। रहल बात जीवाक उपाएक? तँ कि जइठाम मनुष्य रहत ओइठाम कोनो वस्तुक उत्पादनक जरुरत नै अछि? की हमरा सभकेँ शिक्षा आकि दवाइक जरुरत नै अछि आकि भोजन-वस्त्रक? मनोरंजनक जरुरत नै अछि आकि कला-संस्कृतक? मुदा ई के करत? जेकर छिऐ से बोहू लऽ लऽ शहर घुमैए तँ कि सोझे सीते भूमि कहने अयोध्यासँ राम औताह? मुदा छोड़ू दुनियाँ-जहानकेँ। अखन जे काज सोझामे अछि पहिने तकरा देखू। हँ तँ जाधरि करियाकाका आ सुन्दरकाका नै पहुँचलाह तै बीच एकटा आरो कहि दैत छी। राज-विराजसँ तीन कोस उत्तर धरि हमरा बाबूकेँ जजमनिका छलनि। लोकोक धारणामे श्राद्ध-कर्मक महत्व छलनि। जइसँ आमदनियो नीक छलनि। अखुनका जकाँ जिनगियो फल्लर नै छलैक। लोको विसवासू। आँखि देखा कऽ ककरो कियो बेइमानी नै करैत। जहाँ-तहाँ बाबूओ

अपन समान, बरतन-कपड़ा रखि देथिन कपड़ाक कते जरुरते परिवारमे रहै छल। जइसँ राजसी ठाढ़मे जीवन बितौलनि। जखन मुइलाह तखन चारु दिससँ भूत पकड़ि लेलक। भाय कहलनि जे नोकरिये करब। अपन परिवार लऽ कऽ चलि गेलाह। काजे-उद्यममे पाहुन जकाँ अबै छथि। दोसर भाइक कहबे केलौं जे गामक फेदार मोरगंक दफेदार भऽ गेल। सुनै छी जे भरि-भरि दिन नानीक सिखैलहा खिस्सा सभ मौगी सभकेँ सुनबैत रहैए। खाइर, किछु करह। हमरो तँ कपार नहिये चटैत अछि। अखन की भऽ गेल अछि जे अल्लापुरक सभ जाति अपने-अपने पुजबए लगल। जजमैनका घटि गेल। अल्लापुरक देखौंस सीमो-कातक गाम सभ करए लगलहेँ। रहैत-रहैत पाँच गाम बचल अछि। ओना आब नवका जजमान मारवाड़ी सेहो बढ़लहेँ। पाइबला पार्टी।''

देवनन्दन- ''ओ सभ अपन छोड़ि देलक?''

''अपनो धेनहि अछि। मुदा ऐठाम तँ सभ बेपारी भऽ गेला। पुजेगरी कहाँ अछि। एकबेर पान खुआउ। गामक खेल-तमाशा देख मन कनैत रहैए मुदा तैयो जे ठोरपर पछबा लहकी देखै छिऐ तँ तामसो उठैत अछि। मुदा सभसँ भला चुप। ने किछु बजै छी आ ने ककरो किछु कहै छिऐ।''

पान मुँहमे लऽ कने काल गुलगुला कऽ पीत फेकैत पुन: बजलाह- ''भाय, छह माससँ निचेन भऽ गेलौं। मुदा दियादवादक जे दशा-दिसा देखै छिऐ तइमे होइत अछि जे भगवान हमरो उपरमे तकैत छथि।''

देवनन्दन- ''से की?''

शिवशंकर- ''भाय-सहाएब सभ तेहेन रास्ता पकड़ि लेलनि जे चिन्ता मेटा देलनि। मझिला भाए जे नोकरी करै छथि गामपर सबतूर आबि बलजोरी दुनू भाँइ (बेटा) केँ लऽ गेलखिन। की कहितियनि? अपनो बुझै छी जे दिनानुदिन जीविका घटले जा रहल अछि। तहन तँ सभ दिन समाजक बीच रहलौं तँए आब अहि उमेरमे कतऽ जाएब। जाधरि समाज जीवैए ताधरि कहुना नै कहुना बहिते रहब। अपने तँ नै मुदा भावो अपन दियादिनी माने हमरा पत्नीकेँ कहलखिन- उसरागा खाति-खाइत सभटा उसरन भेल जाइए। हमरा की लोक

नै दुसत जे बाप-पित्ती बड़का हाकिम छथिन आ बेटा-भातीज दसखतो करै जोकर नै भेलखिन। कहि दुनू भाँइकेँ लऽ जा अपने लग, अफसर सबहक जे स्कूल छै तइमे नाओं लिखा देलखिन। छोटका भाए सदिखन फोन करैत रहैए जे हमरा तते चढ़ौआ होइए जे कतऽ कऽ राखब। उठा-उठा लऽ लऽ जाउ। मुदा गाड़ीमे चलैत डर होइए। तते छिना-झपटी, निशां-खुऔनी हुअए लगल अछि जे हमरा बुते तीस घंटा गाड़ीमे बैस दिल्ली पहुँचल हएत। मुदा तैयो अनका-अनका दिया तते चीज पठबैत रहैए जे कोनो चीजक कमी नै अछि। संतोष एते भऽ गेल जे कियो अपन बाप-माएक किरिया-कर्म करैत अछि तै बीच हम कियए डाक-डकौबलि करी। पूर्वज सभ तँ तीन श्रेणीक सराध कर्म तँइऐ कए गेल छथि। जकरा जै तरहक विभव रहै छै ओ ओइ तरहक कर्म कए कऽ एकलोटा पानि तँ पूर्वजकेँ दइऐ दै छथि। मुदा लोकोमे छल-प्रपंच छै? जँ करै छी तँ श्रद्धापूर्वक करु नै तँ ठकि कऽ पिंड कटौने नै हएत। तहिना हमहूँ करै छलौं। दियादवाद अखनो करिते छथि जइसँ दशो तेहने भेल जाइ छन्हि। गामेमे वेदान्तीकाका छथि। बेचारा अपन जिनगी अपना ढंगसँ बना नेने छथि। ओना ओ लोअरे-प्राइमरी स्कूलमे गुरुवाइ करै छथि। गामेक स्कूलमे। मुदा अपन क्रिया-कलाप छन्हि। जहिना किसान काजकेँ दू उखड़ाहा -भिनसरसँ बारह बजे आ दू बजेसँ सूर्यास्त धरि- बँटने छथि। तहिना स्कूलमे दुनू उखड़ाहा पढ़बै छथिन। दरमाहा भेटलनि कि नै तेकर कोनो चिन्ता नै। किछु अफिसक किरानी ठकि कऽ खाइ छन्हि तँ किछु बैंकक। कहियो कियो नाङट देह आ बच्चाकेँ पोथी-कोपी देखा मांगि लै छन्हि तँ बैंकक चारु भाग मरड़ाइत लुच्चा सभ झोड़ा छीन लै छन्हि। मुदा ने कहियो काकी मुँह उठा हिसाब मंगै छन्हि आ ने अपने ककरो कहै छथिन। मन पुष्ट रहै छन्हि अपनो तँ जीबते छी तहन अनेरे घरमे राखि कऽ की हेतै। कातिक मास ''कार्तिक महात्म्य'' ब्रह्म स्थानमे सभ साल सात दिन समाजकेँ सुनबै छथिन तइमे ततेक कपड़ा भऽ जाइ छन्हि जे सालो भरि दुनू परानी बिनु सुइया भिरौल कपड़ा पहिरै छथि। दूध खाइले गाइये पोसने छथि। ओना खेती अपने नै करै छथि। गाममे दू कट्ठा बाड़ी छोड़ि घरारियेटा छेबो करनि। पिता जजमनिका

पुजबैत छलथिन। गामे-गामे जे जजमान दानमे खेत आ आमक गाछ देने छन्हि वएह तते आबि जाइ छन्हि जे दू-सलिया-तीन-सलिया चाउर सेहो पथ्य-पानिले रहै छन्हि। आदतो तेहेन रखने छथि जे ककरोसँ मंगैक काज नै। आजुक छौड़ा सभ जकाँ नै ने जे- बाबा, कने खैनी खुआउ। पचास गाछ तमाकुलक खेती अपने हाथे-बुद्धिये करै छथि। काकी गाइयेक पाछू बेहाल रहै छथिन। जहिना एक बहीन दोसर बहीनक माथमे केश बिहिया-बिहिया ढीलो तकैत आ नीक-अधलाक गप्पो करैत तहिना गाइयक संग काकी। तमाकुलो अपने हाथे उपजबै छथि आ चूनो तहिना अपनेसँ बनबै छथि। दियादमे जखन हुनकापर नजरि पड़ैत अछि तँ नजरि निच्चाँ भऽ जाइए। मुदा ओहीठाम दोसर छथि जिनका घरारी दुआरे एक्के अंगनामे सोड़ेक-सोड़े दिया-पूताक संग तीन भाँइ छथिन। भोर होइते तीनू महाभारत शुरु कऽ दै छथिन। तीनू दियादिनीयो तीन परगनाक। एकटा अल्लापुरक छथिन दोसर भौरक। तेसर गंगा ओइ पारक मगहक छथिन। तीनू जे तीन सूर-तानपर गाइरिक गीत गाएब शुरु करै छथिन तखन बुझि पड़ैत अछि वृन्दावनमे छी आकि लंकाक पुष्प-वाटिकामे....।

मुस्की दैत- ....कते कहब भाय, अपने लाज होइए। एकटा छौड़ा अछि लक-लक पतरे। झोंटा जकाँ केश रखने अछि। सभ दिन मोछ-दाढ़ी कटैए। छींटिबला घुट्ठी लग तक अंगा सियौने अछि। पाएरेमे सटल, चुस्त पैजामा पहिरैत अछि। एक गोटेक काज रहए, देखलिऐ तँ धोखासँ कहा गेल के छिऐँ गै। से की पुछै छी जना बिढ़नी छत्तामे गोला फेक देने होइए तहिना गनगनाए कऽ मुँहे-काने की कहलक, तेकर ठेकान नै। सभसँ चोट एकटा बातक लागल कहलक- ‘‘मनुक्खक झर कहीं कऽ।’’

मुदा लगले मुँहसँ हँसी फुटलनि आगू बजलाह- ‘‘आँखि उठा कऽ देखै छिऐ ने भाय तँ बुझि पड़ैए जे सभटा बूड़ि-मुँहा भसि भसि गेल अछि। तेहेन-तेहन कुरेर सभ जन्म लऽ लेलकहेँ जे कुल-खानदानक नाक कटाऔत, की कान कटाऔत, की घरारीकेँ भट्टाक खेत बनाओत से नै कहि। एक दियाद छथि जे लम्बाइ चारि फीट हेतनि चौराइयो तहिना मुदा चंगेरा भरि चूड़ा, अधमन्नी तौला दही, एक्के सुरकानमे सीमा टपा दै छथि। चूड़ा-दही तेहेन चुभुटि पेट

कऽ पकड़ने छन्हि जे सदिखन पेटेटा सुझै छन्हि। घर गिर पड़लनि। कते खुशामद कए कऽ "इन्दिरा आवास" दिआ देलियनि। ले बडोर ओहो चाटि लेलनि आ अखन खिचड़ी खाइ छथि। कते कहब भाय।"

सुन्दरकाकाकेँ संग केने करियाकाका पहुँचलाह। तखने लेलहा सेहो कुड़हरि लेमए आबि करियाकाकाकेँ कहलकनि- "आब तँ तीन दिन कोदारि, कुड़हरि, टेंगारी जहल कटलक। आबो छोड़बै की नै? साते दिनमे जारनकेँ सुखाएबो छै।"

लेलहाक बात सुनि करियाकाका चुपे रहलाह। मुदा सुन्दरकाका लेलहाक मुँहक बात छिनैत कहलखिन- "कारी, पढ़ुआभायकेँ बजा अनियनु। गाममे सभसँ बेसी गुल्ली-पेंच वएह करै छथि।"

सुन्दर काकाक बात सुनि करियाकाका पढ़ुआभाय ऐठाम विदा भेला। जखनसँ लेलहा सुन्दरकाका मुहेँ गुल्ली-पेंच सुनलक, तखनसँ गुल्ली-पेंचक अर्थ बुझैले मन लुस-फुस करए लगलै। मुदा काजक गप सुनि अपन प्रश्नकेँ पेटमे दबने रहए। मुदा तैयो पेटमे उधकै। होइ जे कखन बाहर निकलब। बाँस भरि करियाकाका आगू बढ़लथि कि लेलहा पुछलक- "सुनरकाका, गुल्ली-पेंच ककरा कहै छै?"

लेलहाक प्रश्न सुनि सुनरकक्काक पेट-गोंगियाए लगलनि मुदा पहिले मुहराकेँ रोकैत शिवशंकर सम्हारि लेलनि। बजलाह- "देवनन्दनभाय, लेलहा समाजक खूटा छी। बेचाराकेँ ऐ उमेरमे कहीं एहेन देह रहितै। जना बुझि पड़ैए जे कोसी बाढ़िमे जहिना नव-गछुली कलम-गाछी सभ पतझार लऽ भऽ जाइ छै तहिना बेचाराकेँ छुछे पतड़का-पतड़का डारि जकाँ देहक हाड़ बुझि पड़ै छै। समाज की? समाजरुपी घर की? समाजरुपी घर वएह जे सबहक सझिया होय। आब प्रश्न उठैए काजपर काज तँ ढेरो तरहक अछि, समाजक काज की बुझल जाय? ऐ प्रश्नक उत्तर विकास-प्रक्रियामे अछि। मुदा मूल प्रश्न अछि सभ मनुष्य मनुष्य छी तँए सबहक दुख-सुख सझिया हुअए।"

शिवशंकरक बात सुनि सुन्दरकाका उफनि पड़लाह। जहिना रौद लगिते ताड़ी घैलमे फेना-फेना निच्चाँ खसैत तहिना सुन्दरकाका मुँहसँ खसए लगलनि-लेलहू, तूँ सभ लगले बिसरि जाय छह मुदा हमरा तँ युग-युगक बात मन अछि। श्यामसुन्दर माएक श्राद्धक भोजमे देखने रहक जे पच्चीस गामक पंच केना दरबज्जापरसँ लऽ कऽ अपना अंगना धरि गरियौलकनि। केकर केलहा रहए? वएह पढ़ुआभाय भनसियाकेँ फुसला कऽ गांजा पीया, हकिमानी करए लगलथि। तरकारी-दालिमे जखन नोन दैक बेर भेलै तखन बोरे देखा देलखिन।''

सुन्दरकाकाक बात सुनि ठहाका मारि बाजल- ''हँ, यौ काका। पाछू हमहूँ बुझलौं।''

''धुड़बूड़ि तेहेन छुछनरि छथि जे ओतबे केलनि। देखने रहक की नै जे पुलकितक बेटी वियाहमे केहेन मारि करा देने रहथिन। कोनो अनकर किरदानी रहै जे कि वएह बीचमे घोघटाही साड़ीके दुसि देलखिन। हुनके बातपर ने जनिजाति सभ झगड़ा ठाढ़ केलक। अन्तमे देखबे केलहक। तँए एहेन-एहेन वुधिकनाह लोकसँ समहैरिये कऽ रही। कखैन की कऽ देतह तेकर कोनो ठीक नही अछि। एहेन-एहेन लोक एतबो ने बुझैत अछि जे अपन काज अनको ले होय। सदिखन अनकर हिस्सा अपनबैमे लागल रहैत अछि। सोझेमे तँ कुल-पूज बैसले छथि। वएह बाजथु?''

सुन्दरभाइक प्रश्न सुनि शिवशंकर सकपकेलाह नै असथिरसँ कहलखिन- ''देखू किछु दिन पहिने तक हमरो चालि ओहने छल मुदा आब ओ सभ छोड़ि देलौं। ककरो चुगली चालि केने हमरा की भेटत? एतबे ने होइए जे नकलीसँ सावधान? मुदा आब जत्ते कालमे नकलीसँ सावधान करब तते कालमे असलियेकेँ ने कियए आरो असली बनाएब। सुन्दरभाय, जहियासँ भाए सभ कुल-खनदानक घरारीकेँ चिन्हलक तहियासँ सभ दुख पड़ा गेल। किछु दिन पहिने धरि हमहूँ आन-आन श्राद्ध-कर्मक उदाहरण दऽ दऽ जजमानसँ अधिक झाड़ै छलौं, से सभ छोड़ि देलौं। सभ अपन-अपन भार उठा लेलनि जइसँ हमहूँ उठि गेलौं। आब बुझै छी जे -जाधरि लोक मानैत अछि- जाबे कियो करै छथि अपन- बाप-माएक करै छथि तइमे कियए जोर दियनि? जहियासँ

विचार बदलल तहियासँ जिनगीयो बदलल। गारियो सुनब कमल। तेहेन-तेहेन झनाठी बच्छा सभकेँ दागि कऽ साँढ़ बनाओल गेल जे गाइयक खाढ़े चौपट्ट भऽ गेल। जइसँ ने नीक बच्छा आ ने नीक बाछी गाममे रहल। बाड़ी-झाड़ी चड़ैबला साँढ़ भऽ गेल अछि। सदिखन लोक नाओं धऽ धऽ सोझोमे गरियबैए जे "है-यएह शंकर बाबा पहुँच गेलाह।" मुदा रच्छ रहल जे जहिना-जहिना नवका-नवका लोक सभ भेलाह तहिना-तहिना नव-नव काजो कऽ रहला अछि। हिनके सबहक परसादे तँ एहेन-एहेन सुन्दरो आ दूधगरो गाए सभ गाममे आबि गेल। नवका-नवका मशीन सभ सेहो आबिये रहल अछि।"

देवनन्दन दयानन्दकेँ कहलखिन- "बौआ, चाहो-ताहोक....।"

दयानन्द आंगन जाऽ माएकेँ कहलक इम्हर पढ़ुआकाकाक संग करियाकाका पहुँचलाह। पढ़ुआकाकाकेँ शिवशंकर हाथक इशारासँ अपने लग बैइसैले कहलखिन। मुदा लेलहाकेँ अपन पैछला -बचपनक- बात मनमे नचए लगलै। बात ई जे गाछपर एकटा लुक्खी पकड़लक। जाधरि धड़ पकड़ने रहए ताधरि तँ लुक्खी हाथमे रहलै। मुदा नागड़ि पकैड़ते लुक्खी पड़ा गेल। लेलहाक हाथमे नाङरिक रुइयेँटा बँचि गेलैक। मुदा अपना नजरियेपर शंका हुअए लगलै। कखनो वामा हाथसँ लेलहा आँखि मिड़ै तँ कखनो दहिना हाथसँ। मुदा तैयो मन मानबे ने करै जे पढ़ुआकाका भीतरसँ छथि कि उपरे-उपर छथि। मुदा मन बदललै। पाँच गोटेक बीच जखन रही तखन अपन बात दोसरकेँ कमसँ कम कही आ दोसराक बात बेसी सुनी।

चाह आएल। सभ पीबए लगलथि। चाहक गिलास रखि पढ़ुआकाका शिवशंकर दिस देख कहए लगलखिन- "भाय, आब की पहिलुका किछु रहत? पहिने केहेन बढ़ियाँ सभ मिल भोज-काजमे संगे करबो करै छल आ संग मिल सभ खेबो करै छल। आब तँ दरभंगाक बेपारी आबि कऽ सराध वियाहक ठिक्के लऽ लैत अछि।"

पढ़ुआकाकाक बात सुनि शिवशंकर कहलखिन- "हम अपने बात कहै छी। देनिहार बुझै छथि जे हजार रुपैयाक बरतन देलियनि मुदा हम की ओकरा घरमे चुड़ि-चुड़ि खाएब। कतौसँ अनै छी दोकानमे जा कऽ अधोरमे बेचै छी।

कहैले तँ एते भेटल मुदा हाथ कते अबैए? तहन तँ आब बुझए लगलिऐ जे मनुष्यक जिनगी मनुष्यताक योनि छी। सक्कत संकल्पक लेल कठीन आ दृढ़ताक जरुरत पड़ै छै। मुदा भऽ गेल छी पेटकनाह। बीत-भरि पेटक खातिर सभ चौपट भऽ गेल अछि। अपन हारल बोहूक मारल, के ककरा कहै छै। तहन हम यएह कहब जे पाँच गोटे विचारि कऽ डेग उठाउ।''
सभ कियो विचार-विमर्श कऽ आगूक रास्ता धेलनि।

१. घरवारी माने कर्ताकेँ जेना मन माननि ओइ अनुकूल कर्म हुअए। झरखंडी बाछाकेँ दागि, साँढ़ बनौलासँ परहेज कएल जाय।

२. आन गामक पंच माने भोज खेनिहारसँ परहेज कए गामक सभ जातिक पुरुष-स्त्रीगणकेँ खुआऔल जाए। आन गामक कुटुम्ब, दोस्त, दियाद तँ रहबे करताह।

अंतमे देवनन्दन बजलाह- ''जहिना पिताजीक शरीर नष्ट भेलनि मुदा आत्मा तँ छन्हिँ। साले-साल हुनका निमित्ते यथासाध्य कल्याणकारी काज करैत रहब।''